जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू
राष्ट्रदूत
epaper.rashtradoot.com
Rashtradoot
जयपुर, शनिवार 30 अगस्त, 2025

विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। –जैक वेल्च

जल के बिना जीवन असंभव है, जल संरक्षण केवल विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है

जल जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। यह केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि के अस्तित्व का आधार है। मानव सभ्यता का इतिहास गवाह है कि जहां पानी है, वहीं समृद्धि है। किंतु विडंबना यह है कि जिस संसाधन के बिना जीवन असंभव है, उसी का सबसे अधिक दुरुपयोग हम कर रहे हैं। विश्व स्तर पर जल संकट एक गंभीर चुनौती बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2050 तक विश्व की आधी से अधिक आबादी जल संकट का सामना कर सकती है। भारत जैसे कृषि प्रधान और जनसंख्या बहुल देश के लिए यह स्थिति और भी भयावह हो सकती है। बढ़ती जनसंख्या, अनियंत्रित औद्योगिकीकरण, शहरीकरण की तेज़ रफ्तार और जल संसाधनों का अंधाधुंध दोहन इस संकट को गहरा कर रहा है। भारत में औसतन प्रतिवर्ष 1170 मिलीमीटर वर्षा होती है, परंतु वर्षा का वितरण असमान है। राजस्थान जैसे राज्य, जो शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्र में आते हैं, वहां यह स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण है।

भारतीय संस्कृति में जल को देवता का स्थान दिया गया है। हमारे ठांथों में जल को अमृत, जीवन और शक्ति का प्रतीक माना गया है। प्राचीन भारत में जल संचयन और संरक्षण के अनेक अनूठे तरीके विकसित किए गए। गांव–गांव में तालाब, कुएं, बावड़ियां और जोहड़ जैसी संरचनाएं केवल जल का स्त्रोत नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का केंद्र हुआ करती थीं। यह व्यवस्थाएं हमें बताती हैं कि हमारे पूर्वजों ने कितनी दूरदर्शिता के साथ प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया। दुर्भाग्यवश, आधुनिक विकास की दौड़ में इन परंपराओं की उपेक्षा हुई। नदियों के किनारे कचरा डालना, तालाबों पर अतिक्रमण, वर्षा जल को व्यर्थ बहने देना और कंक्रीट के जंगल खड़े करना–इन सबने जल संकट को बढ़ावा दिया।

यदि भारत में जल संकट की गंभीरता को समझना है, तो राजस्थान का उदाहरण सबसे उपयुक्त है। यह राज्य भौगोलिक दृष्टि से मरुस्थलीय क्षेत्र है, जहां औसत वार्षिक वर्षा मात्र 100 से 500 मिलीमीटर के बीच होती है। इसके बावजूद राजस्थान के लोगों ने जल संरक्षण के अद्भुत और टिकाऊ उपाय अपनाए। बावड़ी, जोहड़, टांका, नाड़ी जैसी पारंपरिक संरचनाएं केवल जल भंडारण के साधन नहीं, बल्कि जीवनरेखा थीं। बावड़ियां सीढ़ीनुमा कुएं होते थे, जिनमें वर्षा का पानी इकट्ठा किया जाता। इनका उपयोग पीने के पानी के साथ–साथ गर्मियों में ठंडक के लिए भी होता था। जोहड़ गांवों में बनाए गए छोटे जलाशय होते थे, जो वर्षा जल को रोककर भूजल स्तर को बनाए रखते थे। टांके और नाड़ियां मरुस्थल क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन के ये प्रमुख स्त्रोत थे, जो पशु और मानव दोनों के लिए उपयोगी रहे। सदियों तक इन पारंपरिक प्रणालियों ने राजस्थान को जल संकट से बचाए रखा। किंतु आधुनिकता के दबाव, जनसंख्या वृद्धि और अंधाधुंध भूजल दोहन ने स्थिति को बदतर बना दिया। भूजल स्तर कई क्षेत्रों में 400 फीट से भी नीचे चला गया।

छोटे-छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। नलों को खुला न छोड़ना, स्नान, कपड़े और वाहन धोने में अनावश्यक पानी खर्च न करना, रीसायकल और री-यूज को जीवनशैली का हिस्सा बनाना-ये आदतें हमें आज ही अपनानी होंगी। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि यदि समय रहते जल संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में पानी को लेकर संघर्ष और युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

जब जल संकट चरम पर था, तब राजस्थान ने फिर से अपनी जड़ों की ओर लौटने का प्रयास किया। इसका सबसे प्रेरक उदाहरण है अलवर जिले का तरुण भारत संघ और अरवरी नदी का पुनर्जीवन। 1985 में राजेंद्र सिंह, जिन्हें आज जलपुरुष कहा जाता है, ने जोहड़ों के पुनर्निर्माण का अभियान शुरू किया। सामूहिक प्रयास से सैकड़ों जोहड़ पुनर्जीवित हुए और परिणामस्वरूप अरवरी नदी, जो वर्षों से सूखी थी, फिर से बहने लगी। आज यह नदी लगभग 90 किलोमीटर तक प्रवाहित होती है। इस प्रयास से 1000 से अधिक गांवों में भूजल स्तर बढ़ा, कृषि उत्पादन सुधरा और पलायन रुका। यह उदाहरण बताता है कि सामूहिक प्रयास और पारंपरिक तकनीकों का मेल असंभव को संभव कर सकता है।

राजस्थान सरकार ने जल संरक्षण की दिशा में कई महत्वपूर्ण पहलें की हैं। मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान इस दिशा में एक उल्लेखनीय प्रयास है। इस योजना के तहत लाखों जल संरचनाएं बनाई या पुनर्जीवित की गईं। इससे भूजल स्तर में सुधार हुआ और ठाामीण क्षेत्रों में पेयजल संकट कम हुआ। अटल भूजल योजना और जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से ठाामीण घरों तक पाइपलाइन से पानी उपलब्ध कराने और भूजल पुनर्भरण पर जोर दिया जा रहा है। 2003 में राजस्थान हाईकोर्ट ने भवन निर्माण में वर्षा जल संचयन को अनिवार्य किया था, लेकिन इसका पालन अपेक्षित स्तर तक नहीं हो सका। अब समय आ गया है कि इसे कठोरता से लागू किया जाए। कृषि क्षेत्र में बदलाव अनिवार्य है। भारत में कुल जल उपयोग का लगभग 80 प्रतिशत कृषि में होता है।

औद्योगिक और शहरी क्षेत्रों की चुनौतियां भी कम नहीं हैं। राजस्थान के औद्योगिक शहर जैसे भीलवाड़ा, पाली और सिरोही में वस्त्र उद्योग भारी मात्रा में पानी उपयोग करता है। कई इकाइयां अपशिष्ट जल बिना शुद्ध किए नदियों में छोड़ती हैं, जिससे जल स्त्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। इन उद्योगों को एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट लगाना अनिवार्य करना होगा और जल पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना होगा। शहरी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ते कंक्रीट के जंगल ने वर्षा जल के रिसाव को लगभग समाप्त कर दिया है। इस स्थिति में परकोलेशन पिट्स, चेक डैम्स और कृत्रिम रिचार्ज संरचनाएं विकसित करनी होंगी। स्मार्ट सिटी योजनाओं में जल संरक्षण को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

सरकारी प्रयास तभी सफल होंगे जब समाज की सक्रिय भागीदारी होगी। जल संरक्षण केवल योजनाओं या अभियानों का विषय नहीं, बल्कि हर नागरिक का दायित्व है। घर–घर में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम स्थापित करना अनिवार्य होना चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में जल संरक्षण शिक्षा को शामिल करना चाहिए। मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से जनजागरण अभियान चलाने होंगे। हर गांव, मोहल्ले और अपार्टमेंट में जल समितियां बनानी होंगी।

छोटे–छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। नलों को खुला न छोड़ना, स्नान, कपड़े और वाहन धोने में अनावश्यक पानी खर्च न करना, रीसायकल और री–यूज को जीवनशैली का हिस्सा बनाना–ये आदतें हमें आज ही अपनानी होंगी।

विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि यदि समय रहते जल संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में पानी को लेकर संघर्ष और युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए अब यह समय केवल चिंतन का नहीं, बल्कि संकल्प का है। राजस्थान का अनुभव बताता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी यदि संकल्प और सामूहिक प्रयास हों, तो सूखा इलाका भी पानी से लहलहा सकता है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि जल है तो कल है। यह नारा नहीं, बल्कि जीवन का सत्य है। यदि आज हम पानी को नहीं बचाएंगे, तो आने वाली पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी। अब समय है कि हम राजस्थान की प्रेरणा को पूरे देश में फैलाएं और हर बूंद की रक्षा का संकल्प लें। यही हमारी धरती, समाज और आने वाली पीढ़ियों के प्रति सच्ची जिम्मेदारी है।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

रोशनी लौटाने का संकल्प : नेत्रदान को जन आंदोलन बनाइये

सुनील दत्त गोयल

कॉर्निया अंधता उन समस्याओं में है जिन्हें सही सिस्टम और समय पर कदमों से तेजी से कम किया जा सकता है–जरूरत है जागरूकता को कार्रवाई में बदलने की, अस्पताल–आधारित रिट्रीवल को बढ़ाने की, और यह सुनिश्चित करने की किदान हुआ हर कॉर्निया अधिकतम लोगों की रोशनी लौटाए। राजस्थान आई बैंक सोसाइटी (EBSR) की ताज़ा तिमाही रिपोर्ट दिखाती है कि पक्का इरादा, अच्छी काउंसलिंग और तेज़ प्रोसेसिंग मिलकर कैसे बड़ा असर लाते हैं।

क्यों जरूरी है भारत में दृष्टिदोष और अंधता का कुल बोझ घटा है, लेकिन कॉर्निया अंधता ऐसा क्षेत्र है जहां प्रत्यारोपण से सीधे रोशनी लौट सकती है–यानी समस्या के साथ समाधान भी मौजूद है। राष्ट्रीय अंधत्व एवं दृष्टिदोष सर्वे (2015–19) ने दिखाया कि देश में अंधता का कुल प्रचलन 0.36% तक घटा, पर कॉर्निया सहित रोके जा सकने वाले कारणों पर सतत फोकस 2025 तक 0.25% के लक्ष्य के लिए जरूरी है।

राजस्थान का उदाहरण जनवरी–जून 2025 में EBSR ने 1,518 कॉर्निया जुटाए और 930 प्रत्यारोपण करवाए; Q1 की उपयोगिता 56% से 2 में 67% तक पहुँची, और जून में 197% ट्रांसप्लांट तथा 82.77% उपयोगिता का मासिक रिकॉर्ड बना। स्थापना से जून 2025 तक EBSR ने 25,808 कॉर्निया प्राप्त कर 16,597 प्रत्यारोपण कराए हैं, और बताया है कि राज्य में उपयोग होने वाले कुल कॉर्निया का लगभग 96% वह सप्लाई करता है–यह पैमाने, गुणवत्ता आश्वासन और समुदाय–भागीदारी का मजबूत मॉडल है।

देश की तस्वीर: सरकारी डेटा क्या कहता है

भारत सरकार के ऋ्रँर्ख के अनुसार 2019 तक अंधता प्रचलन 0.36% पर आ चुका था और 2025 तक 0.25% का राष्ट्रीय लक्ष्य तय है–यानी प्रोग्रामेटिक सुधार सही दिशा दे रहे हैं।

लोकसभा में सरकार ने बताया कि औसतन 40–50% दान की गई आंखें/कॉर्निया सालाना प्रत्यारोपण में उपयोग हो पाती हैं; गुणवत्ता, उम्र और मेडिकल कारणों से सभी ऊतक ऑप्टिकल ग्रेड नहीं बन पाते–यही गैप HCRP और लैब–सक्षम प्रक्रिया से पाटा जा सकता है।

2024–25 तक NPCBVI के माध्यम से 1.17 करोड़ से अधिक लोग विभिन्न नेत्र सेवाओं से लाभान्वित हुए; इसमें कैटरेक्ट, चश्मे, और अन्य रोग–प्रबंधन के साथ केरेटोप्लास्टी भी शामिल है–यह इकोसिस्टम कॉर्निया के असर को गुणा देने वाली बैकबोन है।

नीति इतिहास बताता है किसरकार ने आई बैंकों/एडिसी को फंडिंग, स्टाफ ट्रेनिंग, और प्रतिजोड़ी कॉर्निया पर प्रतिपूर्ति जैसी सहूलियतें दीं; लक्ष्य 1 लाख वार्षिक ट्रांसप्लांट तक स्केल करना था–अस्पताल–आधारित रिट्रीवल से उपयोगिता 50–72% तक जाती दिखी है।

क्या सबसे ज्यादा असर करता है

अस्पताल से सीधी प्राप्ति (HCRP):ICU/इमरजेंसी/मॉर्चरी में प्रशिक्षित काउंसलर समय पर सहमतिऔर बेहतर ऊतक दिलाते हैं, जिससे उपयोगिता और ट्रांसप्लांट दोनों बढ़ते हैं। सरकारी स्वीकारोक्ति के मुताबिक उपयोगिता 40–50% के औसत से ऊपर ले जाने के लिए यही सबसे बड़ा लीवर है।

उपयोगिता–फर्स्टसोच: सर्जन नेटवर्क, समय पर लैब टेस्ट (सेरोलॉजी, स्पेक्युलर माइक्रोस्कोपी), और लेमलर तकनीकें (DSEK/DMEK/DALK) एक कॉर्निया से दो मरीजों तक को लाभ पहुँचा सकती हैं।

भरोसा और सम्मान: राजस्थान की जमीनी कहानियाँ–चलती एंबुलेंस में नेत्रदान, तीसरे दिन की बैठक में सार्वजनिक सम्मान–दिखाती हैं कि संवेदनशील संवाद और पारदर्शिता से परिवार समय पर हाँ कहते हैं।

नीतिऔर सिस्टम: तुरंत क्या करें HCRP को सार्वभौमिक बनाइए: सभी मेडिकल कॉलेजों और बड़े अस्पतालों में 24X7 काउंसलर व रिट्रीवल टीम, मॉर्चरी एक्सेस और फास्ट–ट्रैक लैब सपोर्ट अनिवार्य हों; राज्यों के डैशबोर्ड कलेक्शन नहीं, उपयोगिता और ऑपरेशन पर रैंक करें।

उपयोगिता पर फंडिंग: अनुदान/CSR प्रोत्साहन उन आई बैंकों को प्राथमिकता दें जो लगातार 60–70%+ उपयोगिता दिखाएँ और जिलों तक लेमलर ट्रेनिंग पहुँचाएँ।

रुकावटें हटाइए: मेडिकल–लीगल क्लियरेंस, ट्रांसपोर्ट और इंटर–स्टेट एक्सचेंज के मानक समय–सीमा के साथ तय हों; जिला–स्तर पर सेरोलॉजी और स्पेक्युलर की उपलब्धता डिस्कार्ड कम करती है।

डेटा पारदर्शिता: NPCBVI डैशबोर्ड पर तिमाही राज्यवार कलेक्शन, ट्रांसप्लांटेबल–ग्रेड यील्ड और वास्तविक ट्रांसप्लांट प्रकाशित होते रहें, ताकि कलेक्शन बनाम उपयोगिता का अंतर न रहे।

जन–भागीदारी: NSS/कॉलेज, धार्मिक व सामुदायिक नेतृत्व और शोक–समय संवाद की स्क्रिप्ट–जिन्हें राजस्थान अपना रहा है–को व्यापक बनाइए, ताकि फॉर्म से ज्यादा परिवार की तैयारी हो और हेल्पलाइन पर समय से कॉल पहुँचे।

राजस्थान से देश की सीख

Q2 की उछाल–एक महीने में 197 ट्रांसप्लांट और 82.77% उपयोगिता–यह साबित करती है कि जब अस्पताल रिट्रीवल, काउंसलिंग और लैब–लॉजिस्टिक्स एक सूत्र में आ जाते हैं, तो हर दान लगभग तय रोशनी में बदलता है। यही मॉडल राष्ट्रीय स्तर पर अपनाने से 40–50% की औसत उपयोगिता को 60–70%+ तक ले जाना संभव है।

तुरंत कदम

सरकारें: HCRP का सार्वभौमीकरण, उपयोगिता–आधारित स्कोरकार्ड, लेमलर ट्रेनिंग, और इंटर–स्टेट ऊतक–विनिमय के समयबद्ध मानक तय करें–2025 के 0.25% लक्ष्य की दिशा में यह तेज़ी जरूरी है।

अस्पताल: ICU/ER/मॉर्चरी में आई–डोनेशन चैंपियन नामित करें और ऑन–कॉल रिट्रीवल SOPs लागू करें–यही घंटों के भीतर सहमति को संभव बनाता है।

नागरिक: परिवार से अभी बात करें, टोल–फ्री नंबर सहेजें, और मौत के कुछ घंटों में सूचना दें–यही वो पल है जो संवेदना को दृष्टि में बदल देता है। हर कॉर्निया ऑपरेशन थिएटर तक पहुँचना चाहिए–और हर हाँ एक इलाज में बदलनी चाहिए। देश के पास नीति, कार्यक्रम और अनुभव का खाका मौजूद है; राजस्थान यह दिखा रहा है कि जमीन पर इसे कैसे जिया जाता है।

धन्यवाद,

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

लेखक खुद भी अपने नेत्रदान का पंजीकरण करा चुके हैं। इसके अलावा अंगदान एवं देहदान का भी पंजीकरण कराया हुआ है।

विज़न डॉक्यूमेंट 2047 : रोजगार, आधारभूत संरचना, विकास से युवाओं को नए अवसरों तक

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश का विज़न डॉक्यूमेंट 2047, केवल एक भविष्य की कल्पना नहीं, बल्कि युवाओं के लिए बनाए जा रहे ठोस अवसरों का रोडमैप है

आकांक्षा पालावत

दुनिया आज एआई, पर्यावरण, क्लीन एनर्जी, स्पेस एक्सप्लोरेशन जैसे क्षेत्रों में जबर्दस्त बदलाव के दौर से गुजर रही है। यह चुनौती भी है और अवसर भी। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस चुनौती को अवसर में बदलने का संकल्प लेते हुए राज्य के साढ़े आठ करोड़ लोगों की भागीदारी से वर्ष 2047 तक राजस्थान को पूर्ण विकसित बनाने के लिए विजन डाक्यूमेंट 2047 जारी किया है और इस पर मिशन मोड पर कार्य शुरू कर दिया है। राज्य को देश का ग्रोथ इंजन बनाने के इस विजन डॉक्यूमेंट की हर नीति, हर योजना और हर प्रयास का केंद्र युवा हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश का विज़न डॉक्यूमेंट 2047, केवल एक भविष्य की कल्पना नहीं बल्कि आज के और आने वाले कल के युवाओं के लिए बनाए जा रहे ठोस अवसरों का रोडमैप है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सोच साफ है कि जब तक युवा आगे नहीं बढ़ेगा, तब तक राज्य प्रगति नहीं कर सकता क्योंकि युवा सम्भावना, एनर्जी और इनोवेशन का केन्द्र है इसलिए शिक्षा, उद्यमिता, रोजगार, स्वास्थ्य और स्किल डेवलपमेंट को प्राथमिकता दी जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से राजस्थान ने विकसित राज्य बनने का लक्ष्य तय किया है। वर्ष 2030 तक 350 बिलियन डॉलर और 2047 तक 4.3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का सपना, उन युवाओं की आकांक्षाओं को समर्पित है जो आज मेहनत कर रहे हैं, सीख रहे हैं, कुछ नया करना चाहते हैं। इस विज़न में हर युवा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी, आधुनिक स्किल्स के साथ रोजगार की तैयारी होगी, हर क्षेत्र में इनोवेशन और स्टार्टअप्स को बढ़ावा मिलेगा और सबसे अहम युवाओं को प्रदेश की विकास यात्रा का भागीदार बनाया जाएगा।

आज का युवा सिर्फ नौकरी नहीं, अपनी पहचान चाहता है। इसी सोच के साथ विश्वकर्मा युवा उद्यमी योजना शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत 18 से 45 वर्ष के युवाओं को 2 करोड़ रुपये तक का ऋण मिलेगा जिससे वे अपना खुद का स्टार्टअप या बिज़नेस शुरू कर सकें। महिलाओं, एससी, एसटी दिव्यांग और ग्रामीण युवाओं को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी। ट्रेनिंग, मार्गदर्शन और मार्केट से जोड़ने जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध होंगी। यह योजना युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ एक नया आत्मविश्वास भी दे रही है।

जयपुर में बन रहा राजस्थान इंस्टीट्ययूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ न केवल एक सुपर–स्पेशियलिटी संस्थान होगा बल्कि मेडिकल एजुकेशन और रिसर्च के क्षेत्र में युवाओं के लिए नए अवसर खोलेगा। डॉक्टर बनने की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए एक बेहतरीन विकल्प बनेगा। रिसर्च, ट्रेनिंग और इंटर्नशिप के जरिए मेडिकल छात्र राजस्थान में ही ग्लोबल स्तर की शिक्षा और अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। स्वास्थ्य क्षेत्र में रोज़गार और प्रोफेशनल ग्रोथ के नए रास्ते खुलेंगे।

राइजिंग राजस्थान समिट–2024 में 35 लाख करोड़ रूपये के एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इनमें से 4 लाख करोड़ रूपये के एमओयू पर काफी प्रगति हासिल की जा चुकी है। दिसम्बर, 2025 में जयपुर में समिट का आयोजन कर इन सभी एमओयू की प्रगति पर मंथन कर विकास की नई राह पर राज्य को अग्रसर किया जाएगा। राजस्थान इन्वेस्टमेंट प्रमोशन पॉलिसी, रीको डायरेक्ट अलोटमेंट पॉलिसी, डेटा सेंटर पॉलिसी, मिनरल पॉलिसी, टेक्सटाइल एंड अपेरल पॉलिसी से राज्य में औद्योगिक विकास को नया स्वरूप मिला है। न्यूनतम पर्यावरण प्रदूषण, कम निवेश में अधिकतम रोजगार और विश्वमंच पर भारत को सॉफ्ट पावर व सांस्कृतिक नेतृत्व का केन्द्र बनाने के लिए महत्वपूर्ण पर्यटन सेक्टर के लिए भी इस विजन डॉक्यूमेंट में बहुत कुछ है।

जोधपुर–पाली इन्डस्ट्रियल कॉरिडोर के पार्ट दिल्ली– मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर में 19 हजार करोड़ रूपये के निवेश से पश्चिमी राजस्थान में आधारभूत ढांचे, रोजगार और निवेश को नया आयाम मिलेगा। इससे 50 हजार प्रत्यक्ष और 2 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। राजस्थान इन्टीग्रेटेड क्लीन एनर्जी पॉलिसी–2024 के माध्यम से वर्ष 2030 तक 125 गीगावाट विद्युत उत्पादन का लक्ष्य है। वर्ष 2027 तक सभी किसानों को दिन में विद्युत सप्लाई का लक्ष्य पूर्ण होने से अन्नदाता को राहत और सुविधा मिलेगी। राज्य सरकार का लक्ष्य पब्लिक सेक्टर में 4 लाख और प्राइवेट सेक्टर में 6 लाख नए रोजगार देना है। राज्य सरकार ने नई भूमि आवंटन नीति–2025 लागू की है जिससे शिक्षा, हेल्थ और इंडस्ट्री से जुड़े युवाओं को ज़मीन, निवेश और विकास के लिए मदद मिलेगी। वहीं, एयरो स्पोर्ट्स भूमि लीज नीति रोमांचक खेलों, टूरिज्म और इवेंट्स से जुड़े युवाओं के लिए करियर के नए दरवाज़े खोल रही है। चाहे आप एजुकेशन सेक्टर में हो, हेल्थकेयर, टूरिज्म या एडवेंचर में सरकार हर दिशा में युवाओं को केंद्र में रखकर फैसले ले रही है। केन्द्र सरकार की खेलो इंडिया पॉलिसी–2025 भी इस दिशा में मददगार साबित होगी। राजस्थान में युवाओं के लिए आज जो किया जा रहा है, वही उन्हें आने वाले वर्षों में एक ग्लोबल सिटीजन बनाएगा। विश्वकर्मा योजना, रिम्स, राजस्थान मंडपम, सोलर और ठाीन एनर्जी प्रोजेक्ट्स, स्किल मिशन– ये सब मिलकर एक ऐसा इकोसिस्टम बना रहे हैं जहाँ हर युवा को अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का यह विज़न साफ है कि युवा केवल लक्षित समूह नहीं, विकास के भागीदार हैं। राजस्थान अब ऐसा प्रदेश बन रहा है जहाँ सपने सिर्फ देखे नहीं जाते, उन्हें साकार करने की व्यवस्था भी सरकार कर रही है। यह समय है पारम्परिक सोच से आगे बढ़ने का, सीखने, करने और बढ़ने का क्योंकि जब युवा आगे बढ़ेगा, तब ही राजस्थान 2047 का सपना हकीकत बनेगा। यह डॉक्यूमेंट नहीं हमारा भविष्य है, राजस्थान और इसके युवाओं का भविष्य।

आकांक्षा पालावत,
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, जोधपुर।

बचत मेले में युवाओं और बच्चों को बचत करने की सीख दी

डीडवाना, (निसं)। भारतीय डाक विभाग की ओर से नागौर डाक मंडल के तत्वावधान में डीडवाना में जिला स्तरीय विशाल बचत मेले का आयोजन किया गया। इस मेले का उद्देश्य आमजन, विशेषकर युवाओं और बच्चों को बचत के महत्व से जोड़ना और भविष्य के लिए सुरक्षित निवेश की दिशा में प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक ऋचा तोमर और रामावतार सोनी डाक अधीक्षक द्वारा किया, जहां डाक विभाग के अधिकारी–कर्मचारी, विद्यार्थी और बड़ी संख्या में अभिभावक मौजूद रहे।

अधीक्षक डाकघर नागौर मंडल रामावतार सोनी ने बताया कि शिविर के दौरान 11 हजार नए बचत खाते खोलने का लक्ष्य रखा गया है और लोगों की उत्साहपूर्ण भागीदारी से लगातार खाते खोले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मेलों का मकसद आमजन को वित्तीय साक्षर बनाना और बचत की आदत विकसित करना है। डाक निरीक्षक राज चौधरी ने जानकारी दी कि मेले में स्कूली बच्चों के लिए क्विज, निबंध, पत्र लेखन और पेंटिंग प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। पत्र लेखन का विषय बचत का महत्व और डाकघर बचत योजनाएँ और हमारा भविष्य रखा गया, जबकि पेंटिंग प्रतियोगिता का विषय बचत से सुनहरा भविष्य था। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में बच्चों ने बचत योजनाओं और वित्तीय साक्षरता पर ज्ञान का प्रदर्शन किया।

कन्या महाविद्यालय में खेल प्रतियोगितायें शुरु

भीलवाड़ा, (निसं)। सेठ मुरलीधर मानसिंहका राजकीय कन्या महाविद्यालय में शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष में खेल विभाग, महिला प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की स्मृति में श्रद्धांजलि कार्यक्रम एवं तीन दिवसीय खेल गतिविधियों का आगाज प्राचार्य प्रोफेसर सावन कुमार जांगिड़ की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर जांगिड़ ने मेजर ध्यानचंद के जीवन पर प्रकाश डाला तथा छात्राओं को खेलों का महत्व समझाते हुए उन्हें खेल संबंधी सभी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। खेल प्रभारी सुधा नवल ने तीन दिवसीय खेल गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। शुक्रवार प्रथम दिवस पर योग एवं प्राणायाम सत्र का आयोजन किया गया। सेठ मुरलीधर मानसिंहका राजकीय कन्यामहाविद्यालय के सहायक आचार्य प्रणव कुमार व्यास ने संकाय सदस्यों एवं छात्राओं को योग के महत्व के बारे में विशेष जानकारी प्रदान करते हुए योगाभ्यास एवं प्राणायाम करवाया। इस अवसर पर छात्राओं के लिए 'खेल एवं स्वास्थ्य' विषयक निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन नेहा शर्मा एवं हेमंता मीणा द्वारा किया गया, जिसमें छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य दिलीप कुमार शर्मा ने किया।

राशिफल

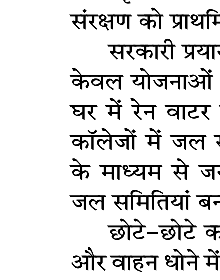

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 30 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, विशाखा नक्षत्र दिन 2:37 तक, ऐन्द्रयन योग दिन 3:10 तक, गर करण प्रातः 9:34 तक, चन्द्रमा प्रातः 7:53 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–कर्क, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन 2:37 तक है। भद्रा रात्रि 10:47 से आरम्भ होगी। आज बुध मघा सिंह राशि में प्रवेश करेगा। आज मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान और टुकड़ी सप्तमी, ललिता सप्तमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:44 से 9:18 तक, चर 12:28 से 2:02 तक, लाभ–अमृत 2:02 से 5:11 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:46

मेष

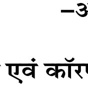

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृष

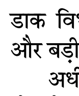

परिवार में प्रसन्नता–हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन

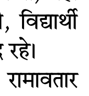

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

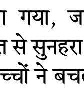

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह

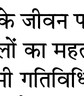

घर–परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।

कन्या

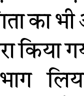

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

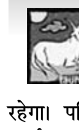

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

धनु

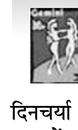

आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मकर

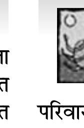

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ

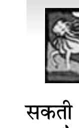

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

A Home In Time In those years, Jaipur didn't feel like a city-it felt like a large, extended household, a house with open doors, ready chairs, and a memory for names.

The Amul Girl

Energy Drinks! No! Energy Drinks may drastically impair Muscle Repair and Growth.

गहलोत की भांति सी.पी. जोशी भी अब राहुल गांधी के नज़दीक जाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं

जोशी का मन्तव्य है, कि वे प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा का पद प्राप्त कर लें

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। अशोक गहलोत के नक्शे-कदम पर चलते हुए, सी.पी. जोशी भी राहुल गांधी की नाराज़गी के बाद खुद को फिर से कांग्रेस की मुख्यधारा में स्थापित करने के लिए जी-जान से जुटे हैं।

सी.पी. जोशी ने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी (आरपीसीसी) के अध्यक्ष पद के लिए अपनी दावेदारी पेश कर दी है, जिससे उनके गोविंद सिंह डोटासरा की जगह लेने की चर्चा तेज हो गई है।

लेकिन उन्होंने यह रास्ता कैसे चुना?

जोशी ने मणिकम टैगोर (लोकसभा सांसद, तमिलनाडु) से संपर्क साधा है, जो राहुल गांधी के करीबी माने जाते हैं। और मणिकम के जरिए, जोशी की संपर्क की डोर पहुंची के.सी. वेणुगोपाल तक - जो इस वक्त राहुल गांधी की आवाज़ और अंत:करण माने जाते हैं, और कुछ विश्लेषकों के अनुसार, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से भी अधिक प्रभावशाली हैं।

- **इस मन्तव्य की प्राप्ति के लिये जोशी ने तमिलनाडु से निर्वाचित कांग्रेस के सांसद टैगोर को माध्यम बनाया है। जैसा कि विदित ही है, टैगोर, राहुल गांधी के विश्वास पात्रों की सूची में काफी उच्च स्थान रखते हैं।**
- **टैगोर के जरिये जोशी, के.सी. वेणुगोपाल के नज़दीक पहुंचे हैं, और वेणुगोपाल ने उन्हें (सी.पी. जोशी को) पंजाब में जिलाध्यक्ष के चयन की प्रक्रिया में पर्यवेक्षक नियुक्त करवा दिया है।**
- **वेणुगोपाल अब प्रचारित कर रहे हैं, कि हालांकि, जोशी ने केन्द्र व राज्य सरकार में वरिष्ठ पदों पर नियुक्ति पाई है, पर वे जानते हैं, कि यह राहुल गांधी का विश्वास है कि, योग्य व निष्ठावान जिलाध्यक्ष की नियुक्ति से पार्टी पुनर्जीवित होगी, इसलिए जोशी ने पंजाब के एक जिले के अध्यक्ष की नियुक्ति के लिये गठित समिति में पर्यवेक्षक का छोटा सा पद स्वीकार किया है।**
- **वेणुगोपाल द्वारा सी.पी. जोशी के पक्ष में दिये गये इस सार्वजनिक सर्टिफिकेट से सी.पी. जोशी का पार्टी में रुतबा तो जरूर बढ़ेगा, पर क्या यह सी.पी. जोशी की पुनर्वास यात्रा में पहला कदम माना जा सकता है।**

हाल ही में सी.पी. जोशी को पंजाब के एक जिला अध्यक्ष के चुनाव/चयन के लिए पर्यवेक्षक बनाया गया है- जो राहुल गांधी की एक नई और महत्वाकांक्षी योजना है, और जिसे वे काफी गंभीरता से ले रहे हैं। उनका मानना है कि कांग्रेस की वापसी की राह जिला अध्यक्षों के माध्यम से ही संभव है।

दिलचस्प यह है कि पंजाब में ज़िला अध्यक्षों की नियुक्ति पर पर्यवेक्षकों की हालिया बैठक में वेणुगोपाल ने सी.पी. जोशी की खुलकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि जोशी ने केंद्र और राजस्थान में कई वरिष्ठ पदों पर कार्य किया है, लेकिन इसके बावजूद वे एक साधारण ज़िले के पर्यवेक्षक का जिम्मा लेने से नहीं हिचकिचाए- सिर्फ इसलिए क्योंकि यह राहुल गांधी की प्रिय परियोजना है।

इसे वेणुगोपाल की ओर से "हार्ड सेल" (जोरदार सिफारिश) कहा जा सकता है, जिसमें वह राहुल को यह जताने की कोशिश कर रहे हैं कि जोशी जैसे बड़े नेता ने इतनी छोटी ज़िम्मेदारी को सिर्फ राहुल के लिए स्वीकार किया है।

बेहद दिलचस्प बात यह है कि सी.पी. जोशी कभी राहुल गांधी के करीबी माने जाते थे, जब वे एआईसीसी में 11 राज्यों के प्रभारी महासचिव थे। लेकिन समय के साथ उनके काम पर बढ़ती शिकायतों और अपेक्षित परिणामों की कमी के कारण राहुल ने उन्हें पद से हटा दिया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'क्या रजिस्ट्री को रिट याचिकाओं की योग्यता (मेंटेनेलिबिटी) तय करने का अधिकार है?'

- यादवेन्द्र शर्मा -

जयपुर, 29 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने जगदीश प्रसाद शर्मा द्वारा दायर एक रिट याचिका पर हाईकोर्ट की रजिस्ट्री द्वारा "मेंटेनेबिलिटी" (किसी मामले की सुनवाई के योग्य होना) को मुद्दा बनाते हुए याचिका को दायर होने से रोकने के खिलाफ कठोर टिप्पणी करते हुए आदेश पारित किए कि 1 सितम्बर 2025 को दोपहर 2 बजे राजस्थान हाईकोर्ट की बार इस मुद्दे पर अपने तर्क और मत प्रस्तुत करें।

- **हाईकोर्ट ने इसी मुद्दे पर कई शिकायतें दर्ज किए जाने के कारण हाईकोर्ट बार एसोसिएयेशन के सभी सदस्यों को अपना तर्क और मत प्रस्तुत करने के लिए एक सितम्बर को दोपहर 2 बजे अदालत में आमंत्रित किया है।**

न्यायाधीश समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश जगदीश प्रसाद शर्मा द्वारा दायर रिट याचिका सुनवाई करते हुए दिए।

इस मामले में याचिकाकर्ता की ओर से सुनील समदड़िया ने अदालत के समक्ष यह आपत्ति प्रस्तुत की थी कि हाईकोर्ट की रजिस्ट्री स्वत: ही आदेश पारित करती है कि कई रिट याचिकाएं

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

द्वितीय विश्व युद्ध से प्रचलित "ग्लोबलाइज़ेशन" का युग जर्जर हालात में है

पुतिन, शी जिनपिंग व मोदी इस खंडहर होते "सिस्टम" को अपने -अपने नज़रिये से देख रहे हैं, पर तीनों एकमत हैं, अमेरिका की दादागिरी के खिलाफ

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। अन्तर्राष्ट्रीयकरण जिसे कभी 21वीं सदी की ऐसी लहर माना जाता था, जिसे रोका नहीं जा सकता, अब अचानक अपने सबसे कठिन परीक्षण से गुजर रहा है। डॉनल्ड ट्रंप की सत्ता में वापसी और उनके टैरिफ (शुल्क) आक्रमण ने न केवल वित्तीय बाजारों को अस्थिर कर दिया है, बल्कि दुनिया के तीन सबसे प्रभावशाली नेताओं - व्लादिमीर पुतिन, शी जिनपिंग और नरेन्द्र मोदी - की ओर से एक स्वर में प्रतिरोध को भी जन्म दिया है। इन तीनों की प्रतिक्रिया अलग-अलग रही है, लेकिन संयुक्त रूप से वे वॉशिंगटन की एकतरफा नीति को खारिज करते हैं और एक नए व्यापारिक व्यवस्था की रूपरेखा की ओर संकेत करते हैं।

ट्रंप द्वारा पुराने सिस्टम को तोड़ना पुतिन की नज़र में कोई संकट नहीं, बल्कि एक अवसर है। रूसी नेता ने इस ओर इशारा किया है कि प्रतिबंधों और भू-राजनीतिक प्रतिद्वंदिता के बावजूद अमेरिका के साथ व्यापार वास्तव में ट्रंप के शासनकाल में बढ़ा है। उनके

- **पुतिन, इस "सिस्टम" के टूटने से उत्पन्न अव्यवस्था को एक सुअवसर मानते हैं, अमेरिकी दादागिरी वाले सिस्टम में, खुल कर खेलने का आनन्द लेना चाहते हैं।**
- **चीन अपने आप को पुराने ग्लोबलाइज़ेशन का विरोध करता नहीं दिखाना चाहता, पर नए सिस्टम को अमेरिका उन्मुख नहीं, बल्कि, चीन के नेतृत्व वाला सिस्टम बनाना चाहता है।**
- **नरेन्द्र मोदी, इस घटनाक्रम में, नेतृत्व करने की महत्वाकांक्षा नहीं रखते, बल्कि अपनी स्वायत्तता, (ओटोनोमी) की सुरक्षा चाहते हैं, जिससे अपने बारे में स्वयम् निर्णय लें, उन्हें किसी के दबाव में निर्णय नहीं लेना पड़े।**

अनुसार, अमेरिका की संरक्षणवादी नीति अमेरिकी प्रभुत्व में कमी की दर को तेज करती है। इससे रूस को चीन के साथ नजदीकी बढ़ाने, ऊर्जा निर्यात को विस्तार देने और वैश्विक अस्थिरता का रणनीतिक लाभ उठाने का अधिक अवसर मिलता है। मॉस्को पुराने नियमों के टूटने का शोक नहीं मना रहा; वह इस मैदान, जिस पर अमेरिका का प्रभुत्व कम है, पर खेलने का मौका स्वागत करता है।

दूसरी ओर शी जिनपिंग ने इस क्षण को अन्तर्राष्ट्रीयकरण के रक्षक के रूप में खुद को प्रस्तुत करने का मौका बनाया है। वे चेतावनी देते हैं कि "ट्रेड वॉर का कोई विजेता नहीं होता" और संरक्षणवाद केवल दूसरों को ही नहीं, बल्कि अमेरिका को भी नुकसान पहुंचाता है। एक के बाद एक भाषणों में, शी ने यूरोप, एशिया और ग्लोबल साउथ से अमेरिका की आर्थिक 'दादागिरी' का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मतदाता सूची पुनरीक्षण की संभावना से तृणमूल में भय पसरा

पर यह कवायद भाजपा के लिए भी नुकसान देह हो सकती है

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 29 अगस्त। चुनाव आयोग द्वारा बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण की शुरुआत करने के निर्णय से पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में चिंता की लहर दौड़ गई है। यहां भी यह प्रक्रिया जल्द शुरू होने वाली है। सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस को आशंका है कि यह कवायद प्रवासियों की नागरिकता और मतदान अधिकारों के मुद्दे पर राजनीतिक तूफान खड़ा कर सकती है।

आयोग के निर्देशों के अनुसार, मतदाताओं को अपनी पात्रता साबित करने के लिए 12 निर्धारित दस्तावेजों में से कोई एक पेश करना होगा। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने बाद में आदेश दिया कि आधार कार्ड और पुराने मतदाता पहचान पत्र भी मान्य माने जाएं, लेकिन ज़मीनी रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि पश्चिम बंगाल के लगभग एक

- **मतदाता सूची पुनरीक्षण से, 1947 से 1971 के बीच भारत आए बांग्लादेशी प्रभावित हो सकते हैं और महत्वपूर्ण बात है कि इनमें से 98 प्रतिशत हिंदू हैं।**
- **कुछ राजनैतिक विशेषज्ञ मतदाता सूची पुनरीक्षण को राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए सीधा राजनैतिक हमला बता रहे हैं, क्योंकि, इस हमले में उनका कोर वोट बैंक प्रभावित हो सकता है।**
- **ग्राउण्ड रिपोर्ट्स कहती हैं कि प. बंगाल के एक करोड लोगों के पास अभी भी आवश्यक दस्तावेज नहीं हैं।**

करोड़ निवासियों के पास संभवतया आवश्यक दस्तावेज नहीं हैं।

इससे तृणमूल खेमे में गहरी चिंता व्याप्त है, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी इस मुद्दे को अपने चुनाव प्रचार का मुख्य आधार बनाने की तैयारी में दिख रही है। भाजपा लंबे समय से बांग्लादेश से अवैध घुसपैठ का आरोप लगाती रही है और दावा करती है कि बंगाल की मतदाता सूची में बड़ी संख्या में ऐसे नाम हैं जिनकी जांच जरूरी है।

भाजपा के नीतिकारों का मत है कि मतदाता सूची के पूनरीक्षण के माध्यम से भाजपा खुद को राष्ट्रीय सुरक्षा और जनसंख्या संतुलन के रक्षक के रूप में पेश कर मतदाताओं को आकर्षित कर सकती है।

वहीं, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए यह प्रक्रिया एक प्रत्यक्ष राजनीतिक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दिसम्बर में पुतिन भारत आयेंगे

मॉस्को, 29 अगस्त। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन दिसंबर में भारत आएंगे। क्रेमलिन ने इसकी पुष्टि कर दी है। इससे पहलेसोमवार को चीन के तियानजिन में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पुतिन की मुलाकात होगी। यह जानकारी शुक्रवार को क्रेमलिन के विदेश नीति सलाहकार यूरी उशाकोव ने दी।

- **वे भारत में वार्षिक द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे।**

अमेरिका ने रूस से तेल खरीदने पर भारत पर 50 फीसदी टैरिफ लगाया था। इसे लेकर रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने पीएम मोदी को फोन किया था। इस दौरान पीएम मोदी ने रूस के राष्ट्रपति पुतिन को इस साल के अंत में वार्षिक द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन में भारत आने का न्योता दिया था। अब क्रेमलिन ने इस पर मुहर लगा दी है। क्रेमलिन के विदेश नीति सलाहकार यूरी उशाकोव ने कहा कि पुतिन दिसंबर में भारत की यात्रा करेंगे।

2020 में हिंसात्मक संघर्ष के बाद में भारत व चीन के सम्बंधों में बदलाव कैसे आया?

न्यूज़ एजेन्सी ब्लूमबर्ग के अनुसार, चीन के राष्ट्रपति शी ने भारत की राष्ट्रपति मुर्मू को गोपनीय पत्र लिखकर चीन -भारत सम्बंधों में सुधार लाने का प्रयास शुरु कर दिया था

- जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अगस्त। चीनी लोग कूटनीति में माहिर माने जाते हैं। इसका उदाहरण शी जिनपिंग की उस गुप्त चिट्ठी से मिला जिसमें उन्होंने भारत से रिश्ते सुधारने की पहल की।

एक अज्ञात भारतीय अधिकारी के हवाले से आई एक रिपोर्ट के अनुसार, शी जिनपिंग का पत्र यह परखने के लिए था कि भारत, चीन के साथ अपने रिश्तों को फिर से संतुलित करने के लिए तैयार है या नहीं।

जब इस साल की शुरुआत में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने चीन पर व्यापारिक दबाव बढ़ाया, तो बीजिंग ने भारत तक पहुँच बनाने के लिए

- **ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, इस पत्र के पश्चात् जून महीने के बाद भारत ने चीन के साथ सम्बंध सुधारने की पहल को गंभीरता से लेना शुरु किया।**
- **ट्रंप द्वारा बार-बार, यह दम्भ भरने से, कि उन्होंने भारत-पाक के युद्ध को अपने प्रयास से खत्म करवाया, ने दोनों देशों को और नजदीक आने में मदद की।**
- **और, चीन ने यह नारा दिया कि, "हाथी व ड्रैगन" को मिलकर नृत्य करने के अलावा कोई और, समझदारीपूर्ण विकल्प नहीं है।**

राष्ट्रपति शी जिनपिंग का एक निजी पत्र राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भेजा। यह दावा न्यूज़ एजेन्सी ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट में किया गया।

हालाँकि पत्र राष्ट्रपति मुर्मू को भेजा गया था, लेकिन संदेश जल्द ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक पहुँचा दिया गया। उस नोट में शी ने चिंता जताई थी कि अमेरिका और भारत के बीच होने वाले किसी भी समझौते से बीजिंग के हितों को नुकसान पहुँच सकता है। रिपोर्ट में कहा गया कि चीन ने एक प्रांतीय अधिकारी का भी नाम बताया था जो बीजिंग की पहल को आगे बढ़ाएगा।

रिपोर्ट के अनुसार, जून से मोदी सरकार ने चीन की इस पहल को गंभीरता से लेना शुरू किया। उसी समय भारत अमेरिका से भी ट्रंप की टैरिफ धमकियों और उनकी इस दलील पर बातचीत कर रहा था कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम आतंकी हमले (जिसमें 26 लोग मारे गए) के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव कम कराने में उन्होंने (ट्रंप ने) भूमिका निभाई।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ब्लूटूथ से नकल कराने वाले आरोपी को जमानत नहीं मिली

जयपुर, 29 अगस्त। अतिरिक्त सत्र न्यायालय क्रम-1, महानगर द्वितीय ने राजस्व अधिकारी और अधिशाषी अधिकारी भर्ती, 2022, में परीक्षार्थियों को ब्लूटूथ के जरिए नकल कराने के मामले में न्यायिक अभिरक्षा में चल रहे

- **आरोपी राजस्व अधिकारी व अधिशाषी अधिकारी परीक्षा 2022 के मामले में न्यायिक अभिरक्षा में है।**

आरोपी तुलछाराम कालेर को जमानत देने से इन्कार कर दिया है। पीठासीन अधिकारी बीएल चंदेल ने अपने आदेश में कहा कि आरोपी के कृत्य से योग्य व्यक्ति चयन से वंचित हुए हैं और मेहनत करने वाले हजारों अभ्यर्थियों के साथ धोखाधड़ी कर उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ किया गया है। ऐसे में आरोपी को जमानत का लाभ नहीं दिया जा सकता।

जमानत अर्जी में कहा गया कि उसे प्रकरण में झूठा फंसाया गया है और वह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गहलोत प्रदेश के हर बड़े-छोटे मुद्दे पर बयान देते हैं, पर एस.आई. भर्ती परीक्षा 2021 रद्द किए जाने के फैसले पर चुप्पी क्यों?

क्या यह चुप्पी गहलोत की असमंजता को दर्शाती है क्योंकि उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल में पेपरलीक से निपटना तो दूर, बल्कि उसे बढ़ावा दिया गया?

- यादवेन्द्र शर्मा -

जयपुर, 29 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 को रद्द करने के आदेश को लेकर विपक्ष और पक्ष के नेताओं में मीडिया में काफी बयानबाजी चली। एक तरफ भाजपा नेता जैसे, किरोड़ी लाल मीणा, ने फैसले को सराहा और इसे उनकी और भाजपा की राजनीति में जीत बताया, वहीं विपक्षी नेताओं ने परीक्षा रद्द नहीं करने के राज्य सरकार के फैसले पर उंगली उठाई। पर इन सभी बयानों में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की चुप्पी सबसे ज्यादा स्पष्ट नजर आई, उन्होंने इस विषय पर एक ट्वीट भी नहीं दिया।

न्यायाधीश समीर जैन के फैसले में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी और अवलोकन यह था कि व्यापक पेपरलीक और नकलबाजी के अपराध को राजस्थान

- **हाईकोर्ट का निर्णय इस तथ्य पर जोर देता है कि व्यापक पेपरलीक को आर.पी.एस.सी. सदस्यों की मिलीभगत के बिना अंजाम नहीं दिया जा सकता था। बल्कि आर.पी.एस.सी. सदस्य न केवल परीक्षा प्रक्रिया की त्रुटियों को जानते थे, बल्कि जानबूझकर अनदेखा कर रहे थे ताकि अयोग और कपटी तरीकों से अभ्यर्थियों का चयन किया जा सके।**
- **इस प्रकरण में यह भी हैरान करने वाली बात है कि आर.पी.एस.सी. सदस्यों के नाम अन्य परीक्षाओं के पेपरलीक में भी नाम आए थे, और इन मामलों में दर्ज एफ.आई.आर. की बिसात पर पेपर रद्द कर दिए गए, परन्तु आरोपी सदस्यों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई।**
- **पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत की चुप्पी इसलिए भी चुभती है क्योंकि उनके कार्यकाल में आर.पी.एस.सी. में नियुक्त किए गए दो सदस्यों का नाम बड़ा ही विवादों से घिरा रहा। एक था कुमार विश्वास की पत्नी मंजू शर्मा और दूसरा था गहलोत के करीबी और मुख्य सचिव रहे निरंजन आर्य की पत्नी संगीता आर्य। अब हाईकोर्ट के फैसले के बाद इन नियुक्तियों के फैसले पर सवाल और भी प्रबल हो गये हैं।**

लोक सेवा आयोग (आर.पी.एस.सी.) सदस्यों की मिलीभगत के बिना अंजाम नहीं दिया जा सकता। न्यायाधीश समीर जैन के फैसले में यह भी कहा गया कि इस मामले की गहन जांच से स्पष्ट होता है कि आर.पी.एस.सी. द्वारा आयोजित परीक्षाओं में कई तरीके की त्रुटियां थी, जिन्हें जानबूझकर नज़रअंदाज किया गया था और अपराधिक गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा था। अदालत ने अपने आदेश में हिन्दी मुहावरा "घर का भेदी-लंका ढाए" का उपयोग करते हुए निष्कर्ष दिया कि आर.पी.एस.सी. अधिकारी, जिनमें बाबूलाल कटारा, रामूराम रायका, मंजू शर्मा, संगीता आर्या और जसवंत राठी शामिल थे, ने मिल-जुलकर पेपरलीक की वारदात को अंजाम दिया।

इस मामले में अदालत ने अपने आदेश पर इस बात पर भी हैरानी जताई है कि बाबूलाल कटारा कई पेपरलीक जैसे, ग्रेड-2 टीचर भर्ती-2022 और वरिष्ठ अध्यापक भर्ती परीक्षा-2022 में भी एफ.आई.आर. में नामजद थे और एफ.आई.आर. में दर्ज तथ्यों को देखते हुए आर.पी.एस.सी. ने इन परीक्षाओं को रद्द किया था। परन्तु आर.पी.एस.सी. या राज्य सरकार ने किसी भी स्तर पर बाबूलाल कटारा को आर.पी.एस.सी. सदस्यता से हटाने या उनके खिलाफ कार्रवाई आरम्भ करने के विषय में न तो सोचा और न ही कोई कदम उठाया।

एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 में पेपरलीक मामले में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की चुप्पी, इसलिए भी ज्यादा चुभती है कि, क्योंकि न्यायालय में जिन आर.पी.एस.सी. सदस्यों को साजिश में भागीदार बताया है, उनमें से कम से कम दो सदस्यों के चयनित होने पर गहलोत सरकार के कार्यकाल के दौरान भी कई तरह की चर्चा हुई थी।

पहला नाम संगीता आर्य का है, जो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पेपरलीक का ईनामी अपराधी उड़ीसा से गिरफ्तार

जयपुर, 29 अगस्त। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने कार्रवाई करते हुए विभिन्न पेपर लीक मामलों में पचास हजार के इनामी वांछित अपराधी को उड़ीसा से गिरफ्तार किया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी वीके सिंह ने

- **एसओजी ने राजस्थान से 1600 किलोमीटर दूर फरार आरोपी को पकड़ने में सफलता पाई।**

बताया कि एसओजी ने कार्रवाई करते हुए विभिन्न पेपर लीक मामलों में पचास हजार का इनामी वांछित अपराधी विनोद कुमार रेवाड़ (42)निवासी रेनवाल जिला जयपुर को सोलह सौ किलोमीटर दूर दसपल्ला जिला नयागढ़ (उड़ीसा) से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बचने के लिए आरोपी रेल्वे ब्रिज बनाने वाले ठेकेदार के पास वाहनों में डीजल भरने का काम कर रहा था।

सिंह ने बताया कि आरोपी पेपर लीक के विभिन्न प्रकरणों यथा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

संक्षिप्त

विजेताओं को किया सम्मानित

निवाई। कॉलेज शिक्षा जयपुर के निर्देशानुसार मेजर ध्यानचंद की जयंती पर आयोजित राष्ट्रीय खेल दिवस पर खेल विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन हुआ। प्रतियोगिताओं का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. दीपकराज जैन ने हरी झंडी दिखाकर किया। खेल प्रभारी राजेशकुमार मीणा ने बताया कि प्रतियोगिता में सर्वप्रथम रस्साकशी खेल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें महिला टीम में किस्मत जाट व पुरुष वर्ग में अनुराग प्रजापत टीम विजेता रहे। इसके बाद बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें महिला वर्ग में राशिका जैन ने प्रथम व सुमन चौधरी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। खेलों के दौरान नोडल प्रभारी प्रभा गुप्ता ने स्वास्थ्य में खेल गतिविधियों के महत्व की जानकारी दी। राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी रूपा चौधरी ने स्वयंसेवको को खेल गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार राजकीय कन्या महाविद्यालय खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

देवनारायण भगवान की 15वीं निशान पदयात्रा रवाना

शाहपुरा। खोरी ग्राम की खुडालिया की ढाणी से देवका हरवाड़ा देवनारायण मंदिर के लिए 15वीं निशान पदयात्रा रवाना हुई। रवाना होने से पहले ढाणी के भोमियाजी मंदिर में ध्वज की पूजा अर्चना की गई। शायर फामड़ा ने बताया कि पदयात्री हाथों में ध्वज लेकर देवनारायण भगवान के जयकारे के साथ रवाना हुए। कालूराम फामडा, रामफूल रावत, मोहन गौरसी, मुकेश फामड़ा, सतीश, दहिया, हंसराज भडाणा, सुभाष पोषवाल सहित कई भक्त देवमहाराज के लिए रवाना हुए। पदयात्रा का जगह-जगह लोगों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। डीजे पर भजनों पर महिलाओं ने जमकर नृत्य कर आनंद उठाया। पदयात्रियों ने शुक्रवार को देवनारायण भगवान के मंदिर में पहुंचकर ध्वज चढ़ाकर सुख समृद्धि की कामना की।

टीबी निक्षय पोषण किट वितरित

टोंक। जिला विधिक प्राधिकरण टोंक में नालसा मेगा विधिक सेवा शिविर कार्यक्रम के अंतर्गत रामेश्वर प्रसाद मेमोरियल सेवा संस्थान टोंक के तत्वाधान में अयूब खान जिला एवं सेशन अधिकारी एवं दिनेश जलुथरिया सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अध्यक्षता में निक्षय मित्र बादल साहू (पार्षद) एवं आकाश जैन के द्वारा 10 पंजीकृत टीबी मरीजों को निक्षय पोषण किट वितरित किया गया। इस अवसर पर जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ हिमांशु मित्तल ने टीबी बीमारी की विस्तृत जानकारी दी, इस अवसर पर डॉ. मोहम्मद सादिक, एसटीएस महेंद्र योगी, बीएचएस अनीता चौधरी मौजूद रहे।

कार्यकारिणी का गठन

टोंक। उनियारा उपखण्ड क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बनेठा में देश के सबसे बड़े साहित्यिक मंच अखिल भारतीय साहित्य परिषद की बैठक आयोजित की गई, जिसमे परिषद की कार्यकारिणी गठन करते हुए उनियारा-अलीगढ़ इकाई का अध्यक्ष हंसराज तंवर व सन्दीप कुमार जैन नवोदित को महामंत्री मनोनीत किया गया।

ज्ञान गंगा कार्यक्रम का आयोजन

दौसा। जैन धर्म में सबसे पवित्र माने जाने वाले भाद्रपद मास के चलते जैन धर्मावलंबियों में खासे उत्साह, उमंग, व्रत, उपवास, पूजा, पाठ और साथ में धार्मिक गेम्स का दौर चल रहा है आज से दसलक्षण पर्व आरम्भ हो रहा है। इसकी पूर्व संध्या पर स्थानीय आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में त्रिशला महिला मंडल के तत्वावधान में खेल खेल में ज्ञान गंगा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

अलवर में भर्तृहरि बाबा के चार दिवसीय मेले का शुभारम्भ

अलवर। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव, वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री संजय शर्मा, क्षेत्रीय विधायक व प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली ने भर्तृहरि बाबा के मंदिर में पूजा-अर्चना कर देश व प्रदेश की खुशहाली की कामना की ओर चार दिन चलने वाले भर्तृहरि मेले का ध्वजा लहराकर शुभारम्भ किया। इस मौके पर मेला कमेटी की ओर से अतिथियों को भर्तृहरि महाराज द्वारा रचित श्रंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक भेंट किए।

मेले के शुभारंभ पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि बाबा भर्तृहरि महाराज सीमाओं से परे जन-जन की आस्था का केंद्र है। उन्होंने कहा कि भर्तृहरि बाबा द्वारा रचित पुस्तकें जीवन के सभी आयामों का संदेश देती है, जिसमें श्रंगार शतक व्यक्ति को सामाजिक जीवन को जीने, नीति शतक राजनीति को सुव्यवस्थित संचालित करने एवं ईश्वर प्राप्ति हेतु वैराग्य शतक लिखा जो मनुष्य को सार्थक जीवन जीने का संदेश देते हैं। उन्होंने कहा कि महाराजा भर्तृहरि के जीवन से हम सत्य, निष्ठा, त्याग एवं जनकल्याण की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि अलवर के चहुंमुखी विकास में जन-जन के आस्था केंद्र बाबा भर्तृहरि महाराज धाम के विकास के लिए राज्य सरकार ने बजट घोषणा की है उसको आगे बढाते हुए यहां 5 हैक्टेयर भूमि पर का संपरिवर्तन की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है वो यथाशीघ्र पूर्ण होगी। इस दौरान थानागाजी विधायक कान्ती प्रसाद मीणा, थानागाजी नगर पालिका चैयरमैन चौथमल सैनी, मालाखेडा प्रधान वीरमती देवी, उमरैण प्रधान दौलतराम जाटव, जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता व महासिंह चौधरी, पेमाराम सैनी सहित अनेक प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

मंत्री भूपेंद्र यादव, प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली, राज्य मंत्री संजय शर्मा ने विधिवत मेले का शुभारंभ किया।

- केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली, राज्य मंत्री संजय शर्मा ने किया ध्वजा लहराकर मेले का शुभारंभ

पर्युषण पर्व पर श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में आयोजित दशलक्षण धर्म के तहत शुक्रवार को शहर के सभी दिगम्बर जैन मंदिरों में उत्तम मार्दव धर्म की विशेष पूजा अर्चना की गई। जिसमें शहर अष्ठ जिनालयों में श्रद्धालुओं ने विधिवत मंत्रोच्चार द्वारा पूजा अर्चना की। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में विधानाचार्य पं. सुरेश शास्त्री के सानिध्य में ऋषि मण्डल विधान का आयोजन किया गया। जिसमें सोधर्म इन्द्र नवीन खंडवा ने श्रीफल अघ्र्य चढ़ाकर पुण्यार्जन किया। नसियां जैन मंदिर, बिचला जैन मंदिर में सोधर्म इन्द्र अशोक माधोराजपुरा, श्री दिगंबर जैन अग्रवाल मंदिर में भगवान की शांतिधारा अमित कटारिया, विष्णु बोहरा, सुशील आरामशीन, दिनेश चंवरिया, नेमीचंद गंगवाल, महावीर पराणा, लालचंद कठमाणा, दिलीप भाणजा, हेमंत चंवरिया, मोहित चंवरिया, योगेंद्र सिंघल, नितिन छाबड़ा, अनंत बनेठा, हितेश छाबडा, रामपाल चंवरिया, हर्षित संघी व मनीष झिलाय ने की।

राष्ट्रीय खेल दिवस धूमधाम से मनाया

पावटा। राष्ट्रीय खेल दिवस पूरे देश में बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। इसी अवसर पर डिस्कवरी इंटरनेशनल स्कूल, प्रागपुरा के खेल मैदान में सुबह 9 बजे एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान विद्यालय के निदेशक दीपक यादव ने अपने संबोधन में कहा कि खेल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। खेल युवाओं को स्वस्थ, अनुशासित और ऊर्जावान बनाते हैं। उन्होंने छात्रों को नियमित रूप से खेलों में भाग लेने और फिट रहने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय प्राचार्य एस. वी. सिंह ने अपने भाषण में कहा कि खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि यह टीम वर्क, सहयोग और नेतृत्व क्षमता विकसित करने का सर्वोत्तम माध्यम भी हैं। उन्होंने कहा कि खेल से छात्रों का सर्वांगीण विकास संभव है।

आम सूचना

आम जन को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल ने प्लाट संख्या 2 फर्स्ट पेट्रोल पम्प के सामने, कुण्डा कॉलोनी, आमेर दिल्ली बाइपास रोड जयपुर को मेरे मुवक्किल भूरी सिंह ने क्रय करने का अनुबंध किया है इस सन्दर्भ में अगर किसी पक्ष को आपत्ति हो तो सूचना दिनांक से एक सप्ताह के अन्दर मेरे मुवक्किल भूरी सिंह के मोबाईल नम्बर 9782311786 एवं 9799990369 पर संपर्क करें।

मिनहाज अबुजर मंसुरी, 9782444622

खोया पाया

मेरा एक बैग पीले रंग का, G.T. के आसपास कहीं गिर गया जिसमें मेरे मकान 10/587 का मूल अलॉटमेंट लेटर था, मिलने पर सूचित करें- 9829548258 विमला सैन

प्लाट संख्या 175, गुलाबी नगर गृह निर्माण सहकारी समिति लि. की योजना मोती नगर का समिति द्वारा जारी साईट प्लान एवं रसीद कहीं गुम हो गई है। मिलने पर सम्पर्क करें। श्रीमती बीना नेगी, मो.9819796207

नाम परिवर्तन

मैने अपना नाम यशोदा मंगनानी से बदलकर नेहा राघानी रख लिया है। भविष्य में मुझे मेरे नये नाम नेहा राघानी पत्नी श्री मनोज राघानी के नाम से जाना पहचाना जावे। निवासीः मकान नम्बरः 54, गुरूनानक कॉलोनी, ब्रह्मपुरी रोड, जयपुर।

मै Sidhanth Nawalkha पुत्र सूरज नवलखा निवासी D-2, नन्दनम, तिलक नगर सी-स्कीम, जयपुर-302001 मैने अपना नाम Sidhant Nawalkha रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से पहचाना जावे।

मै जै. सी. 877845A नायब सूबेदार रबिनारायण भान्जा पता- ग्राम बंधापड़ा, पोस्ट- राजापुर, जिला- जाजपुर (उड़ीसा) मेरे सर्विस रिकॉर्ड में बेटी का नाम अनुराधा है जो गलत है सही नाम अनुराधा भान्जा है शब्द पत्र संख्या- IN-RJ23872522236950X दिनांक 21.08.2025

मै जै. सी. 877845A नायब सूबेदार रबिनारायण भान्जा पता- ग्राम बंधापड़ा, पोस्ट- राजापुर, जिला- जाजपुर (उड़ीसा) मेरे सर्विस रिकॉर्ड में पत्नी का नाम कन्क लता है जो गलत है सही नाम कन्क लता भान्जा है शब्द पत्र संख्या IN-RJ23872522236950X दिनांक 21.08.2025

मेरी 10th की अंकतालिका में मेरा नाम कीर्ति (Keerti) है। जबकि अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम कीर्ति नवीन दोहरे (Keerti Naveen Dohare) है। भविष्य में मुझे कीर्ति नवीन दोहरे पत्नी श्री नवीन दोहरे, 152, गोविन्द नगर, वैशाली नगर, अजमेर रोड, जयपुर के नाम से जाना पहचाना जावे।

मै सुशांत मंगल हूँ, मेरे पासपोर्ट नंबर Z7446544 में मेरी माता का नाम अनीता मंगल दर्ज है, जो गलत है। मेरी माता का सही नाम अनीता देवी गुप्ता है।

मै सुशांत मंगल हूँ, मेरे पासपोर्ट नंबर Z7446544 में मेरे पिता का नाम कैलाश मंगल दर्ज है, जो गलत है। मेरे पिता का सही नाम कैलाश चंद गुप्ता है।

I have changed my name Rupani Ramesh Mevaram to Rames Rupani for all future and legal purpose. 119/397, Agrawal Farm, Mansarovar, Jaipur- 302020

I ic/ service no 691622N Ex sergeant Surya Prakash Agrahari S/O Harigovind Agrahari resident of D-182-183 flat no 201 Ridhi raj Enclave Ram marg Hanuman Nagar D block Vaishali Nagar Jaipur that i want changes my spouse name which is wrongly entered in my service record from UMASHREE AGRAHARI To UMASHRI AGRAHARI vide affidavit dated 27 August 25 before district sub divisional magistrate Jaipur city south

I Army no 16019490W Ex Nk Deepak doot S/O Rajendra prasad doot Resident of plot no B 15 Pratap Nagar murlipura jaipur that i want change my dependent name which is wrongly entered my service record from RAJENDRA PARSAD DOOT TO RAJENDRA PRASAD DOOT vide affidavit dated 13 August 2025 before district sub divisional magistrate Jaipur city north

I ic/ army no 14604609H Ex Hav Kartar singh S/O sher singh resident of village post kuhakana khurd tehsil viratnagar District Kotputli behror rajasthan that i want change my dependent name which is wrongly entered my service record from PRITHVI RAJ SINGH To PRITHAVI RAJ SINGH vide affidavit dated 26 aug 2025 before Sub divisional magistrate viratnagar Kotputli behror

उपखण्ड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

फुलेरा । आमजन की समस्यायों को लेकर फुलेरा नगरपालिका की पार्षद आशा सैनी ने मुख्यमंत्री के नाम का एक ज्ञापन उपखण्ड अधिकारी सांभरलेक को सौपा ज्ञापन। ज्ञापन में पार्षद आशा सैनी ने बताया कि नगरपालिका फुलेरा में अधिशाषी अधिकारी के अस्थाई पद व पिछले दो साल से कनिष्ठ अभियंता का पद भी रिक्त होने के कारण कार्यों के प्रति घोर लापरवाही एवं उदासीनता बरती जा रही है। इसके चलते आमजन के दैनिक एवं आवश्यक कार्य ठप पड़े हुए हैं। संबंधित कर्मचारियों से वार्ता करने पर अधिकांश यह कहकर टाल दिया जाता है कि अभी टेण्डर नहीं हुए हैं, स्टोर में सामान उपलब्ध नहीं है, अथवा उच्च अधिकारियों से बात करें।पार्षद सैनी ने यह भी उल्लेख किया कि राजस्थान सरकार के आदेश के बावजूद घरेलू कामकाजी महिलाओं के नाम खाद्य सुरक्षा सूची में शामिल नहीं किए जा रहे हैं।

दौसा से गोवर्धन धाम के लिए 40वीं पदयात्रा रवाना, उमड़ा आस्था का सैलाब

दौसा। दौसा से गिरिराज महाराज गोवर्धन धाम के लिए 40वीं पदयात्रा शुक्रवार को गाजे-बाजे और शाही लवाजमे के साथ रवाना हुई। इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे।

पदयात्रा की शुरुआत सुबह कलाली मंदिर में ध्वज पूजन के साथ हुई। इसके बाद, पदयात्री जयकारे लगाते और भजनों पर नाचते-गाते हुए शहर के मुख्य मार्गों से गुजरे।

इस दौरान एक रथ पर गिरिराज महाराज की मनमोहक झाँकी सजाई गई थी, जो आकर्षण का केंद्र रही। पूरे रास्ते में जगह-जगह लोगों ने पुष्पवर्षा कर पदयात्रियों का स्वागत किया और उन्हें जलपान और फल वितरित किए। यात्रा गिरिराज धरण मंदिर पहुँचकर समाप्त हुई, जहाँ एक भजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भजन गायक गोपाल लाल गुप्ता और अन्य कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भजन सुनाकर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। गिरिराज धरण मंदिर के दर्शन के बाद पदयात्री गोवर्धन धाम के लिए रवाना हो गए। पदयात्रा का रात्रि विश्राम सिकंदरा चौराहे पर होगा।

इसके बाद, यह यात्रा 30 अगस्त को लंगड़ा बालाजी, 31 को महवा, 1 सितंबर को कृषि मंडी गंज खेड़ली, 2 को नगर और 3 सितंबर को परिक्रमा मार्ग, गोवर्धन के रामानंद आश्रम में रात्रि विश्राम करेगी। अंतिम दिन, यानी 4 सितंबर को गिरिराज महाराज को ध्वज भेंट किया जाएगा। इस दौरान यात्रा में रमेशचंद्र शास्त्री, जुगलसिंह बारेठ, मदनलाल शर्मा, सुखराम मीणा, शिवलाल मीणा सहित कई प्रमुख लोग मौजूद रहे।

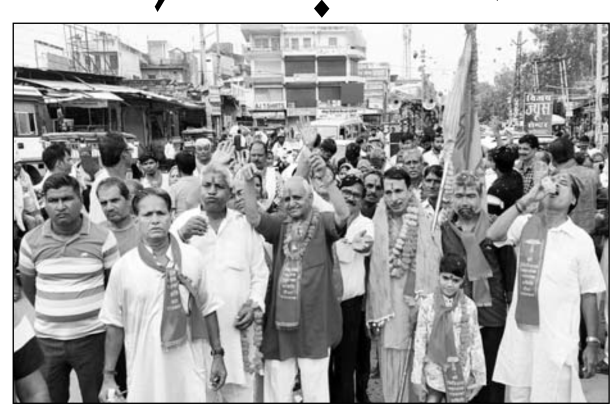

शहर से गुजरती पदयात्रा एवं शोभायात्रा।

- पदयात्रा की शुरुआत सुबह कलाली मंदिर में ध्वज पूजन के साथ हुई। इसके बाद, पदयात्री जयकारे लगाते और भजनों पर नाचते-गाते हुए शहर के मुख्य मार्गों से गुजरे

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर

राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को

मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/504 चूंकि प्रार्थी श्री CHETRAM SAINI, JAIN NASIYA KE PAS MANTANGO KI DHANI CHAKSU JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17 (1) के अन्तर्गत प्रन्यास सी.एल.एन.ट्रस्ट, GRAM RUPWAS, GRAM PANCHAYAT BADODIYA TEHSIL KOTKHAVADA JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है।
अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 19-08-2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 31/10/2025

मोहर अदालत — सहायक आयुक्त, देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

'अलवर में 10 करोड़ रूपये की लागत से हॉकी एस्ट्रोटूफ का निर्माण कराया जाएगा'

अलवर। केंद्रीय खेल एवं युवा मामले तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया ने केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव एवं वन राज्य मंत्री संजय शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर शुक्रवार प्रताप ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में रिमोट का बटन दबाकर अलवर सांसद खेल उत्सव 2025-26 के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया का शुभारंभ किया गया।

केंद्रीय खेल मंत्री मांडविया ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश की विरासत से प्रेरणा लेकर विकसित भारत कल्पना रखी गई है, जिसमें खेलो इंडिया फिट इंडिया के माध्यम से गांव-ढाणी तक की खेल प्रतिभाओं को भी सर्व सुविधाएं प्रदान करने के लिए खेलों का ईको सिस्टम तैयार किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में खेलो भारत नीति लाई गई है, जिसमें पुरूषों के साथ-साथ महिलाओं एवं दिव्यांगजनों को भी खेलों में समान अवसर मिल रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने भारत को खेलों के क्षेत्र में अगले दस साल में दुनिया के टॉप 10 देशों में शामिल करने का लक्ष्य रखा है तथा आजादी की शताब्दी वर्ष तक टॉप 5 देशों में शामिल करने का लक्ष्य दिया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा खेलों में सुधारों को बढावा दिया जा रहा है, जिसके तहत स्पोर्ट्स के लिए संसद में गुड गवर्नेंस बिल पारित किया गया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के फिट इंडिया मूवमेंट से जुडकर देश के सभी नागरिक स्वस्थ रह सकते हैं जिससे देश उत्तरोतर प्रगति करेगा। उन्होंने साइकिलिंग को बेस्ट एक्सरसाइज बताते हुए प्रदूषण का समाधान बताया तथा सभी उपस्थितजनों से आ ान करते हुए कहा कि 'संडे ऑन साइकिल' मूवमेंट से जुडकर प्रत्येक रविवार को साइकिलिंग करें। केंद्रीय खेल मंत्री ने अलवर सांसद खेल उत्सव की सराहना करते हुए कहा कि केंद्रीय वन मंत्री भूपेन्द्र यादव द्वारा शुरू किए गए खेलों के इस महोत्सव की गूंज नई दिल्ली तक गई है। उन्होंने कहा कि स्पोर्ट्स अर्थोरिटी (साई) की टीम के द्वारा अलवर सांसद खेल उत्सव के आयोजन के दौरान उत्कृष्ट खेल प्रतिभाओं को सर्च किया जाएगा। साथ ही चयनित खेल प्रतिभा के प्रशिक्षण सहित अन्य सभी व्यय साई द्वारा वहन किया जाएगा।

- अलवर सांसद व केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, राज्य मंत्री संजय शर्मा सहित विधायक रहे मौजूद

अलवर सांसद खेल उत्सव के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने शुभारम्भ किया ।

आम रास्ते पर अतिक्रमण को लेकर मौका कमिश्नर नियुक्त

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने श्रीमाधोपुर नगर पालिका इलाके में आम रास्ते पर अतिक्रमण से जुडे मामले में वस्तुस्थिति जानने के लिए अधिवक्ता राजेन्द्र शर्मा को मौका कमिश्नर नियुक्त किया है। अदालत ने मौका कमिश्नर को कहा है कि वह अतिक्रमण की मौजूदा स्थिति की रिपोर्ट अदालत में पेश करे। जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संजीत पुरोहित की खंडपीठ ने यह आदेश रामसिंह व अन्य की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता लक्ष्मीकांत मालपुरा ने अदालत को बताया कि मामले में अदालत ने पूर्व में स्थानीय एसडीओ को ईटीएस मशीन से रोड की माप करवाकर सडक़ सीमा में आ रहे अतिक्रमणों को हटाने के आदेश दिए थे। इसके बावजूद भी आज तक अतिक्रमण नहीं हटे हैं। इसलिए मौका कमिश्नर नियुक्त कर वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट मंगाई जाए। इस पर अदालत ने अतिक्रमण की स्थिति जानने के लिए राजेन्द्र शर्मा को मौका कमिश्नर नियुक्त किया है।

जहित याचिका में बताया गया कि स्थानीय नगर पालिका क्षेत्र में कुछ प्रभावशाली लोगों ने सार्वजनिक निर्माण विभाग और पालिका की भूमि पर अतिक्रमण कर रखे हैं। इसके बावजूद स्थानीय अफसरों की लापरवाही के कारण अतिक्रमणों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो रही है और ना ही इन्हें हटाया गया है। इन अतिक्रमणों के कारण लोग इस आम रास्ते का आवाजाही के लिए उपयोग भी नहीं कर पा रहे। इसलिए आम रास्ते पर हो रहे अतिक्रमणों को हटवाया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने अतिक्रमणों की जानकारी लेने के लिए मौका कमिश्नर नियुक्त किया है।

- अदालत ने मौका कमिश्नर को कहा कि वह अतिक्रमण की मौजूदा स्थिति की रिपोर्ट अदालत में पेश करे
- अतिक्रमणों के कारण लोग इस आम रास्ते का आवाजाही के लिए उपयोग भी नहीं कर पा रहे

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहित पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजि. पश्चिम जयपुर महानगर द्वितीय
रतनलाल साबु उर्फ रामरतन उर्फ रामू विरूद्ध विशम्भर गिरी व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र आदेश 9 नियम 9
प्रार्थना-पत्र संख्या 256/2024 सन्

नाम (1) छगन गिरी पुत्र नामालूम (2) अशोक गिरी पुत्र नामालूम पता निरंजनी अखाडा तपोनिधी चांदपोल जयपुर (3) बाबा बालक गिरी सक्सेवर ऑफ स्व. बाबा विशम्भर गिरी विधानंद जी की बगीची
उक्त प्रार्थीया ने इस न्यायलय में यह आवेदन किया है कि....
अतः अपाको चेतावनी दी जाती है कि आप आवेदन के विरुद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 01 माह 09 सन् 2025 को 10.30 AM पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो उपसंजात हो । यदि आप ऐसा करने मे असफल रहेगें तो उक्तआदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 20 माह 08 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।

मोहर अदालत — रीडर, सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट पश्चिम जयपुर महानगर द्वितीय

स्मार्ट मीटर के खिलाफ कांग्रेस ने धरना प्रदर्शन कर उपखंड कार्यालय का किया घेराव

पावटा। प्रदेश में बिगड़ती कानून-व्यवस्था, स्मार्ट बिजली मीटर का विरोध सहित नगरपालिका पावटा प्रागपुरा की सुस्त और भ्रष्ट कार्यप्रणाली एवं विभिन्न मुद्दों को लेकर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी पावटा के नेतृत्व में ब्लॉक अध्यक्ष महादेव प्रसाद की अध्यक्षता व पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर के मुख्य आतिथ्य में शुक्रवार को पावटा उपखंड मुख्यालय का घेराव करते हुए कांग्रेस ने धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर सहित कांग्रेस पदाधिकारियो एवं कार्यकर्ताओं ने भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेताओं ने भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों को उठाते हुए जबरन स्मार्ट मीटर लगाने, बिजली बिलों में बढ़ोतरी, पानी, नदी बहाव क्षेत्र में जमीनों पर अतिक्रमण, सड़क सहित कई मुद्दों पर सरकार को आड़े हाथों लिया। प्रदर्शन के बाद कांग्रेस नेताओं ने मुख्यमंत्री के नाम पावटा उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय को ज्ञापन सौंपा। धरना स्थल पर पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर ने भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि इस शासन में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि स्मार्ट मीटर के नाम पर जनता को आर्थिक नुकसान पहुंचाया जा रहा है। जनता के लिए यह मुश्किल भरा दौर चल रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि किसानों को न तो समय पर खाद-बीज मिल पा रहा है और न ही न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी दी जा रही है। उन्होंने बिजली के निजीकरण को जनविरोधी कदम बताया और कहा कि इससे केवल पूंजीपतियों को लाभ मिल रहा है। पूर्व विधायक ने आगे कहा कि आम जनता महंगी बिजली और बेरोजगारी की मार झेल रही है। प्रदेश भर में प्रीपेड स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि उपभोक्ताओं को इसकी पूर्ण जानकारी नहीं दी जा रही है। उपभोक्ताओं की सहमति के बिना जबरन मीटर लगाना लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन है। उनका आरोप है कि स्मार्ट मीटर के जरिए कंपनियां टैरिफ प्लान लागू कर महंगी दर पर बिजली बेचेंगी। इससे आम उपभोक्ताओं से लूट होगी और जनता का बिजली कंपनी से विश्वास उठता जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार की नीतियों से युवाओं को रोजगार से हटाया जा रहा है। निजी कंपनियां मनमाने तरीके से छंटनी कर रही हैं। भाजपा के राज में अफसरशाही हावी है और आमजन के विकास के काम ठप पड़े हैं। उन्होंने कहा कि आपराधिक मामले दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं, लेकिन हमारा संगठन जनता के साथ खड़ा है और हर वाजिब मांग को उच्च स्तर तक उठाएगा। धरना प्रदर्शन के दौरान पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर, सरपंच संघ जिलाध्यक्ष मेहर सिंह धनकड़सामाजिक कार्यकर्ता व जिला उपाध्यक्ष ओपी बायला, सामाजिक कार्यकर्ता महावीर चावला सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस पदाधिकारी कार्यकर्ता व ग्रामीण मौजूद रहे।

- इंद्राज गुर्जर बोले- भाजपा सरकार जनता को लूट रही, स्मार्ट मीटर से बढ़ेगा बोझ

पावटा में उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा ।

सार्वजनिक सूचना कार्यालय नगर पालिका जोबनेर जिला जयपुर
प्रारूप -5 (नियम 6(2)) क्रमांकः- न.पा.जो. / 2025-26/1582 दिनांक 28/08/25
सर्वसाधारणको सूचित किया जाता है कि नगरपालिका मण्डल जोबनेर में 69 क / स्टेट ग्रान्ट के तहत निम्न लिखित पत्रावलिया विचाराधीन है। अगर इन सम्पतीयों का निस्तारण करने में किसी को कोई आपति हो तो 7 दिवस के अन्दर मियाद अपनी आपति सबूतों सहित पालिका में दर्ज करवा सकते है। अवधि पूर्ण होने के बाद किसी भी प्रकार की आपति स्वीकार नहीं होगी व नियमानुसार अग्रीम कार्यवाही की जायेगी।
69 क/स्टेट ग्रान्ट पट्टा

क्र. स.	आवेदक का नाम मय पिता/पति	वार्ड/ कॉलोनी गली का नाम	आगे पीछे का विवरण: पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण	आवासीय/ व्यवसायिक	क्षेत्रफल (वर्गगज)
1	श्री रितेश कुमार सिंह पुत्र स्व. श्री विनोद कुमार सिंह	पावर हाउस के सामने जोबनेर	नहर	आम रास्ता	श्री विष्णु पारीक का मकान	श्री रमेश व दिनेश शर्मा का मकान	आवासीय	588.11 वर्गगज
2	श्री ईशाक मोहम्मद खान पुत्र श्री युसुफ मोहम्मद	पठानों का मोहल्ला वार्ड सं. 15 जोबनेर	मक्खु खां, मुराद खां का मकान	आम रास्ता	धीसाजी का भूखण्ड व समदद्दारम खाती का मकान	श्री लाल मोहम्मद के हिस्से का भूखण्ड	आवासीय	250.20 वर्गगज
3	श्री याकूब मोहम्मद पुत्र श्री युसुफ मोहम्मद	पठानों का मोहल्ला वार्ड सं. 15 जोबनेर	आम रास्ता	श्री टीकम चन्द अग्रवाल का मकान	मुस्लिम मदरसा	गली	आवासीय	119.22 वर्गगज
4	श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल पुत्र स्व. श्री रामलक्ष्मण अग्रवाल	वार्ड नं. 02 खाता चौक, जोबनेर	दीपक पाराशर का मकान	श्री छीतर दरोगा का मकान	आम रास्ता	मनसुख दरोगा का मकान	आवासीय	102.56 वर्गगज

अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका जोबनेर

कार्यालय नगर परिषद, जालोर (राजस्थान)
(अस्पताल चौराहा, जोधपुर रोड, जालोर-343001)
Tel.- (02973) 222270, E-mail: mbjalore24@yahoo.in

क्रमांक-नपजा/राजस्व/2025/3515 **आपत्ति विज्ञप्ति** दिनांक-13/8/2025

श्री बृज बिहारी मीना पुत्र श्री बंसी लाल मीना, जाति-मीना, निवासी-गांव मण्डावर बीच का वास, तहसील मण्डावर, जिला-दौसा ने एक भूखण्ड / मकान के नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।
उक्त भुखण्ड जालोर की आबादी भूमि रेल्वे स्टेशन के पास, नागौर कॉलोनी, जालोर में भूखण्ड आया हुआ है, जिसका पट्टा मारवाड सदर हवाला मारवाड राज. जोधपुर के समय का पट्टा नम्बर 20, मिसल नम्बर 15 द्वारा मदनसी पुत्र सुकनसीजी के नाम से जारी किया गया है। इस प्रकार श्री बृज बिहारी मीना पुत्र श्री बंसी लाल मीना का आवासीय प्लॉट का क्षेत्रफल 1250 वर्गफीट का अपने नाम से नामांतरण चाहा गया है। उक्त आवासीय प्लॉट पड़ौस एवं चतुर्सीमा निम्न प्रकार है-
उत्तर :- आम रास्ता 30 फीट चौड़ा, यह भुजा 25 फीट है।
दक्षिण:- गली, यह भुजा 25 फीट है।
पूर्व :- नथमलजी बंदारा का प्लॉट, यह भुजा 50 फीट है।
पश्चिम :- किशनसिंहजी राजपूत का प्लॉट यह भुजा 50 फीट है।
अतः सर्वसाधारण को एतद्वारा सूचित किया जाता है कि इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो उक्त सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति मय दस्तावेज साक्ष्य सहित निम्नहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात् प्रस्तुत आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी। इस प्रकरण से संबंधित प्रार्थना पत्र व संलग्न दस्तावेजों का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय के दौरान इस कार्यालय के राजस्व अनुभाग में आकर किया जा सकेगा। अवगत रहें।

आयुक्त नगर परिषद जालोर

The Rajasthan State Co-operative Bank Ltd.
DC-1, Opposite Nehru Balodyan, Tonk Road, Jaipur, Ph.: 0141-2744814

Tender Notice No. RSCB/Purchase/25-26/04
Tenders are invited on eProcurement Portal, Government of Rajasthan (https://eproc.rajasthan.gov.in) from eligible bidders for following:-
1. RFP for empanelment of Supply, Installation, Testing & Commissioning (SITC) SMF Type Batteries for UPS installed in Head Office and Branches in entire Rajasthan.
2. Request for proposal for Supply of LTO-9 tapes (Backup Cartridge & Cleaning tape with barcode labels) for IBM TS4300 Tape Library.
Tentative Schedule for tenders:-

S. No.	Events Particulars	Date & Time for Battery tender	Date & Time for LTO tender
1.	Start date and time of download of e- bid	30.08.2025, 10.00 AM	28.08.2025, 10.00 AM
2.	Last date and time of download of e-bid	08.09.2025, 5.00 PM	06.09.2025, 5.00 PM
3.	Last Date of submission of e-bid with Bid security	08.09.2025, 5.00 PM	06.09.2025, 5.00 PM
4.	Opening of Technical bid/e-bid	09.09.2025, 11.30 AM	08.09.2025, 11.30 AM
5.	Websites where tender is available	https://eproc.rajasthan.gov.in https://rscb.org.in, https://sppp.rajasthan.gov.in	

GM (P&D) & Convener

पिस्तौल के दम पर जयपुर-दिल्ली हाईवे पर लूटपाट करने वाले छह बदमाश दबोचे

ट्रक चालकों को रुकवाकर मारपीट व ड्राईवर का अपहरण कर वारदात अंजाम देता था गिरोह

जयपुर (कासं)। विश्वकर्मा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए जयपुर-दिल्ली हाईवे पर लूटपाट करने वाले छह बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इन बदमाशों ने ट्रक को साइड में दबाकर रुकवाया था और फिर चालक का अपहरण कर मारपीट कर पिस्तौल के दम पर लूट की वारदात कर भाग गए थे। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से अवैध हथियार व वारदात में प्रयुक्त ट्रक व बाइक सहित फेक नंबर प्लेट जब्त की है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) हनुमान प्रसाद ने बताया कि विश्वकर्मा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए जयपुर-दिल्ली हाईवे पर लूटपाट करने वाले बदमाश अमित चौधरी (18) निवासी नदबई भरतपुर हाल श्रीनिवास नगर मुरलीपुरा, प्रभात सैनी (18) निवासी नदबई भरतपुर, रूपेश शर्मा उर्फ ओपी (24) निवासी नदबई भरतपुर हाल श्रीनिवास नगर मुरलीपुरा, हरिओम चौधरी (20) निवासी एमआईए अलवर, विष्णु सैनी (24) निवासी कठूमर अलवर और रवि कुमार जाटव (22) निवासी उद्योग नगर अलवर को गिरफ्तार किया है। वहीं पकड़े गए बदमाश अमित चौधरी, प्रभात सैनी और रूपेश के खिलाफ पूर्व में भी कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस ने गिरफ्तार

विश्वकर्मा थाना पुलिस ने जयपुर-दिल्ली हाईवे पर लूटपाट करने वाले छह बदमाशों को गिरफ्तार किया।

आरोपियों के कब्जे से वारदात में प्रयुक्त ट्रक व बाइक जब्त की है। इसमें ट्रक की फेक नंबर प्लेट,बाइक की 5 फेक नंबर प्लेट व लूटा गया माल मिला है।

थानाधिकारी रविन्द्र सिंह नरूका ने बताया कि 16 अगस्त की रात को ट्रक ड्राइवर कन्हैया दास के साथ वारदात हुई थी। जो विश्वकर्मा जयपुर से वह कंपनी का कूरियर माल भरकर दिल्ली जाने के लिए निकला था। दिल्ली-जयपुर हाईवे पर चढ़ते ही ओपन बॉडी ट्रक ने साइड

■ पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से अवैध हथियार व वारदात में प्रयुक्त ट्रक व बाइक सहित फेक नंबर प्लेट जब्त की है।

दबाकर भगवती नर्सरी के पास रोक लिया। ओपन बॉडी ट्रक में से चार-पांच बदमाश उतरकर आए। मेरे ट्रक के केबिन में चढ़कर मारपीट की। पिस्तौल दिखाकर खलासी साइड में पटक दिया और चालक का अपहरण कर ट्रक को बदमाश चलाकर सर्विस रोड पर वनपाल ऑफिस के पास ले गए। मारपीट कर मोबाइल, पर्स, डेबिट कार्ड, ट्रक स्टेपनी और तेरह कार्टन कूरियर के लूटकर ले गए। सूचना मिलने पर पुलिस टीम ने हाईवे पर बदमाशों को पकड़ने के लिए सीसीटीवी फुटेजों को खंगाला।

फुटेज के आधार पर बदमाशों के बाइक से रेकी करने का फुटेज मिला। फुटेज के आधार पर पुलिस टीम ने बदमाशों की तलाश शुरू की। मुखबिर से सूचना मिली कि बदमाश लूटे गए माल बढ़ारणा तलाई विश्वकर्मा के पास बेचने की फिराक में घूम रहे है। पुलिस ने घेराबंदी कर संदिग्ध बदमाशों को धर-दबोचा।

राज्यपाल से ब्राजील के राजदूत केनेथ फेलिक्स हैकिंस्की दा नोब्रेगा की भेंट

राज्य और राष्ट्र विकास से जुड़े मुद्दों पर किया संवाद

जयपुर । राज्यपाल हरिभाऊ बागडे से शुक्रवार को भारत में ब्राजील के राजदूत केनेथ फेलिक्स हैकिंस्की दा नोब्रेगा ने राजभवन पहुंचकर मुलाकात की। राज्यपाल से उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी। इस दौरान उन्होंने राज्यपाल को ब्राजील में कृषि से जुड़े उत्पादों, वहां के जीवन और लोगों के बारे जानकारी दी।

राज्यपाल बागडे ने ब्राजील के कृषि-व्यवसाय के बारे में विशेष जानकारी ली और भारत में प्राकृतिक खेती के बारे में किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। राज्यपाल ने कहा कि राजस्थान कृषि, सहकारिता और डेयरी क्षेत्र के साथ विभिन्न अन्य क्षेत्रों में तेजी से विकास कर रहा है। उन्होंने राजस्थान और देश के विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर भी संवाद किया। ब्राजील के राजदूत केनेथ फेलिक्स हैकिंस्की दा नोब्रेगा ने बताया कि कृषि ब्राजील के सकल घरेलू उत्पाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सोयाबीन, कॉफी, चीनी आदि उत्पादों में ब्राजील अपने घरेलू खपत व निर्यात दोनों में विश्वभर में अग्रणी है। राज्यपाल बागडे ने राजस्थान के मोटे अनाज और उनकी पोषण गुणवत्ता के बारे में विशेष रूप से जानकारी दी। ब्राजील के राजदूत से अनौपचारिक संवाद में उन्होंने वैश्विक स्वास्थ्य, कृषि और अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में भारत को अग्रणी किए जाने, साझा प्रयासों पर भी

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे से शुक्रवार को भारत में ब्राजील के राजदूत केनेथ फेलिक्स हैकिंस्की दा नोब्रेगा ने राजभवन में मुलाकात की।

विमर्श किया। राज्यपाल बागडे ने ब्राजील में एथेनॉल और बायो उर्वरकों के बारे में विशेष रूप से संवाद किया।

इस दौरान ब्राजील की शहरी और ग्रामीण आबादी, उनकी आजीविका आदि विषयों पर भी विशेष रूप से संवाद हुआ। आरंभ में राज्यपाल बागडे ने राजदूत का राजभवन आगमन पर अभिनंदन किया। राज्यपाल के सचिव डॉ. पृथ्वी भी इस दौरान मौजूद रहे।

बारिश में पाइप डालने का कार्य सुविधा के बजाय मुसीबत बना

जयपुर । जगतपुरा रोड स्थित मॉडल टाउन में मानसूनी बारिश के बीच पिछले कई दिनों से पेयजल के लिए सड़क किनारे डाली जा रही पाइप लाइन स्थानीय वाशिंदों के लिए सुविधा के स्थान पर मुसीबत बन गई है। शुक्रवार को हुई तेज बारिश में नालियों में मिट्टी का भराव सही नहीं होने से घरों के सामने बड़े-बड़े खड्डे हो गए। इससे वहां खड़ी कुछ गाड़ियां भ्झी खड्डों में चली गई। कुछ लोग हाथों में फावड़े आदि लेकर बरसात में भीगते हुए बचाव के जतन में जुट गये। खड्डों में पैर फिसलने से कुछ लोग चोटिल भी हो गए। शासन सचिवालय में सहायक शासन सचिव संजय गुप्ता ने बारिश में पाइप लाइन डालने से हुए खड्डों से अपनी चौपहिया गाड़ी निकालने के लिए अपने खर्चे पर क्रेन मंगवाई। मॉडल टाउन के निवासी वरिष्ठ पत्रकार बाल मुकुंद ओझा ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराने का प्रयास किया मगर वहां से कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। एक अन्य नागरिक प्राण भटनागर ने स्थानीय पार्षद को सूचना दी। ओझा ने बताया पार्षद के यहाँ बात करने पर पार्षद प्रतिनिधि शंकर मीणा ने कहा कुछ लोग यह काम रुकवाने का प्रयास कर

गड्ढों में फंसी कार को निकालने की कोशिश करते स्थानीय लोग

रहे है। पाइप लाइन डालने वाले ठेकेदार और इंजीनियर को भी दुर्घटना के अंदेशों से अवगत कराया गया। बारिश के दौरान पाइप के लिए खड्डे और नाली खोदने पर सरकारी रोक का किसी जिम्मेदार ने कोई संतोषजनक जवाब नही दिया। समूचे मॉडल टाउन में पाइप डालने का कार्य बदस्तूर जारी है। बारिश के दौरान मिट्टी बह जाने से हुए खड्डों में दो पहिया वाहन भी फिसल रहे है।

ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक की मौत

जयपुर । सांगानेर थाना इलाके में ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। युवक का शव पटरियों पर पड़ा मिला है और सिर फटने के साथ ही शव पर रगड़ के निशान हैं। सूचना मिलने पर जीआरपी थाना पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के लिए शव को एसएमएस अस्पताल अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। पुलिस मृतक की पहचान के प्रयास कर रही है। पुलिस ने बताया कि हादसा सांगानेर रेलवे स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पर हुआ। जहां एक युवक का शव रेलवे ट्रैक पर पड़ा मिला। लाश पड़े होने का पता चलने पर लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। स्टेशन मास्टर की सूचना पर जीआरपी थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मौका-मुआयना कर सबूत जुटाए।पुलिस प्रथम दृष्टया जांच में ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत होना सामने आया। ट्रेन की टक्कर से उसका सिर फूट गया था और शरीर पर जगह-जगह रगड़ के निशान थे। पुलिस ने मृतक की पहचान के प्रयास किए, लेकिन शिनाख्त नहीं हुई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए एसएमएस अस्पताल अस्पताल की मोर्चरी में भिजवाया। पुलिस का कहना है कि मृतक की उम्र तीस वर्ष की है।

धोखाधड़ी के मामले में पिछले 5 साल से फरार मां-बेटा गिरफ्तार

आरोपियों ने एक ही प्रॉपर्टी के दस्तावेज पर फर्जी तरीके से कई फाइनेंस कंपनियों और बैंकों से उठा रखा था मोटा ऋण

जयपुर (कासं)। विधायकपुरी थाना पुलिस और साइबर सेल जयपुर दक्षिण ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए धोखाधडी के मामले में पिछले पांच साल से फरार चल रहे आठ हजार रुपये के इनामी आरोपित महिला और उसके बेटे को गुरूग्राम से गिरफ्तार किया है।

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपियों के खिलाफ विभिन्न न्यायालयों में उनके नाम से जारी छह स्थाई वांरटों को निस्तारण भी किया गया। आरोपियों ने एक ही प्रॉपर्टी के दस्तावेज पर फर्जी तरीके से कई फाइनेंस कंपनियों और बैंकों से मोटा ऋण उठा रखा था।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि विधायकपुरी थाना पुलिस और साइबर सेल जयपुर दक्षिण ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए धोखाधडी के मामले में पिछले पांच साल से फरार चल रहे आठ हजार रुपये के इनामी आरोपित 57 वर्षीय महिला आशा गुप्ता और उसके बेटे 33 वर्षीय सुरेश गुप्ता को निवासी चांदपोल बाजार जयपुर को गुरुग्राम से गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित महिला आशा गुप्ता के खिलाफ कोतवाली, आदर्श नगर, महेश नगर एवं विधायकपुरी के विभिन्न छह मामलों में वांछित है और इन मामलों में न्यायालय द्वारा स्टैंडिंग वारंट जारी किये हुए है।आरोपित महिला की दस्तयाबी के बाद सभी वांरटों का निस्तारण किया गया। आरोपितों के

गिरफ्तार आरोपी मां-बेटा (बीच में)

विभिन्न न्यायालयों से धारा 138 एनआई एक्ट के स्थाई गिरफ्तारी वारंट पेंडिंग होने की पूर्ण संभावना है।

उपनिरीक्षक पुलिस थाना विधायकपुरी (टीम प्रभारी) रविना हदावत, पुलिस हेड कांस्टेबल झाबरमल हैड (विधायकपुरी), तकनीकी शाखा जयपुर (दक्षिण) पुलिस हेड कांस्टेबल लोकेश कुमार,कांस्टेबल मुकेश कुमार,अनुज कुमार, विक्रम सिंह और हंसराज (विधायकपुरी) की विशेष भूमिका रही।

सार-समाचार

बेटियों के लिए प्रोजेक्ट विजेता लॉन्च

जयपुर । प्रिंसेस दिया कुमारी फाउंडेशन (पीडीकेएफ) द्वारा जयपुर स्थित आर्यन्स स्पोर्ट्स स्कूल के सहयोग से बादल महल में आज प्रोजेक्ट विजेता का शुभारंभ किया गया। प्रिंसेस गौरवी कुमारी के नेतृत्व में परिकल्पित और शुरु किए गए इस प्रोजेक्ट के तहत 15 लड़कियों को जिमनास्टिक्स, फेंसिंग और जूडो के खेल में एक साल तक प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और मेंटरशिप प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर पीडीकेएफ की जनरल सेक्रेटरी, प्रिंसेस गौरवी कुमारी ने कहा "पीडीकेएफ द्वारा शुरु प्रोजेक्ट विजेता का उद्देश्य लड़कियों को स्पोर्ट्स के माध्यम से अपनी शक्ति और संभावनाओं को पहचानने के लिए सशक्त बनाना है। राजस्थान की बेटियों में अपार प्रतिभा है, लेकिन सभी को इसे आगे बढ़ाने का मौका नहीं मिलता। इस पहल के माध्यम से हम उन्हें वह मंच प्रदान करेंगे, जिससे वे अपने सपने हासिल कर सकें।" राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में इस प्रोजेक्ट लॉन्च के अवसर पर एम्पावरिंग गर्ल्स थ्रू स्पोर्ट्स विषय पर एक प्रेरणादायक पैनल चर्चा का भी आयोजन किया गया। चर्चा में खेल जगत की दो प्रतिष्ठित हस्तियों एशियाई खेलों की पदक विजेता और राष्ट्रीय चैंपियन (हैमर थ्रो), मंजू बाला और अंतरराष्ट्रीय पैरा-एथलीट और व्हीलिंग हैपिनेस फाउंडेशन की सह-संस्थापक, देविका मलिक ने अपने विचार साझा किए।

प्री-शिक्षा शास्त्री टेस्ट के आवेदन 18 तक

जयपुर । जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय ने प्री-शिक्षाशास्त्री, प्री-शास्त्री-शिक्षाशास्त्री (चार वर्षीय) एवं प्री-शिक्षाचार्य हेतु प्रवेश कार्यक्रम घोषित कर दिया है। कुलसचिव नरेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सत्र 2025-26 में द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बीएड), चारवर्षीय इंटीग्रेटेड शास्त्री-शिक्षाशास्त्री (बीए-बीएड) एवं शिक्षाचार्य (एमएड) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु राज्य सरकार एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के नियमानुसार प्रवेश परीक्षा (प्री-टेस्ट) होगी। शिक्षा शास्त्री में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी 29 अगस्त से ऑनलाईन आवेदन कर सकते हैं। वर्मा ने बताया कि द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में कला संकाय के किसी भी विषय में स्नातक अभ्यर्थी आवेदन कर सकेंगे। चारवर्षीय इंटीग्रेटेड शास्त्री-शिक्षाशास्त्री (बीए-बीएड) में सीनियर और वरिष्ठ उपाध्याय उत्तीर्ण अभ्यर्थी आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर 29 अगस्त से उपलब्ध है। आवेदन 18 सितंबर किए जा सकेंगे।

ग्रेटर निगम में वित्त समिति की बैठक

जयपुर । नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय के ई.सी. मीटिंग हॉल में शुक्रवार को वित्त समिति अध्यक्ष शील धाभाई की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विभिन्न एजेण्डों पर चर्चा की गई। जिसके अन्तर्गत् आवंटित निधियों से अधिक व्यय के नियमितीकरण के संबंध में, एनकैप योजना अंतर्गत स्वीकृत 7 कार्यों का बजट मद बदलने के संबंध में नगर निगम ग्रेटर जयपुर द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम, सेमीनार, समारोह, उत्सव, पर्व, शिविर, अभियान, रैन बसेरे व अन्य कार्यक्रम हेतु टेन्ट सामान किराये पर उपलब्ध कराने हेतु, द्वारिकादास पार्क में सौन्दर्यीकरण का कार्य सहित अन्य एजेण्डे भी रखे गए जिन्हें समिति के सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में चेयरमैन एवं पार्षद लक्ष्मण नूनीवाल, डॉ. मीनाक्षी शर्मा, सुमन गुप्ता राजवंशी, अक्षत खूँटेटा, बाबूलाल शर्मा, वित्तीय सलाहकार, अधीक्षण अभियन्ता गैराज, राजस्व मुख्यालय मौजूद रहे।

शास्त्री कोसलेंद्रदास को दो विशिष्ट सम्मान

जयपुर । ऋषिपंचमी पर शास्त्री कोसलेंद्रदास को दो प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया गया। जयपुर स्थित विश्वगुरु दीप आश्रम में महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी ने उन्हें पंडित सूरजनदास स्वामी दर्शन दिवाकर सम्मान प्रदान किया। वहीं, आस्था सांस्कृतिक संस्था द्वारा आयोजित समारोह में महन्त हरिशंकरदास महाराज एवं चेतन व्यास ने उन्हें पंडित कन्हैयालाल नैयायिक सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर शास्त्री कोसलेंद्रदास ने कहा कि ये सम्मान केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं हैं, बल्कि गुरुओं के आशीर्वाद और समाज की शुभेच्छाओं का प्रतिफल हैं। उन्होंने कहा कि ये सम्मान उन्हें और अधिक समर्पण के साथ समाज एवं संस्कृति की सेवा करने की प्रेरणा देंगे। जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे ने इस पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

जमवाय माता की 14वीं पदयात्रा कल

जयपुर । माँ जमवाय सेवा समिति के तत्वावधान में जमवाय माता की विशाल चौदहवीं पदयात्रा 30 अगस्त (शनिवार) को कुबेर नगर,गांधी पथ पश्चिम स्थित रघुनाथ मंदिर से रवाना होगी। समिति संरक्षक जय सिंह समर्थपुरा ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी यह यात्रा शनिवार को प्रातः 7:30 बजे लाल ध्वजाओं, शाही लवाजमे,जयकारों ,चिरजाओ और बैंड-बाजे के साथ निकलेगी। समिति अध्यक्ष मदन सिंह खंगारोत के अनुसार दो दिवसीय यह यात्रा जयपुर के अनेकों मार्गों से होती हुई जमवारामगढ़ स्थित कच्छावा वंश की कुलदेवी जमवाय माता मंदिर 31 अगस्त को पहुंचेगी। समिति के महामंत्री मनोहर सिंह पण्दो ने बताया कि इस यात्रा का माता के भक्तों द्वारा अनेकों स्थान पर स्वागत और सेवा की व्यवस्था की जाती है। भक्तगण माता के भजनों का आनंद लेते हुए दर्शनार्थ यात्रा में भाग लेते हैं और सभी के कल्याण की कामना करते है।

दस्तावेजों का सत्यापन एक सितम्बर से शुरू होगा

जयपुर । कनिष्ठ अभियंता (कृषि) संयुक्त सीधी भर्ती - 2024 के राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा 165 पदों की सीधी भर्ती हेतु 350 अभ्यर्थियों को पात्रता जांच एवं दस्तावेज सत्यापन हेतु सूचीबद्ध किया गया है।

इन पदों हेतु सूचीबद्ध अभ्यर्थियों की 1 से 5 सितंबर 2025 तक पात्रता की जांच एवं दस्तावेज सत्यापन का कार्य कृषि विभाग द्वारा पटेल भवन, एच सी एम रीपा, ओटीएस, जे एल एन मार्ग, जयपुर में किया जायेगा। अपरिहार्य कारणों से अनुपस्थित अभ्यर्थियों के दस्तावेज सत्यापन 6 सितंबर 2025 को किया जायेगा।

दस्तावेज सत्यापन हेतु उपस्थित होने से पूर्व अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन सह परीनिरीक्षा फॉर्म भरना सुनिश्चित करें, इसके लिए दिनांक 30 अगस्त से 03 सितंबर तक लिंक खोला जाएगा । अभ्यर्थी पात्रता जांच एवं दस्तावेज सत्यापन हेतु दिनांकवार एवं रोल नम्बरवार विस्तृत सूचना कृषि विभाग की वेबसाइट पर देख सकते हैं।

जयपुर-आगरा हाईवे पर डकैती डालने वाले गिरफ्तार

जयपुर । बस्सी थाना पुलिस ने जयपुर -आगरा हाईवे पर डकैती डालने वाली वारदात का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के पांच डकैतों को गिराफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस डकैतों के पास से वारदात के काम में ली जाने वाली दो कारों को भी जब्त किया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि स्सी थाना पुलिस ने जयपुर -आगरा हाईवे पर डकैती डालने वाली वारदात का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के शातिर बदमाश पूरण प्रजापत (21) निवासी राजावतान,दौसा , रतन लाल मीणा (20), दीपक मीणा (20), निवासी नांगल राजावतान, सूरज राणा (20) निवासी कानोता व दीपक शर्मा (26) निवासी दौसा को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस

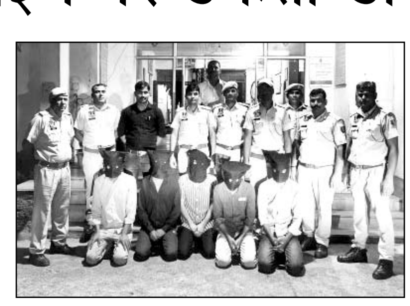

बस्सी पुलिस ने पांच डकैत गिरफ्तार किए।

आरोपियों से अन्य लूट की वारदात के बारे में गहनता से पूछताछ करने में जुटी है। संभावना जताई जा रहीं है गिरफ्तार आरोपियों ने लूट की कई वारदात खुल सकती है। गौरतलब है कि 18 अगस्त को परिवादी उमराव सिंह गुर्जर ने मामला दर्ज करवाया था कि वह ट्रांसपोर्ट नगर में अपने घर जाने के लिए रास्ते में खड़ा था। तभी एक स्वीफ्ट कार उसके पास आकर रुकी और कार चालक ने बासखोह स्टेशन छोड़ने के बदले 50 रुपये किराया मांगा। इस पर पीड़ित कार में बैठ गया और बैनाड़ा मोड़ के पास आरोपितों ने घर से स्टेपनी का झांसा देकर कार बैनाड़ा मोड की तरफ ले गया। बैनाड़ा मोड से अंदर जाने के बाद सुनसान जगह पर बदमाश ने कार रोकी और उसमें पहले से मौजूद तीन चार जनों ने डंडे-लकड़ी से मारना शुरु कर दिया। बदमाशों ने मारपीट करते हुए पीड़ित के 20 हजार रुपए छीन लिए और गले में पहनी सोने की चैन छीन ली। पुलिस ने मामला दर्ज कर विशेष टीम का गठन कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों को चिन्हित करते हुए पकड़ा है।

मेयर डॉ. सौम्या ने अफसरों से कार्यकारिणी समिति के निर्णयों की पालना रिपोर्ट मांगी

10 दिन बाद पुनः बैठक होगी, जिसमें तमाम बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा होगी

जयपुर (कासं)। ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने शुक्रवार को अधिकारियों की बैठक लेकर अब तक आयोजित हो चुकी कार्यकारिणी समिति की बैठकों में लिए गए तमाम निर्णयों की पालना रिपोर्ट की समीक्षा की। महापौर ने निर्देश दिए कि आगामी 10 दिन में फिर से बैठक होगी। जिसमें विभिन्न बिंदुओं की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की जाएगी। बैठक में

■ फायर एन.ओ.सी. तथा पट्टों के लंबित प्रकरणों पर जल्द से जल्द निर्णय कर पात्र लोगों को राहत पहुंचाने के निर्देश

आयुक्त डॉ. गौरव सैनी, जोन एवं मुख्यालय के उपायुक्त मौजूद रहे।

महापौर ने सख्त लहज़े में कहा कि आमजन हित सर्वोपरि है, इसलिए आमजन के हितों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। महापौर ने बैठक में कार्यकारिणी समिति में लिये गये निर्णयों की पालना के संबंध में संबंधित अधिकारियों से जानकारी ली तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। महापौर ने मीट की दुकानों पर 7 दिन में हलाल व झटका नाम

ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने शुक्रवार को अधिकारियों की बैठक लेकर कार्यकारिणी समिति के निर्णयों की पालना पर चर्चा की। इस दौरान आयुक्त डॉ. गौरव सैनी मौजूद थे।

अंकित करने के निर्देश दिए। साथ ही मीट की दुकानें रिहायशी क्षेत्र में न हो। अवैध मीट-माँस की दुकानों को हटाने के संबंध में कार्रवाई करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारी को दिए। इसके साथ ही महापौर ने अब तक जारी हुई फायर एनओसी के संबंध में भी जानकारी ली तथा जोन स्तर पर शिविर लगाकर पात्र आवेदकों को फायर एनओसी दिए जाने के भी निर्देश दिए तथा फायर एनओसी के संबंध में सर्वे कराने के साथ-साथ पट्टों के लंबित प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए।

महापौर ने कहा कि जनहित से जुड़े हुए कार्यों को प्राथमिकता के साथ किया जाना चाहिए। इसके लिए जोन स्तर पर लंबित मामलों को शीघ्रता के साथ निपटाया जाना चाहिए।

नीट यूजी-2025 की स्टेट कोटे की सीट आवंटन में देवें ओबीसी नॉन क्रीमी लेयर श्रेणी का लाभ

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने नीट यूजी 2025 की स्टेट कोटे की सीटों के आवंटन से जुडे मामले में ओबीसी नॉन क्रीमी लेयर अभ्यर्थियों को इस श्रेणी का लाभ देने को कहा है। वहीं अदालत ने गुर्जर समुदाय से जुडी याचिकाकर्ता अभ्यर्थी को इस श्रेणी के तहत काउंसलिंग में शामिल करने के आदेश दिए हैं। इसके साथ ही अदालत ने मामले में केन्द्र सरकार, नेशनल टेस्टिंग एजेंसी और नीट यूजी चेयरमैन सहित अन्य से जवाब तलब किया है। जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संजीत पुरोहित की खंडपीठ ने यह आदेश प्रज्ञा सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रेखा कुमारी गुप्ता ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता गुर्जर समुदाय की है और प्रदेश में ओबीसी नॉन क्रीमी लेयर श्रेणी में आती है। वहीं केन्द्रीय सूची में इस श्रेणी को सामान्य वर्ग में माना गया है। याचिका में कहा गया कि नीट यूजी, 2025 के सूचना

■ अदालत ने केन्द्र सरकार, नेशनल टेस्टिंग एजेंसी और नीट यूजी चेयरमैन सहित अन्य से जवाब तलब किया

बुलेटिन में कहा गया है कि जो अभ्यर्थी राज्य की सूची के तहत ओबीसी नॉन क्रीमी लेयर में आते हैं, लेकिन केन्द्रीय सूची में इस श्रेणी में नहीं है, उन्हें सामान्य वर्ग में ही माना जाएगा। इसके चलते याचिकाकर्ता को जबरन सामान्य वर्ग के माना गया।

याचिका में कहा गया कि ओबीसी क्रीमी लेयर वर्ग की कट ऑफ से अधिक अंकों के बावजूद इस श्रेणी की काउंसलिंग में शामिल नहीं किया जा रहा है। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता को ओबीसी नॉन क्रीमी लेयर श्रेणी में शामिल करने के निर्देश देते हुए अन्य समान अभ्यर्थियों को भी इस श्रेणी का लाभ देने को कहा है।

Beach Vibes and Eco Pride

Celebrated every year on August 30, National Beach Day is a tribute to the natural beauty and serenity of our coastlines. It's a day to soak up the sun, enjoy the waves, and reflect on the importance of keeping beaches clean and protected. Whether it's building sandcastles, taking a long walk on the shore, or participating in beach cleanups, the day encourages everyone to appreciate these vital ecosystems and preserve them for future generations. So, grab your sunscreen, gather your friends, and head to the nearest beach to celebrate responsibly!

#ICONS

The Amul Girl

India's Sassiest Storyteller with a Butterly Twist!

In a country where brands come and go with fleeting trends, one little girl in a red polka-dotted frock has stood the test of time, not just as a mascot, but as a cultural icon. The Amul Girl, with her wide-eyed charm and razor-sharp wit, is far more than a marketing gimmick, she is arguably India's sassiest and most consistent storyteller.

A Baby, A Brand, A Beginning

It all began in 1966, when ten-month-old Shobha Tharoor, baby sister of author and politician Dr. Shashi Tharoor, became the face of a campaign for Amul Spray, a popular milk powder product. Her cherubic, impish face, captured for the camera, struck a chord with early Indian consumers, unknowingly giving birth to a character that would become one of the most enduring icons in Indian advertising.

What started as a one-off baby shoot evolved into a phenomenon. The character soon morphed into the now-iconic cartoon girl with blue hair, a red polka-dot dress, and a witty tongue that speaks to the pulse of the nation. Over the decades, she has grown, not in age, but in cultural relevance.

'Butterly' Brilliant Branding

It was a simple pun that became marketing gold: 'Utterly Butterly Delicious.' Quirky, playful, and instantly memorable, the phrase became synonymous with Amul's dairy products, and paved the way for a new kind of advertising in India: one that was humourous, topical, and deeply local. The Amul Girl became the face of public opinion, offering wry, timely commentary on everything from politics and cricket to Bollywood blockbusters and global events. With each new hoarding, she poked fun at scandals, paid tribute to legends, and captured the nation's sentiment, all in a few witty lines and a spoonful of satire.

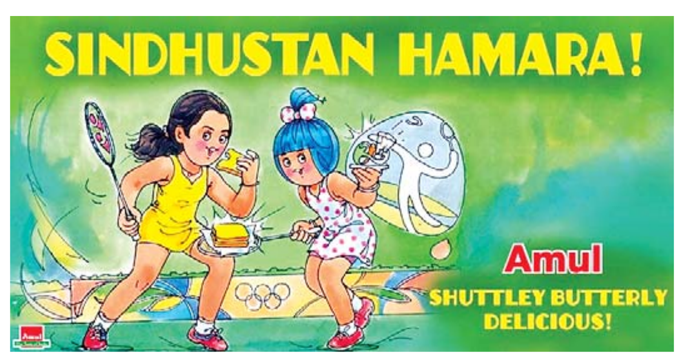

A Mirror to the Nation

From poking fun at power outages and petrol hikes to honouring heroes like M.S. Dhoni and Lata Mangeshkar, the Amul Girl doesn't miss a beat. She's been there during elections, Olympic wins, movie releases, and even during the pandemic, reminding people to 'Stay Home, Stay Safe, Eat Butter.' Her commentary is uniquely Indian, often bilingual, filled with puns, and always topical. She has spoken up without speaking down, using humour to bring attention to serious issues without ever sounding preachy.

More Than Butter

What makes the Amul Girl exceptional isn't just her marketing brilliance. It's that she's woven into the emotional fabric of Indian society. She's been in our lives longer than most influencers or politicians. For many, seeing her weekly billboard is a nostalgic ritual, like opening the newspaper or sipping morning chai.

In an ever-changing digital world, where attention spans are shrinking and ads are skipped in seconds, the Amul Girl stands tall, painted by hand, published in print, and celebrated online. Because she doesn't just sell butter, she sells wit, warmth, nostalgia, and a sense of belonging. She tells India's story, one pun at a time.

A Home In Time

On Sunday mornings, I'd accompany Janardhan, our gentle and watchful household helper, on a walk past Bagadiya Bhawan, a landmark haveli on Prithviraj Road. The destination was always the same: the jalebi wala. But my true addiction was boondi ladoo from Rashtriya Misthan Bhandar in Kishanpole Bazar. The biscuits from Bhartiya Bakery, behind Ajayab Ghar in Kishanpole Bazaar, faintly salty, faintly sweet, remain undefeated in taste and time.

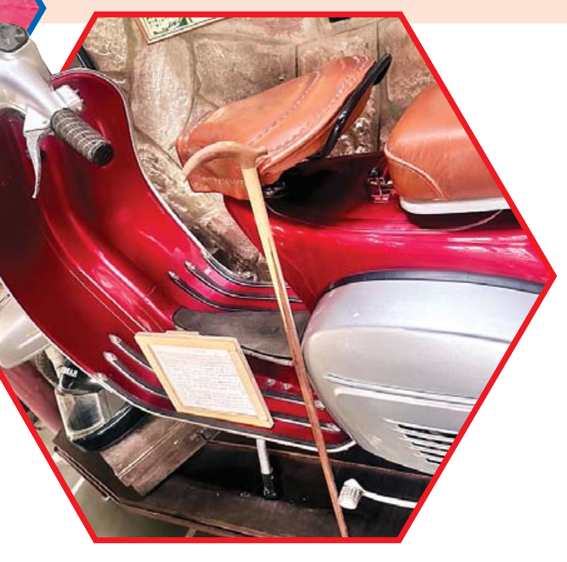

1974 Fiat. A prized possession in the driveway of the family home. The spotlight at a family wedding.

Pushpendra Bhargava

Pushpendra Wing Commander R N bhargava Sandeep at JaipurInn in its formative years.

#THE HISTORIAN OF EMOTIONS

My grandfather's house was a world shaped by ritual, care, and quiet precision, a house that held time. On the right, adjacent to the French wooden door, just past the curved verandah with its mosaic cement pillars, stood his period chair, easy, upright, immovable. Beside it, a sleek writing table and a leather-upholstered chair, placed with intention, formed the command center of his daily rhythm.

In the far-left corner stood the sliding wardrobe, its doors gliding open to reveal white shirts and tailored trousers, always arranged in disciplined order. From a cupboard nearby, what we secretly called Aladdin's storehouse, came the daily treats: mouth-watering shakkarpara or rich, ghee-soaked laddoos, served like clockwork after meals of garden-fresh vegetables.

Books and homeopathy bottles lined a glass-paneled cupboard, each tiny vial labeled in a script I learned before I could read. The four-poster bed wasn't just for rest, it was designed for the nightly ritual of raising the masari (mosquito net), an act as precise as a military drill. All the wood was polished Sagwan (teak), gleaming like the heritage it held. The black rotary dial phone sat on a wooden box in which many secrets rested, covered with the same blue cloth, year after year. Its black-cloth-wrapped wire plugged into the wall was sacred, never to be touched. A loose connection was sacrilege. That phone was a chronicle of time: its number began as a simple 197, then 77197, 68197, 368197, and finally, 2368197, as if each added digit marked Jaipur's growing footprint.

Beside the chair, the thick, fat Indian Telephone Directory stood like a book of spells. Above the writing table hung a white round-dial electric clock, wired on the board with the 'khatke,' those heavy ceramic switches, clicking with authority.

This was not just a house. It was a living memory palace. Every object had a place, and every place held a story. Time here didn't just pass, it was arranged, labeled, and quietly preserved.

Grandparents with the family.

Garden, Gate, and the City Beyond

In the Jaipur of the early 1970s, our home's open layout mirrored a slower, gentler city. The low boundary walls were just high enough to separate privacy from passerby, lined with fruit-bearing creepers and flowering vines. Nothing was ornamental. Everything had a purpose.

At the front stood my grandfather's rose garden, his private kingdom. He tended it with the same precision he applied to his shirts and books. Each rose responded to his attention, and none of us dared pluck a bloom. Even a bent stem didn't escape his notice. I often ate lunch on my feet, moving between bushes and trees, plucking what I could with a child's mix of curiosity and stealth. The carrots, especially, were suspect. I'd pull one and glance around, unsure if it had been counted. Even theft had its ethics.

Then, there was the well-capped with a grill of iron bars. I would peer in and see not just water, but a version of myself suspended below, flickering and still. The mystery of that well, its perfect symmetry, its silent gaze, it was a kind of mirror I still carry in my mind.

On Sunday mornings, I'd accompany Janardhan, our gentle and watchful household helper, on a walk past Bagadiya Bhawan, a landmark haveli on Prithviraj Road. The destination was always the same: the jalebi wala. But my true addiction was boondi ladoo from Rashtriya Misthan Bhandar in Kishanpole Bazar. The biscuits from Bhartiya Bakery, behind Ajayab Ghar in Kishanpole Bazaar, faintly salty, faintly sweet, remain undefeated in taste and time.

In those days, the garden fed us. The streets introduced us to pleasure and pattern. Jaipur itself seemed like an extension of our home: edible, walkable, knowable. And somehow, despite everything that has changed, part of it still feels that way.

The Houses Lived In Within The City

Newly wedded Nephew, his wife and Reetika.

Many houses inhabited before settling into O-17 Malviya Marg, Ashok Nagar, C-Scheme, namely on hospital road where Dr. S R Mehta lived before he eventually moved into 5 Hospital Road. Near the Power House adjacent to Ram Mandir from where the first bout of electricity was introduced in Jaipur by the Maharaja Jaipur and Sir Mirza Ismail as the State electricity board. The Laxmi Vilas was the Royal Horses Stables before it turned to the State Motor Garage, and finally, now the Gandhi Museum. The beautiful art deco home visible from the street bordering the Raj Mahal palace premises which belongs to Maharaj Jai Singh.

Grandfather with the President Dr S Radhakrishnan at my parents wedding reception which was held at the Rastrapati Bhawan.

People Who Passed Through

In those years, Jaipur didn't feel like a city, it felt like a large, extended household. Our home mirrored that rhythm: a house with open doors, ready chairs, and a memory for names.

Nearly a hundred members of our extended family were rooted in its rooms. It hosted ten weddings, countless cups of tea, and conversations that flowed without formality.

Among the many who passed through were figures who shaped the state's early years: Mr. Chandan Mal Baid, Rajasthan's former Finance Minister; Mr. Mathuradas Mathur, who served as Health and Education Minister in Marwar's first government; Mr. Kali Charan, whose family produced generations of doctors; and Mrs. and Mr. Katju, relatives of Indira Gandhi.

My grandfather often drove to New Colony near Panch Batti in his gleaming Fiat car, for bridge games with Mr. Shankar Sahay and friends. Jaipur's civic life played itself out not in offices, but over four suits and one shared table.

The iconic 'Neemi wale Dangtar,' Dr. Anurag Govil's family, Dr. Rameshwar Sharma, who later principled the Medical College, and Dr. Kotia who doctored my grandmother, Mr. Kamta Prasad's home IAS and family, the Green House on Ashok Marg, and the Durlabji house and family nearby.

These weren't just professionals or politicians. They were part of the city's collective breath, men and women who moved between homes and hospitals, havelis and halls, without ceremony. Our house was one such room. And memory, I think, is its lingering guest.

Rituals of Care - The Barber, the Mirror, and the Morning

In a house where everything had its place, even self-care was ceremonial. My grandfather's mornings began with a splash of hot water, Vividh Bharati on the radio, and the glint of polished metal.

His shaving ritual was deliberate. A heavy-duty electric kettle stood beside the standing mirror. His razor twisted open from the neck like a trick box. Forhan's toothpaste came in a squeezed tin. Brylcreem waited in a glass jar. And in a cup of water, his dentures, always placed just so.

And then came Chautmal, our 'Nai.' His presence was more than professional. With a shop on MI Road, that made him a heavyweight in Jaipur, who did not easily concede to visit homes. But he came for my grandfather.

At his daughter's wedding at Golecha House, I saw him seated near the entrance, squatting quietly, bidi in hand, watching 5,000 guests pass by. It wasn't grandeur that stayed with me, it was his presence. In Jaipur, dignity traveled quietly, often across caste and class lines, in gestures too subtle for history books. My grandfather's care rituals were never explained. They were performed. In their repetition, I learned that grace didn't need to announce itself. It needed to return.

Festivals, Coins, and the Value of Belonging

If my grandfather's mornings were quiet rituals of personal care, the festivals he led were expansive rituals of familial and social belonging. Diwali, Holi, and Makar Sankranti weren't events, they were affirmations. Each year, we waited for the moment he would open his drawer and distribute a crisp Rs. 5 note. It was always fresh, folded once, passed with quiet formality. We queued not for the amount, but for what it meant: you are seen. Nothing embodied continuity like the Jhadshahi silver coins, ten grams each, embossed with Empress Victoria's likeness. He received 445 coins every month as part of his state pension. They were never spent. They were polished and brought out each Lakshmi Puja, glowing beneath the oil lamps like an offering of time itself. These rituals weren't about currency. They were about care. About anchoring a family, not through inheritance, but through rhythm. Even today, some families send money on Paytm, or gift cards, or envelopes at Diwali. But the gesture remains: to mark presence with presence.

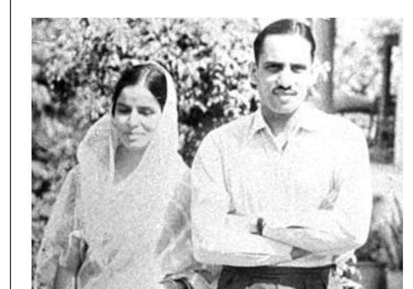

My parents Wing Commander R N Bhargava and Mrs Pushpa Bhargava.

Jaipur Inn - My Father's Legacy

If my grandfather preserved memory through ritual, my father extended it through hospitality. Wing Commander R. N. Bhargava returned from the Indian Air Force, where he served with distinction, including as Aide-de-Camp to President Dr. S. Radhakrishnan. He brought no grandeur into the house. Only discipline, stillness, and warmth.

In the 1970s, Jaipur became part of the overland trail. Backpackers arrived dusty, hopeful, sometimes lost. My father welcomed them, first at home, then in what became Jaipur Inn. Tents were pitched in the garden. Dorms were opened. Clean beds and chai followed.

Guests didn't just stay. They returned. A Dutch woman requested the same bed every year. An Israeli couple stayed through the monsoon. On one Christmas Eve, people from five continents dined on the rooftop under string lights. My father stood quietly at the edge, reaffirming hospitality. In the late 70's, Tony and Maurice, just about conceiving the Lonely Planet, were guest at Jaipur Inn as well as a couple of times again over the following decades. The travellers' grape wine and Lonely Planet was to shape the future of Jaipur Inn. The British High Commissioner's son checking in very late in the night and staying just as other young travellers of the time. The LVMH office in Delhi calling about Mr. Bernard Arnault wishing to relive his nostalgia for Jaipur Inn and his travels in India as a student and young traveller with his growing up children, arriving in his personal aircraft to Jaipur and being driven to Jaipur Inn for a couple of days stay was an highlight of a lifetime. Though, called off the India remastered trip then but gave a boost to our family morale.

He raised Sandeep and me not with instructions, but with example. Jaipur Inn was his ritual. The guestbook his register. The teacups his offering. Even today, when the light hits the stairwell just right, I feel him there, caring, waiting, welcoming.

The Historian of Emotions

I've come to see myself as a historian, but not of wars or timelines. A historian of emotions. Of how a Rs. 5 note became an act of recognition. Of how a guestbook became a register of trust. Of how biscuits, rituals, and silence formed the grammar of care. My grandfather taught me that love could be strict. My father taught me that love could be silent. One handed coins. The other handed life. Both handed memory. Some of these gestures have faded. The black rotary phone is gone. The number is longer. Chautmal no longer visits. But the silver coins come out for Lakshmi Puja. Bhartiya Bakery's biscuits still exist. And sometimes, when I sit quietly on the roof of Jaipur Inn, I feel the past return, not in nostalgia, but in recognition.

These memories aren't just sweet. They are durable. And in remembering them, I do not retreat.

I offer them forward.

rajeshsharma1049@gmail.com

#HEALTH

Energy Drinks! No!

Energy Drinks may drastically impair Muscle Repair and Growth.

Energy drinks have long been popular among athletes, fitness enthusiasts, and busy individuals seeking a quick boost in energy and focus. However, a recent study published in *Scientific Reports* has shed light on a potentially alarming downside: consuming just one can of energy drink daily can significantly impair muscle repair and growth, by as much as 90%.

How Energy Drinks Affect Muscle Regeneration

The study highlights several ways energy drinks interfere with the body's natural muscle recovery processes. At the cellular level, energy drinks were found to suppress muscle regeneration and inhibit myoblast differentiation, the essential process by which precursor cells develop into mature muscle fibers. This disruption can severely hinder the body's ability to repair damaged muscles and build new muscle tissue after exercise or injury. Moreover, energy drinks were shown to reduce the expression of critical growth factors, proteins necessary to stimulate muscle development and recovery over the long term.

What This Means for Athletes and Fitness Enthusiasts

Given these findings, athletes and fitness enthusiasts should reconsider their reliance on energy drinks as a performance aid or recovery tool. While they may provide a temporary boost in energy, the long-term consequences on muscle health and recovery could outweigh the short-term benefits.

The Role of Caffeine and Cortisol

One key factor behind these effects is the high caffeine content typical of many energy drinks. While moderate caffeine intake can improve alertness and athletic performance, excessive caffeine can raise levels of cortisol, the body's primary stress hormone. Elevated cortisol can have a detrimental effect on muscles by inhibiting protein synthesis, the biological process vital for muscle repair and growth. This means that instead of helping muscles recover, energy drinks may actually prolong recovery times and diminish strength gains.

Sugar, Inflammation, and Insulin Sensitivity

Most energy drinks also contain large amounts of sugar, which can exacerbate the problem by promoting inflammation. Chronic inflammation not only slows healing but also impairs the delivery of nutrients to muscle cells. Furthermore, excessive sugar intake can lead to reduced insulin sensitivity, making it harder for the body to use insulin effectively to shuttle glucose and amino acids, essential building blocks for muscle repair, into muscle tissue.

The Impact of Artificial Additives

Beyond caffeine and sugar, many energy drinks contain artificial additives, preservatives, and flavorings. Although the study did not isolate their effects, these substances may further contribute to impaired muscle recovery and overall health issues.

Healthier Alternatives to Energy Drinks

Instead of energy drinks, experts recommend turning to natural alternatives that support muscle repair and sustained energy, such as:

- Hydrating with water or electrolyte-rich beverages.
- Consuming balanced meals rich in protein, healthy fats, and complex carbohydrates.
- Incorporating natural sources of caffeine like green tea or coffee in moderation.
- Prioritizing sleep and stress management to optimize hormonal balance.

The new study serves as a wake-up call to anyone who frequently consumes energy drinks. While they might seem like a convenient pick-me-up, these beverages could be seriously undermining your body's ability to recover and grow stronger. For those committed to fitness and health, exploring safer, more natural options is a smarter choice for long-term muscle health and overall well-being.

THE WALL

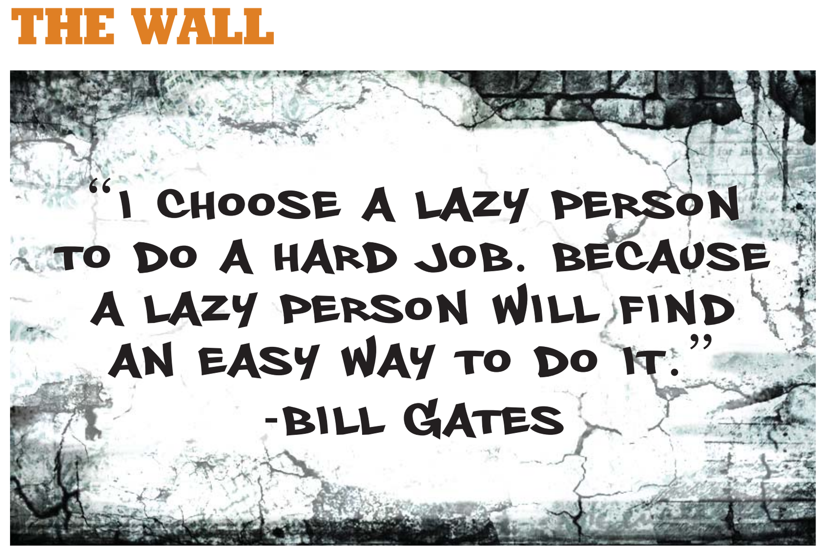

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

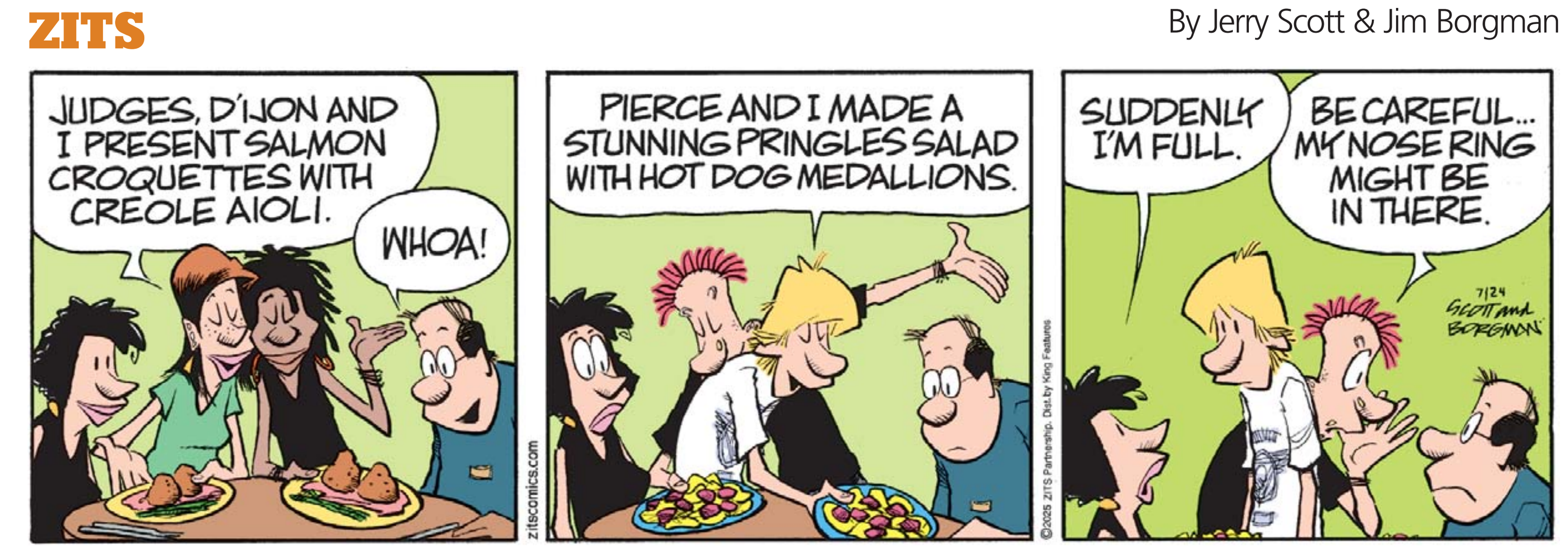

सायबर गिरोह के मुख्य सरगना सहित छह आरोपी गिरफ्तार

आरोपियों के खिलाफ पुलिस को 36 करोड़ रुपए की सायबर शिकायतें मिली है

- पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से सात बैंक पासबुक, दो एटीएम कार्ड, पांच मोबाइल फोन बरामद किए
- गिरफ्तार आरोपी कमीशन के बदले अपने मुख्य सरगना के लिए सायबर फ्रॉड का काम करते थे

डीडवाना, (निसं)। डीडवाना पुलिस की ओर से सायबर क्राइम के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम गत 25 अगस्त को मौलासर पुलिस ने सिंडिकेट सायबर गैंग का पर्दाफाश करते हुए सात आरोपितों को गिरफ्तार किया था। वहीं अब डीडवाना थाना पुलिस ने भी बड़ी कार्रवाई करते हुए संगठित सायबर गिरोह के मुख्य सरगना सहित छह आरोपितों को गिरफ्तार किया है। इन आरोपियों के खिलाफ पुलिस को 36 करोड़ रुपए की सायबर शिकायतें मिली है। साथ ही सात बैंक पासबुक, दो एटीएम कार्ड, पांच मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं।

डीडवाना एसपी रिचा तोमर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए इस संगठित सायबर फ्रॉड गैंग का खुलासा किया। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी कमीशन के बदले अपने मुख्य सरगना के लिए सायबर फ्रॉड का काम करते थे। ये आरोपी आम लोगों को लालच और झांसा देकर उनके बैंक खाते व एटीएम कार्ड अपने कब्जे में लेकर ठगी की रकम उनके खातों में मंगवाते थे, फिर उनके खातों से यह रकम निकालकर अपने सरगना को देते थे। उन्होंने बताया कि पिछले दिनों सायबर सेल को संदिग्ध बैंक खातों की सायबर शिकायतें मिली थी, जिस पर एसपी ने डिप्टी एसपी धरम पूनिया व थाना अधिकारी राजेंद्र सिंह कमांडो के नेतृत्व में स्पेशल टीम का गठन कर कार्रवाई के निर्देश दिए। इस पर टीम ने फील्ड इंटेलिजेंस व टेक्निकल तकनीक के आधार पर जांच शुरू की। इसी दौरान पुलिस को सूचना मिली कि इस सायबर फ्रॉड गैंग का सरगना पंकज मंडा अपने साथियों के साथ मिलकर लोगों के बैंक खातों के माध्यम से ठगी की रकम का लेन-देन कर करता है। इस पर पुलिस ने तुरंत पंकज मंडा के ठिकाने पर दबिश दी, जहां पंकज मंडा व उसके साथी एक काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी में बैठकर सायबर ठगी की गतिविधियों को अंजाम देते मिले। इस दौरान पुलिस को देखते ही आरोपियों ने भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर पंकज मंडा, समीर शेख, गिरधारी कड़वासरा, मोहम्मद शरीफ, शोहफ़ खान और अरबाज खान को गिरफ्तार कर लिया।

एसपी ने बताया कि आरोपियों द्वारा आपराधिक षड्यंत्र के तहत संगठित सायबर गिरोह के रूप में कार्य करते हुए लोगों को कमीशन व प्रलोभन देकर और झांसे में लेकर उनके बैंक खाते, एटीएम कार्ड, पासबुक, सिम कार्ड एवं संबंधित दस्तावेज अपने कब्जे में ले लेते थे। इसके पश्चात सायबर ठगी की राशि को ऑनलाइन या स्कैनर के माध्यम से इन खातों में डलवाकर एटीएम, चेक, ई-मित्र व अन्य माध्यमों से रकम निकालकर मुख्य सरगना तक पहुंचाते थे। इसके बदले आरोपियों को कमीशन प्राप्त होता था। आरोपियों के खातों की जांच से अब तक देश के विभिन्न राज्यों में करीब 36 करोड़ से अधिक की सायबर शिकायतें दर्ज होना पाया गया है, जिनके संबंध में पुलिस जांच कर रही है।

डीडवाना थाना पुलिस ने सायबर गिरोह के मुख्य सरगना सहित छह आरोपियों को गिरफ्तार किया।

बाड़मेर पुलिस ने चार तस्करों की 3.77 करोड़ की संपत्ति फ्रिज़ की

- मादक पदार्थ तस्कर पप्पू उर्फ नरेश कुमार विश्नोई व श्याम सुन्दर उर्फ सांवरिया विश्नोई की अवैध मादक पदार्थ तस्करी से अर्जित सम्पति को फ्रिज़ किया
- श्याम सुंदर की लक्ष्मीनगर बाडमेर स्थित करीब 51.48 लाख रूपये की सम्पति फ्रिज़, पप्पू उर्फ नरेश की करीब 76 लाख रूपये की सम्पति फ्रिज़

बाड़मेर, (नि.सं.)। बाड़मेर पुलिस द्वारा मादक पदार्थ तस्करों की अवैध रूप से अर्जित की गई संपति को फ्रीज करने की कार्रवाई दूसरे दिन भी जारी रही। यह पहली बार जब बाड़मेर पुलिस ने तस्करों की अवैध संपति को फ्रीज करने की कार्रवाई को अंजाम दिया है। दो दिन में पुलिस ने तस्करों की करीब 3.77 करोड़ की संपति फ्रीज की है, जिसमें आलिशान आवासीय भवन, प्लॉट, लक्जरी गाड़िया आदि शामिल है। दूसरे दिन की कार्रवाई में पप्पू उर्फ नरेश कुमार पुत्र गंगाराम विश्नोई निवासी लूणवा चारणान व श्याम सुंदर सावरिया पुत्र लाधुराम विश्नोई निवासी सोमारड़ी पुलिस थाना सेड़वा के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट की धारा 68 एफ (2) के तहत कार्रवाई करते हुए 1.27 करोड़ की संपति फ्रीज की।

पुलिस अधीक्षक नरेंद्र सिंह मीणा ने बताया कि उक्त कार्रवाई हेतु प्रस्ताव सक्षम प्राधिकारी एवं प्रशासक एनडीपीएस एक्ट न्यू दिल्ली,भारत सरकार को भेजा गया। जिनके द्वारा सम्पूर्ण दस्तावेजो का विश्लेषण कर दोनों अपराधियों द्वारा करीब 1.27 करोड़ रुपये की अवैध रुप से अर्जित सम्पति को फ्रिज़ करने के आदेश प्रदान किये गये। उक्त आदेश की पालना में पुलिस द्वारा मादक पदार्थ तस्कर पप्पू उर्फ नरेश कुमार की गांव लूणवा चारणान पुलिस थाना गुड़ामालानी मे स्थित एक मकान कीमतन 53 लाख रूपये, 1 स्कार्पियो वाहन कीमत 18 लाख रूपये व प्लॉट कीमत करीब 5 लाख रूपये तथा मादक पदार्थ तस्कर श्याम सुन्दर उर्फ सावरिया का लक्ष्मीनगर बाडमेर मे स्थित रहवासी भवन कीमतन 51.48 लाख रूपये का फ्रीज़ किया गया है।

मादक पदार्थ तस्कर पप्पू उर्फ नरेश ने अपने गांव में एक आलिशान मकान बनाया व वाहन भी खरीदे एवं काले धन को सफेद करने का प्रयासरत था। जिस पर उक्त अपराधी की सम्पतियों का विवरण व दस्तावेज एकत्रित किये गये तथा इस्तगासा तैयार कर सक्षम प्राधिकारी एवं प्रशासक को भेजा गया। सम्पूर्ण दस्तावेजों का विश्लेषण करने पर पप्पू उर्फ नरेश द्वारा करीब 76 लाख रुपये की सम्पति अवैध रुप से अर्जित करना पाया जाने से उसकी सम्पति फ्रीज़ करने के आदेश प्रदान किये गये। वहीं गुरुवार को दीपसिंह, थानाधिकारी पुलिस थाना सेड़वा मय टीम द्वारा सरहद सोमारड़ी मे अपराधी श्याम सुंदर सावरिया पुत्र लाधुराम विश्नोई निवासी सोमारड़ी पुलिस थाना सेड़वा की करीब 90 लाख रुपये की अवैध अर्जित सम्पति 1 आवासीय भवन व 4 वाहन को फ्रीज़ किया गया था।

हत्या के दोषी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई

- 31 हजार 500 के अर्थदंड से भी दंडित किया

कोटा, (निसं)। चाकू से हमला कर युवक की हत्या के करीब तीन साल पुराने मामले में एडीजे क्रम-2 न्यायालय ने सुनवाई करते हुए पकड़े गये आरोपी आरोपी राशिद अली को दोषी मानते हुए उम्र कैद की सजा सुनाई साथ ही 31 हजार 500 के अर्थदंड से दंडित किया। अपर लोक अभियोजक भारत सिंह आसावत ने बताया कि 24 अगस्त 2022 को फरियादी मटरू अली ने विज्ञान नगर थाने में रिपोर्ट दी। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि उसके चार लड़के है जो फल फ्रुट का कार्य करते हैं। रिपोर्ट में कहा कि उसका लड़का मोहम्मद सुफिल एवं शान मोहम्मद और जावेद एवं स्वंय नारकोटिक्स के सामने पुलिया के नीचे फल के ठेले लेकर आये थे। फरियादी ने कहा कि मौके पर ठेला लगाने को लेकर राशिद और उसके परिवारजनों के बीच कहासुनी हो गई। रिपोर्ट में कहा कि उस समय तो राशिद वहां से चला गया लेकिन थोड़ी देर बाद फिर आया और जान से मारने की नियत से उस पर व उसके लड़कों पर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। हमले में घायल सभी को निजी अस्पताल में ले गये जहां एक को भर्ती किया एवं घायल मोहम्मद सुफिल को भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान मोहम्मद सुफिल की मौत हो गई। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर हत्या की धारा 307 सहित अन्य धाराओ में मामला दर्ज किया। पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए उत्तरप्रदेश के बस्ता हाल महावीर नगर प्रथम निवासी राशिद अली को गिरफ्तार किया। पुलिस ने मामले में अनुसंधान करते हुए आरोपी के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया। मामले में सुनवाई के दौरान आरोपी को दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

डिप्टी सी.एम. दिया कुमारी ने भगवान देवनारायण के दर्शन किये

- उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने देश-प्रदेश में सुख-समृद्धि की कामना की

मसूदा, (निसं)। मसूदा पंचायत समिति की निकटवर्ती ग्राम पंचायत देवमाली में शुक्रवार को भगवान देवनारायण के लीलाघर घोड़े के1114वें जन्मोत्सव पर प्रदेश की डिप्टी सीएम दिया कुमारी, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भड़ाना ने मसूदा के देवधाम देवमाली पहुंचे, जहां जिला प्रशासन सहित विधायक, भाजपा कार्यकर्ताओं एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने डिप्टी सीएम दिया कुमारी का पुष्पवर्षा और प्रतिमा भेंट कर स्वागत किया। वहीं दिया कुमारी ने देवमाली में भगवान देवनारायण के दर्शन कर आशीर्वाद लिया और देश-प्रदेश में सुख-समृद्धि की कामना की। दिया कुमारी का देवमाली में महिलाओं ने मंगल गीत गाकर स्वागत किया।

इस दौरान दिया कुमारी ने कहा कि प्रदेश में डबल इंजन की सरकार है, तब तक विकास की कोई कमी नहीं रहेगी। देवस्थानों को लेकर भाजपा सरकार लगातार विकास कर रही है। साथ ही कहा कि भगवान देवनारायण मंदिर से जुड़ी सभी सड़कों को बजट घोषणा के तहत इन सड़कों के निर्माण करने को लेकर बजट दिया, जिसमें धोलादाता से देवमाली, खरवा से देवमाली, शेरगढ़ से देवमाली साथ ही मंदिर के मुख्य द्वार से लेकर मंदिर तक फ़ॉर लेन सड़क बनाने की बात की। साथ ही दिया कुमारी ने बताया कि बुजुर्ग जातरूओं के लिए जल्द ही रोप-वे काम शुरू किया जाएगा। दिया कुमारी ने कहा कि यहां हर साल सैकड़ों की तादात में आने वाले जातरूओं को मोबाइल नेटवर्क संबंधित समस्या का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए जिला कलेक्टर कमल राम मीणा को सरकारी भूमि को मोबाइल नेटवर्क के लिये आवंठित करने के लिये निर्देशित किया। इस दौरान जिला प्रशासन के अधिकारी, स्थानीय प्रशासन के अधिकारी, ग्राम पंचायत देवमाली सरपंच, ग्राम विकास अधिकारी, पंचायत समिति की विभिन्न ग्राम पंचायतों के ग्राम विकास अधिकारी, मसूदा उपखंड अधिकारी, मसूदा तहसीलदार, मसूदा नगर पालिका के अधिकारी व महिला एवं बाल विकास विभाग की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता आदि की मौजूदगी रही।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने डिप्टी सीएम दिया कुमारी का स्वागत किया।

ट्रैक्टर-चोरी का पर्दाफाश, एक आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। रामपुरा कोतवाली पुलिस टीम ने ट्रैक्टर-चोरी के दर्ज प्रकरण में कार्रवाई करते हुए ट्रैक्टर-चोरी का पर्दाफाश करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पकड़े गये आरोपी से चोरी गये ट्रैक्टर की छतरी (हुड) को बरामद किया है। पकड़े गये आरोपी ने पूछताछ में अन्य के साथ मिलकर ट्रैक्टर चोरी की अन्य वारदात भी कबूली है।

शहर पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि फरियादी सुनील कुमार ने रामपुरा कोतवाली थाने में 5 अगस्त को रिपोर्ट दी थी। पुलिस टीम ने तकनीकी सहायता व मुखबीर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए बरड़ा बस्ती निवासी सुरेन्द्र ओड़ (30) को गिरफ्तार किया। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपी से अनुसंधान में बताया कि आरोपी ने एक अन्य व्यक्ति सद्दाम हुसैन के साथ मिलकर सैलानी होटल के सामने से एवं रायपुरा थाना उद्योग नगर से ट्रैक्टर चोरी किये हैं। पकड़े गये आरोपी से अनुसंधान पूरा कर आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया। ट्रैक्टर चोरी के मामले में एक ओर अन्य आरोप सद्दाम हुसैन की तलाश जारी है।

अजमेर दरगाह के जीर्णोद्धार का निर्णय लिया

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह में जर्जर हिस्सों के गिरने की घटना के बाद दरगाह कमेटी द्वारा दरगाह का जीर्णोद्धार करने का निर्णय लिया। कमेटी द्वारा 300 साल पुराने सबीली गेट को चौड़ा करने का कार्य शुरू करते हुए वर्तमान में गेट 7 गुणा 7 फीट का है, जिसे तोड़कर 11 गुणा 11 फीट का बनाया जाएगा। इसके साथ ही शाहजहानी मस्जिद की तर्ज पर संगमरमर से नया गेट बनाया जाएगा। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह में हर साल अकीदतमंदों की बढ़ती भीड़ के मद्देनजर जायरीन प्रवेश और निकासी के दौरान धक्का-मुक्की जैसी समस्या का सामना करना पड़ रहा था। वहीं बारिश के चलते दरगाह के कई हुजरे भी जर्जर हो चुके थे, लंबे समय से दरगाह अंजुमन सैयद जादगान कमेटी दरगाह में विकास कार्यों की मांग को लेकर प्रदर्शन व ज्ञापन भी दे चुकी है। करीब तीन साल बाद दरगाह नाजिम बिलाल खान की नियुक्ति के बाद दरगाह के जीर्णोद्धार का कार्य शुरू हुआ। दरगाह कमेटी द्वारा केंद्र सरकार के मंत्रालय को पत्र लिखकर आवश्यक स्वीकृति हासिल की। स्वीकृति मिलने के बाद पहले चरण में गेट चौड़ीकरण का कार्य शुरू किया गया है। आने वाले समय में तीन अन्य गेट भी चौड़े किए जाएंगे, जिससे जायरीन को बेहतर सुविधा मिल सके। दरगाह कमेटी और अंजुमन कमेटी की संयुक्त बैठकों के बाद यह निर्णय लिया।

मदन राठौड़ ने सोनाराम चौधरी को श्रद्धांजलि दी

जैसलमेर, (नि.सं.)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ नेता कर्नल सोनाराम चौधरी के निधन उपरांत शुक्रवार को उनके पैतृक गांव मोहनगढ़ पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परिजनों से मिलकर सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और परिवारजनों को इस कठिन समय में धैर्य प्रदान करें।

फाइनेंस कंपनी के साथ धोखाधड़ी

उदयपुर, (निसं)। गिरवी रखा सोना आने तक चेक सिक्यूरिटी पेटे रखकर फाईनेन्स कंपनी से ऋण लेकर धोखाधड़ी करने वाले के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित भरत कुमार पुत्र सुन्दरलाल जैन निवासी वरिष्ट प्रबंधक मुथूट फिनकोर्प ग्राउण्ड फ्लोर मेनारिया गेस्ट हाउस के पास पानेरियों की मादड़ी ने आरोपी विष्णु मैनारिया पुत्र मुकेश मैनारिया निवासी कुम्हार खेड़ा मंगेसरा चित्तौड़गढ़ के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया, जिसमें उसने बताया कि जनवरी 2025 में बैंक में आए आरोपी ने केप्री गोल्ड से छुड़वाने के लिए मेरी कंपनी से लोन लेने के लिए चेक दिया तथा सोना छूटते ही कंपनी में जमा करवा चैक लेने की बात कही। इस पर कंपनी ने 4 लाख 17 हजार रूपये का आरोपी को भुगतान कर दिया। कुछ ही दिन बाद सोना जमा नहीं कराने पर जांच की तो आरोपी का खाता सीज होने का पता चला। इस पर चेक बैंक में प्रस्तुत किया तो अनादरित हो गया। इस मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

डीजीजीआई की निखिल डाड और अनुज सोमानी के ठिकानों पर जांच पूरी

- केमिकल कारोबारी निखिल डाड ने पांच करोड़ और और अनुज सोमानी ने 1.13 करोड़ की टैक्स पेनल्टी जमा कराई
- फर्जी बिलिंग में शामिल बाकी प्रोसेस हाउस ने 2.5 करोड़ की टैक्स पेनल्टी जमा कराई है
- केमिकल के फर्जी बिलों के जरिए 13 करोड़ की टैक्स चोरी की गई थी

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा में डीजीजीआई की रेड से जुड़ा बड़ा अपडेट आया है। केमिकल कारोबारी निखिल डाड और अनुज सोमानी के ठिकानों पर जांच पूरी हो चुकी है। निखिल ने पांच करोड़ और अनुज ने 1.13 करोड़ की टैक्स पेनल्टी जमा कराई है। फर्जी बिलिंग में शामिल बाकी प्रोसेस हाउस ने 2.5 करोड़ की टैक्स पेनल्टी जमा कराई है। गुरुवार को शुरू हुई डीजीजीआई की रेड में 15 करोड़ की टैक्स चोरी सामने आई थी। डीजीजीआई की टीम 8.5 करोड़ रुपये की रिकवरी के बाद शुक्रवार को रवाना हुई।

जानकारी के अनुसार भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष के बेटे निखिल डाड और अनुज सोमानी पर डीजीजीआई की रेड में 13 करोड़ रुपए की टैक्स चोरी का मामला सामने आया था। साथ ही साथ टैक्स चोरी में शामिल प्रोसेस हाउसों के नाम सामने आए। इनमें सांवरिया टैक्स फेब, रंजन पॉलिस्टर, अनंत सिन्टेटिक्स, पूजा स्पिनटैक्स सहित अन्य प्रोसेस हाउसों के नाम सामने आए हैं। जानकारी के अनुसार केमिकल के फर्जी बिलों के जरिए 13 करोड़ की टैक्स चोरी की गई थी। इसको लेकर गुरुवार सुबह ही डाड और सोमानी समेत 10 से अधिक ठिकानों पर डीजीजीआई जयपुर ने रेड मारी थी। तीन दर्जन अधिकारी दस्तावेज और डिजिटल रिकॉर्ड्स खंगालने में जुटे हुए हैं। जीएसटी टैक्स चोरी की जांच को आगे बढ़ाते हुए महानिदेशालय जीएसटी इंटेलिजेंस, जयपुर जोनल यूनिट की टीमों ने गुरुवार सुबह भीलवाड़ा में दस से अधिक स्थानों पर एक साथ छापेमारी की। जयपुर से आई विशेष टीमों ने भीलवाड़ा के विभिन्न प्रोसेस हाउस और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर एक साथ दबिश दी। टीम की मुख्य कार्रवाई निखिल डाड, जो पूर्व भाजपा ज़िलाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण डाड के पुत्र हैं, के ठिकानों पर भी की गई। सूत्रों के अनुसार, तलाशी में कई महत्वपूर्ण दस्तावेज़ और डिजिटल रिकॉर्ड्स बरामद हुए हैं, जिनका विभागीय स्तर पर विश्लेषण किया जाएगा। डीजीजीआई की यह समन्वित कार्रवाई राज्य में चल रहे जीएसटी कर चोरी के मामलों के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाइयों में से एक मानी जा रही है। निखिल डाड के केमिकल की कंपनी है, जिसमें भीलवाड़ा के नामचीन व्यक्तियों की पार्टनरशिप बताई जा रही है। इस कंपनी के क्लाइंट बड़े-बड़े प्रोसेस हाउस है।

ड्रोन प्रशिक्षण व कल्याणकारी योजनाओं पर मंथन

जयपुर। गृह रक्षा विभाग राजस्थान ने केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, फतेहपुरा (बेगस) में दो दिवसीय राज्य स्तरीय सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य गृह रक्षा स्वयंसेवकों की समस्याओं का समाधान करना और कल्याणकारी योजनाओं पर विचार-विमर्श करना था। इस सेमिनार की अध्यक्षता महानिदेशक मालिनी अग्रवाल ने की। इसमें अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस पी. रामजी, महानिरीक्षक पुलिस संदीप चौहान और निदेशक सी.टी.आई. बिजेन्द्र सिंह सहित विभाग के कई अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। बैठक में गृह रक्षा स्वयंसेवकों की ड्यूटी को और अधिक पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने के लिए एचडीएमएस नामक एक ऑनलाइन पोर्टल पर चर्चा की गई। इस पोर्टल के माध्यम से स्वयंसेवकों को उनकी ड्यूटी की जानकारी समय पर और सटीक रूप से मिल सकेगी। वर्तमान समय में तकनीक के महत्व को देखते हुए, सेमिनार में ड्रोन संचालन का विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया। अधिकारियों और कर्मचारियों को आपदा प्रबंधन, निगरानी, सुरक्षा और बचाव कार्यों में ड्रोन तकनीक के उपयोग के बारे में जानकारी दी गई। सेमिनार के दौरान स्वयंसेवकों की समस्याओं के निवारण और कल्याणकारी योजनाओं के विस्तार पर विस्तृत चर्चा हुई।

संबोधन में पुलिस महानिदेशक अग्रवाल ने कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन पर विशेष जोर दिया और अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे स्वयंसेवकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करें।

सरपंचों के पुतलों के साथ प्रदर्शन की तैयारी में घुमंतू समाज

- आरोप है कि, भजनलाल सरकार के आदेश के बावजूद करीब डेढ़ हजार पंचायतों में सरपंचों ने प्रस्ताव ही पास नहीं किया

जयपुर। भजनलाल सरकार की ओर से घुमंतू समाज को पट्टे देने के आदेश के बावजूद लगभग डेढ़ हजार ग्राम पंचायत में घुमंतू समाज को पट्टे देने की दिशा में सरपंचों ने प्रस्ताव ही नहीं पास किया। वहीं चारागाह में रहने वाले आवास विहीन घुमंतू समाज को पट्टों का प्रस्ताव जिला परिषदों के पास लंबित है। ऐसे में नाराज घुमंतू समाज से जुड़े लगभग 52 जातियों के पंच-पटेल एवं नागरिक भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी के नेतृत्व में विधानसभा के बाहर हजारों सरपंचों के पुतलों के साथ धरना प्रदर्शन की तैयारी कर रहा हैं। तैयारी के तहत जगह-जगह पुतले लगाकर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया गया हैं। वहीं भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी के नेतृत्व में घुमंतू समाज के पंच पटेलों ने पुतला आंदोलन के रूप में लगभग 100 सरपंचों के पुतलों के साथ भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी की कालबेलिया समाज प्रकोष्ठ अध्यक्ष काली बाई कालबेलिया के नेतृत्व में जयपुर जिले के माधवराजपुरा पंचायत समिति के सामने धरना प्रदर्शन भी शुरू कर दिया हैं। वहीं बागरी समाज प्रकोष्ठ की भारत जोड़ो मिशन सोसायटी अध्यक्ष रोड़ी देवी के नेतृत्व में जयपुर में गुर्जर की थड़ी में आंदोलन की शुरुआत की जा रही है।

भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी के अध्यक्ष अनीष कुमार नाडार ने बताया कि पंचायत राज मंत्री मदन दिलावर के अलग से आदेश देने के कारण ही घुमंतू समाज को आवास मिलने की आशा जगी है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में बहुत से सरपंच घुमंतू समाज को बराबरी का दर्जा दिलाने के प्रधानमंत्री मोदी के सपनों को पूरा होने नहीं दे रहे। घुमंतू समाज को जिस भूमि पर वह वर्षों से रह रहे हैं उनसे वह जमीन भी छीनी जा रही है और उन्हें बेसहारा सड़कों पर धकेला जा रहा है । जिससे घुमंतू समाज को विकास की मुख्यधारा में लाने के सरकार के कार्यों को धक्का पहुंच रहा है और इनमें अधिकतर कांग्रेस से जुड़े सरपंच ही हैं। वहीं दूसरी ओर इन ग्राम पंचायत में अन्य लोगों को पट्टों की बंदर बांट हुई है जिसकी जांच भी होनी चाहिए। भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी ने शहर में रह रहे घुमंतू समाज को पट्टे देने के लिए अध्यादेश लाने की मांग भी की हैं बहरहाल यह बड़ा रोचक होगा जब हजारों सरपंचों के पुतलों के साथ विधानसभा का घुमंतू समाज घेराव करेंगे।

हादसे में किसान की मौत

उदयपुर, (निसं)। पेड़ से टहनियां काटते समय गिरने पर किसान की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार 28 अगस्त दोपहर में वरडा बड़गांव निवासी अभयसिंह (35) पुत्र शिवसिंह अपने मकान के बाहर स्थित पेड़ पर चढ़ कर टहनियां काट रहा था। इस दौरान संतुलन बिगडने पर वह निचे गिर पड़ा। इसको देख परिजन उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय ले गए, जहां उसकी मौत हो गई। इस पर पुलिस ने मौके पर पहुंच मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप सौंपा।

मंदिर से दानपेटी चोरी : उदयपुर शहर के सुखेर थाना क्षैत्र में स्थित जैन मंदिर से चोर दानपेटी चुरा ले गया। 26 अगस्त रात में अज्ञात चोर सुखेर थाना क्षेत्र न्यू रोशन नगर में स्थित जैन मंदिर का ताला तोड़कर दानपेटी चुरा ले गए। घटना की जानकारी मिलने पर जांच की लेकिन कोई सुराग नहीं लगा। इस मामले में पुलिस ने पीड़ित उदित पुत्र महेन्द्र शाह निवासी केशव नगर यूनिवर्सीटी रोड़ की रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

दो पक्षों में मारपीट, आठ गिरफ्तार : भीलवाड़ा जिले के करेड़ा थाना क्षेत्र में गंगापुर चौराहे पर गुरुवार देर शाम को दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई। लाठी और पत्थरों का जमकर इस्तेमाल किया गया। इस घटना में गाड़ियों में भी तोड़फोड़ की गई। मारपीट के दौरान डैलास निवासी राजमल गुर्जर (24 वर्ष) घायल हो गया। सूचना मिलने पर करेड़ा पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए अब तक आठ लोगों को गिरफ्तार किया है।घायल राजमल गुर्जर को तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करेड़ा ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे छुट्टी मिली। इस घटना के बाद दोनों पक्ष करेड़ा थाने पहुंचे और एक दूसरे के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। जानकारी के अनुसार पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए अब तक आठ लोगों को गिरफ्तार किया है।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान कॉलेज के पीजी ब्लॉक में छज्जा गिरा

अजमेर, (कासं)। सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय के पीजी ब्लॉक में शुक्रवार को सिंधी विभाग के सामने अचानक छज्जे का प्लास्टर गिरने से अफरा-तफरी मच गई। घटना के मद्देनजर एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने जर्जर पीजी ब्लॉक के भवन को बंद करने और मरम्मत कराने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। छात्र नेताओं ने मुख्यद्वार को बंद कर दिया। पुलिस ने प्रदर्शकारी दो छात्र नेताओं को हिरासत में लिया। वहीं छात्र नेताओं ने कार्यवाहक प्रचार्य को ज्ञापन सौंपकर मेंटेनेंस की मांग की है। कॉलेज प्रशासन हमेशा किसी हादसे के बाद ही जागता है और समय रहते जर्जर संरचनाओं की मरम्मत नहीं करता है तो आंदोलन किया जाएगा।

एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अंकित घारू के नेतृत्व में छात्रनेताओं व पदाधिकारियों एसपीसीजीसीए कॉलेज के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार दाधीच को ज्ञापन सौंपकर बताया कि पीजी ब्लॉक में शुक्रवार को छज्जे गिरने के दौरान नीचे कोई छात्र खड़ा होता तो बड़ा हादसा हो सकता था, जिसका जिम्मेदार प्रशासन होता। घारू ने चेतावनी दी कि यदि जर्जर भवनों की मरम्मत जल्द शुरू नहीं हुई तो छात्र आंदोलन को मजबूर होंगे। प्रदर्शन के दौरान छात्र उग्र हो गए और व्याख्याताओं के समझाने के प्रयास भी विफल रहे। स्थिति बिगड़ने पर क्लॉक टावर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और एनएसयूआई के छात्र नेता लकी जैन और मेहुल गुर्जर को हिरासत में लिया। इससे छात्र और भड़क गए। छात्र नेताओं ने कहा कि पुलिस लोकतंत्र की हत्या कर रही है, जबकि वे अपनी मांग प्रशासन के समझ रख रहे थे। इस दौरान दीपेश हरियाला, फैलान हैदर, गौरव छपरिवंद, सुन्नी गुर्जर, विवेक गोयर, हर्षित लोट, अनमोल घारू, पंकज, प्रवीण, यश सहित कई छात्र मौजूद रहे।

कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. दाधीच ने बताया कि पीजी ब्लॉक के पांच कमरों को एहतियातन बंद कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि दो सप्ताह पहले ही

उदयपुर में तेज बारिश, पानरवा-कोटड़ा हाइवे पर पुल टूटा, यातायात बाधित

बांसवाड़ा जिले के सज्जनगढ़ क्षेत्र में साढ़े पांच इंच बारिश दर्ज की गई

- **सलूंबर जिले में तेज बहाव में बहे सरकारी शिक्षक वीरभद्र सिंह चुंडावत का शव मिला**
- **उदयसागर के दोनों गेट पांच-पांच फीट खोल रखे हैं, उसके बावजूद जलस्तर उम्मीद अनुरूप कम होता नजर नहीं आ रहा**

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर में शुक्रवार सुबह से धूप खिली, लेकिन 11 बजे अचानक मौसम बदला और तेज बारिश शुरू हो गई। शहर में हुई तेज बारिश से पानी-पानी हो गया। शहर के कई हिस्सों में अच्छी बारिश हुई। कृषि मंडी में निकासी नहीं होने से एक बार पानी ही पानी हो गया। वहीं उदयपुर-अहमदाबाद नेशनल हाइवे पर भी पानी भर गया। तेज बारिश के बाद बारापाल के पास पानी भर गया। हाइवे पर पिछले दिनों से कई जगह बारिश के पानी की वजह से जाम की नौबत आ गई। वहीं उदयपुर में पानरवा कोटड़ा हाइवे पर खाचन स्कूल के सामने पुल का आधा हिस्सा टूटकर गिर गया, जिसके बाद यातायात बाधित हो गया और खतरा बना रहा। सूचना के बाद नेशनल हाइवे अथॉरिटी ने मार्ग को बंद करवा दिया है, जिससे झाडोल से कोटडा और अंबाजी जाने वालों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं पिछले 24 घंटों में प्रदेश में सर्वाधिक 136 मिलीमीटर बारिश बांसवाड़ा जिले के सज्जनगढ़ क्षेत्र में दर्ज की गई है।

बरसात से गोवर्धन सागर भी लबालब हो गया है। इधर सलूंबर में एसडीआरएफ की टीम ने शुक्रवार सुबह से रेस्क्यू अभियान चलाते हुए शव को निकाला। एक दिन पहले गुरुवार को सारणी नदी में तेज बहाव पार करते वक्त सरकारी शिक्षक बाइक सहित बह गए थे। उनकी बाइक मिल गई थी, लेकिन शव का पता नहीं लगा था। झल्लारा थाना क्षेत्र में गुरुवार सुबह टीचर वीरभद्र सिंह चुंडावत बाइक से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सामोडा जा रहे थे। तभी झल्लारा-अमलोदा मार्ग स्थित सारणी नदी को पार कर रहे थे। नदी में तेज बहाव के कारण उनकी बाइक का संतुलन बिगड़ गया और वे बाइक सहित नदी में बह गए, शुक्रवार को उनका शव मिल गया।

शहर के गोवर्धन विलास क्षेत्र में स्थित 9 फीट पूर्ण भराव स्तर वाला गोवर्धन सागर भी ओवरफ्लो हो गया है। सतोरिया नाले में बहाव भी तेज हो गया है। तीतरडी और शहर के उपनगरीय क्षेत्र में निकासी के अभाव में कई जगह सड़कों पर जलभराव से वाहन चालक परेशान रहे। शहर में तेज बारिश से गोवर्धन विलास क्षेत्र में स्थित सतोरिया नाले में बहाव तेज होने से सेवाश्रम पुलिया के नीचे पुराना रोड काफी देर तक जलमग्न हो गया और वाहनों की आवाजाही बंद रही। इधर उदयसागर के दोनों गेट पांच-पांच फीट खोल रखे हैं, उसके बावजूद जलस्तर उम्मीद अनुरूप कम होता नजर नहीं आ रहा। उदयसागर का जलस्तर 24 फीट के मुकाबले अभी भी 22 फीट 3 इंच है। 24 घंटे में इसमें सिर्फ 5 इंच पानी कम हुआ है। उदयसागर में आयड नदी से लगातार आवक भी बनी हुई है। सीसारमा नदी में सवा तीन फीट और मदार नहर में 3 फीट बहाव जारी है। स्वरूपसागर के गेट खुले होने के बावजूद इस पर चादर चल रही है।

उदयपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में भी कई जगह मध्यम से तेज बारिश हुई। पिछले 24 घंटों में बांसवाडा के सज्जनगढ़ में 136, कुशलगढ़ में 75, उदयपुर शहर में 5, नाई में 12, नया गांव में 57, फलासिया में 35, कुराबड में 34, झाडोल में 17, बावलवाड़ा में 29 और ऋषभदेव में 16 मिलीमीटर बारिश हुई। इधर मौसम की सक्रियता को देखते हुए उदयपुर के उदयसागर के जलस्तर ने चिंता बढ़ा रखी है।

बीकानेर में ज्योतिषी ने सुसाइड किया

बीकानेर, (निसं)। यहां एक ज्योतिषी ने कोलायत के कपिल सरोवर में छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। मरने से करीब छह मिनट पहले युवक ने फेसबुक पर पत्नी, सास और साले पर प्रताड़ना के गंभीर आरोप भी लगाए। युवक की पोस्ट पर देख एक भाजपा नेता सुरेंद्र सिंह शेखावत ने कोलायत थानाधिकारी को फोन पर सूचना दी। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक पवनपुरी निवासी ज्योतिषी महावीर जैन कपिल सरोवर में छलांग लगा चुके थे। उनके जूते और मोबाइल किनारे पर रखे थे। रेस्क्यू टीम ने उनका शव निकाला।

सुसाइड नोट में लिखा कि मेरी पत्नी को बाहर घूमना और धनवान होने की प्रबल इच्छा थी। 2024 में मेरे साले विनायक जैन ने नये मकान के लिए मुझ से 20 लाख मांगे। मेरे पिताजी के स्वर्गवास के बाद उसका (पत्नी) व्यवहार बदल गया। इनके ताऊजी ने कहा कि इसका घर बेच कर पैसा ले लो। मेरे ऊपर मानसिक दबाव बनाया गया। गाली-गलौच झगड़ा किया गया। 1 जुलाई को घर पर आकर पत्नी ने रिश्तेदारों के साथ मेरी मां को धमकाया। मैंने पुलिस को लिखित सूचना भी दी। मेरे दोनों बच्चों को उन्होंने अपने साथ रख लिया। मुझे मेरे बच्चों से मिलने नहीं दिया। पत्नी ने अपने भाई और मां के साथ मिलकर प्रताड़ित किया। मेरी पत्नी मुझे तलाक कि धमकी देकर एलुमनी मनी की डिमांड करने लगी। मुझसे 1 .5 करोड़ मांगे। मुझसे कहा कि तुम ज्योतिष का काम छोड़ दो। सुसाइड नोट में लिखा कि मेरी पत्नी को बहुत अधिक पैसा चाहिए था। इसलिए वो अपने पीहर पक्ष वालों के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा करती थी। मैं अपने बच्चों से 3 महीने से नहीं मिल पाया। इन्होंने अपने सभी फोन बंद कर दिए थे। मैंने बहुत अधिक धैर्य और शांति से सब परिस्थितियों को संभालना चाहा, परंतु इन लोगों के बूरे व्यवहार से मैं बहुत दुखी था। मेरे द्वारा प्रार्थना याचना करने के बाद भी ये लोग मानसिक टॉर्चर और धमकी देते रहते थे। मैं आत्महत्या के लिए उकसाने के कारण आत्महत्या कर रहा हूं।

कोलायत थाने के एएसआई ने बताया कि शव को कोलायत हॉस्पिटल की मॉर्च्युरी में रखवाया है। प्रकरण दर्ज नहीं हुआ है, जांच की जा रही है।

बारिश से जेल स्कूल के एक भाग की दीवार गिरी

- **सर्वाधिक वर्षा डूंगरपुर में 45 एमएम दर्ज की गई**

डूंगरपुर, (निसं)। डूंगरपुर जिलेभर में पिछले एक पखवाड़े से बारिश का दौर जारी है। इसी के चलते अब कई तालाब, बांध, एनिकट अपनी भराव क्षमता को पार कर छलक रहे हैं। वहीं 24 घण्टों में सर्वाधिक वर्षा डूंगरपुर में 45 एमएम दर्ज की गई है। शुक्रवार को सुबह से ही बारिश का दौर तेज मध्यम गति से दिनभर चलता रहा। जिसके कारण पक्के घरों की छतें भी अब टपकने लग गई है।

इधर शहर के वखारियां चौक स्थित पुरानी जेलखाना स्कूल जो कि वर्तमान में बैठक व्यवस्था के लिए बंद है, का मध्यरात्रि को मुख्य सड़क की ओर का एक भाग धराशाही हो गया। हालांकि मलबा स्कूल परिसर में ही गिरा, जिस कारण किसी को नुकसान नहीं हुआ। वहीं सोम कमला आम्बा के भी गेट खुले हुए हैं, जबकि अन्य बड़े तालाब व एनिकट भी ओवरफ्लो हो चुके है। शुक्रवार बाढ़ नियंत्रण कक्ष के अनुसार देवल में 10, फलोज 17, कनबा में 6, सागवाडा 23, ओबरी व धम्बोला 38, गलियाकोट 11, वैजा में 26, चिखली 9, आसपुर 31, गणेशपुर 9, बनकोडा 36, साबला 15, निठाऊवा 25 तथा गामडी में 11 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की गई है।

गांजा सहित आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। रानपुर पुलिस टीम ने नाकाबंदी के दौरान की गई कार्रवाई में एक स्लीपर कोच की ट्रेवल बस में चैकिंग के दौरान मादक पदार्थ 2 किलो 935 ग्राम गांजा सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। शहर पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि रानपुर थाने के थानाधिकारी रामविलास मीणा मय जाप्ता जगपुरा पुलिस चौकी के सामने झालावाड़ से कोटा आने वाली रोड़ पर नाकाबंदी कर वाहनों की चैकिंग कर रहे थे। शहर एसपी ने बताया कि नाकाबंदी के दौरान स्लिपर बस बाबू ट्रेवल के बस की डिग्गी में रखे सामान व सवारियों के सामानों की चैकिंग की गई। पीछे की तरफ सीट नम्बर एक पर बैठी हुई सवारी पर संदेह होने पर नाम पता पूछा तो यात्री ने मध्यप्रदेश के जहांगीरपुरा निवासी संतोष सूर्यवंशी बताया तथा भोपाल से जयपुर जाना बताया। पुलिस टीम ने संदेह होने पर पुलिस ने बैग की तलाशी ली तो उसके बैग से अवैध मादक पदार्थ 2 किलो 935 ग्राम गांजा बरामद किया।

रद्द हुई एस.आई. भर्ती में बड़ी मछलियों के नाम आने बाकी : गजेन्द्र सिंह शेखावत

- **एसआई भर्ती परीक्षा रद्द होने पर केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि न्यायालय ने इस भर्ती परीक्षा को रद्द किया, लेकिन अंतिम फैसला आना अभी बाकी है**

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने एसआई भर्ती परीक्षा रद्द होने पर कहा कि जांच पूरी होने दीजिए, अभी बड़ी मछलियों के नाम आने बाकी हैं। केंद्रीय मंत्री शेखावत शुक्रवार को जोधपुर पहुंचे। एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत में सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा रद्द होने पर शेखावत ने कहा कि न्यायालय ने इस भर्ती परीक्षा को रद्द किया, लेकिन अंतिम फैसला आना अभी बाकी है। जांच अभी एसओजी कर रही है। न्यायालय के निर्णय का सम्मान करते हुए हमें जांच पूरी होने का इंतजार करना चाहिए। शेखावत ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का संकल्प था कि युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले हर एक व्यक्ति को उसके किए की सजा मिले। न्यायालय ने एसआई भर्ती परीक्षा को रद्द करते हुए टिप्पणी में कहा है कि आरपीएससी के मेंबर भी सम्मिलित हैं। इस पर शेखावत ने कहा कि वो यह मानते हैं कि ये छोटी मछलियां हैं, बड़ी मछलियों के नाम आने बाकी हैं। जांच पूरी होने दीजिए। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले भी मैंने कहा था, अनेक सफेदपोश लोग आज बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं, उनमें से कई लोग जेल सालाखों के पीछे आपको देखने को मिलेंगे।

न्यायालय के निर्णय पर क्रेडिट लेने से जुड़े सवाल पर शेखावत ने कहा कि सरकार के जांच के प्रतिवेदन के आधार पर न्यायालय में जो फैसला किया है, उसका सम्मान करना चाहिए। अब जिनको हर चीज में राजनीतिक लाभ लेने की भूख रहती है, उनसे कोई दूसरी अपेक्षा नहीं की जा सकती। बिहार में राहुल गांधी और तेजस्वी यादव द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के लिए की गई टिप्पणी पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वो संविधान की किताब जेब में रखते हुए संविधान का मखौल उड़ा रहे हैं। कांग्रेस पार्टी को निश्चित तौर पर आत्मावलोकन करने की जरूरत है। शेखावत ने कहा कि राहुल गांधी अब तक 100 से ज्यादा चुनाव अलग-अलग जगहों पर हार चुके हैं, इसलिए उनके मन में खीज है। मैं उनके प्रति सहानुभूति रखता हूं। उनको आत्मावलोकन की सलाह देता हूं।

अमेरिकी टैरिफ पर केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि भारत पूरी ताकत से जुटा है। हम भारत के किसान, मछुआरे और लघु उद्योग के हित के विरुद्ध नहीं जा सकते हैं। आने वाला समय भारत का होगा। हम अपनी क्वालिटी इंप्रूव करेंगे और लागत कम करेंगे। दुनिया की चुनौतियां और बाधाओं को पार कर हम आगे बढ़ेंगे। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने एयरपोर्ट पर पश्चिम बंगाल में ड्यूटी के दौरान शहीद हुए बीएसएफ जवान रमेश पोपावत को श्रद्धांजलि अर्पित दी। परिजनों से मिलकर ढांढस बंधाया। शहीद जवान का अंतिम संस्कार पैतृक गांव बोयल गांव में सैन्य सम्मान के साथ किया जाएगा।

चूरू में बारिश से रास्ते जलमग्न

चूरू, (निसं)। शुक्रवार दोपहर बाद मौसम ने एक बार फिर करवट ली और चूरू पर मेहरबान हुए। दोपहर करीब एक बजे हुई बारिश ने आमजन को गर्मी से राहत प्रदान की और बारिश के बाद किसानों के चेहरे भी खिले नजर आये। वहीं कई लोगों ने इसको कुछ फसलों के लिये नुकसानदायक भी बताया। बारिश के बाद निचली बस्तियों में रहने वाले लोगों की मुश्किलें और बढ़ गई, क्योंकि निकासी के अभाव में शहर में जगह-जगह जमा गंदा पानी आमजन के लिये परेशानी का सबब बना हुआ है। मौसम विभाग की मानें तो शुक्रवार को 25.6 एमएम बारिश दर्ज की गई और अधिकतम तापमान 34.2 तथा न्यूनतम 27.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

41 किलो डोडा-चूरा बरामद

कोटा, (निसं)। केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो (सी.बी.एन) भवानीमंडी सेल के अधिकारियों ने कार्रवाई करते हुए लावारिस हालत में छिपाया गया 41.125 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा बरामद किया। यह कार्रवाई केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो के उप नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल के निर्देशन में की गई। उप नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल ने बताया कि मुखबीर से सूचना मिली कि दो बाइकों पर सवार 4 व्यक्ति मिश्रोली-झिझनी रोड पर लगभग 50 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा ले जा रहे हैं। सूचना पर सी.बी.एन भवानीमंडी सेल के अधिकारियों की एक टीम गठित की गई और टीम को रवाना किया गया। उप नारकोटिक्स आयुक्त ने बताया कि जैसे ही टीम घटनास्थल के पास पहुँची, निवारक दल की कारों की लाइटं देखकर बाइक सवारों ने बाइक स्टार्ट कर दी और अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकले।

एस.आई. भर्ती रद्द करने के फैसले से 'बिश्नोई गैंग' शब्द को हटाने की मांग

- **'न्यायालय ने 202 पेज के फैसले में कई बार 'बिश्नोई गैंग' शब्द का इस्तेमाल किया है जो कतई उचित नहीं है'**
- **फैसले पर कोई टिप्पणी नहीं है, बल्कि ऑर्डर में बार-बार 'बिश्नोई गैंग' शब्द का उपयोग किया गया है, जिस पर आपत्ति है : शिवराज बिश्नोई**

बीकानेर, (निसं)। एसआई भर्ती रद्द करने को लेकर गुरुवार को आए फैसले के बाद 'बिश्नोई गैंग' शब्द को हटाने की मांग की जा रही है। अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शिवराज बिश्नोई ने बताया कि फैसले पर कोई टिप्पणी नहीं है, बल्कि ऑर्डर में बार-बार बिश्नोई गैंग शब्द का उपयोग किया गया है, जिस पर आपत्ति है। उन्होंने इस शब्द की जगह दूसरे शब्द का उपयोग करने की मांग की है।

अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शिवराज बिश्नोई ने कहा है कि हम न्यायालय का सम्मान करते हैं। बिश्नोई संप्रदाय एक शांतिप्रिय, जीव रक्षक, पर्यावरण संरक्षण करने वाला संप्रदाय हैं। एसआई भर्ती रद्द करने से संबंधित जो भी फैसला राजस्थान उच्च न्यायालय ने दिया है, उस फैसले पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता, लेकिन, न्यायालय ने 202 पेज के फैसले में कई बार 'बिश्नोई गैंग' शब्द का इस्तेमाल किया है जो कतई उचित नहीं है, क्योंकि इस प्रकार के शब्दों से सम्पूर्ण बिश्नोई संप्रदाय की भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने कहा कि महासभा ने न्यायालय से आग्रह किया है कि 'बिश्नोई गैंग' शब्दों को इस फैसले से हटाकर पूरे बिश्नोई सम्प्रदाय की भावनाओं की रक्षा करें। वे बोले- इस संबंध में राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर के मुख्य न्यायाधीश को पत्र दिया है। फैसले में कई जगह बिश्नोई गैंग लिखा गया है। फैसले में जहां भी इस शब्द को लिखा है वहां दूसरे शब्द का उपयोग किया जाना चाहिए। शिवराज बिश्नोई ने बताया कि फैसले में बारह बार अलग अलग रेफरेंस देते हुए 'बिश्नोई गैंग' लिखा है। इन सभी जगह फैसले से ये शब्द हटाने की मांग की जा रही है क्योंकि इससे पूरे बिश्नोई समाज की छवि खराब होती है।

भीलवाड़ा शहर में चार घंटे में दो इंच और मेजा बांध पर तीन इंन बारिश हुई

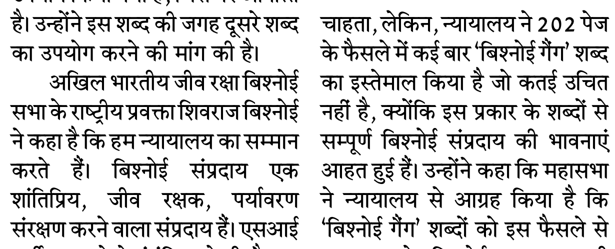

सड़कों पर पानी भर जाने से कई वाहन बंद हो गए।

- **तेज हवाओं के साथ हुई बारिश से शहर की कई सड़कें जलमग्न हो गई, वाहन चालक परेशान होते दिखाई दिये**
- **सिटी के हालात खराब हुये, चौराहों पर जाम लगा, वाहनों की कतारें लगी**

भीलवाड़ा, (निसं)। औद्योगिक नगरी भीलवाड़ा में दो दिनों से थमी बारिश का दौर शुक्रवार को फिर से शुरू हुआ। भीलवाड़ा शहर और आसपास के इलाकों में चार घंटे तक हुई जोरदार बारिश ने उमस और गर्मी से तो राहत दी, लेकिन प्रशानिक तैयारियों की भी पोल खोलकर रख दी।

शुक्रवार की सुबह आसमान में घने बादल छाने लगे और देखते ही देखते अंधेरा सा छा गया। कुछ ही देर में रिमझिम और फिर मूसलाधार बारिश का दौर शुरू हुआ जो दोपहर तक जारी रहा। तेज हवाओं के साथ बारिश का दौर वक्त के साथ साथ अपने पूरे परवान पर चढ़ा और शहर की कई सड़कें जलमग्न हो गई। इस दौरान शहर में चार घंटे में दो इंच और मेजा बांध पर तीन इंन बारिश हुई। इस झमाझम बारिश से जनजीवन प्रभावित हुआ। गंदगी से अटी नालियों के कारण शहर की सड़कों पर पानी भर जाने की वजह से कई वाहन पानी में डूबने के चलते बंद हो गए और कई मार्गों पर जाम के हालात बने। बच्चे बारिश में भीगने का लुत्फ उठाते नजर आए। बारिश से पूर्व शहर में काफी उमस थी, जिसके कारण लोग बेहाल थे। बारिश के बाद हवा में ठंडक घुल गई, जिससे शाम का मौसम बेहद खुशनुमा हो गया है। बारिश रुकने के साथ ही पर्यटक स्थलों पर लोगों की भीड़ उमड़ गई।

बारिश के साथ हालात खराब हो गए। रामधाम चौराहा पर पानी का इतना तेज बहाव था कि गाड़ियों का आवागमन रुक गया। लोग और वाहन चालक दूसरे रूट को पकड़कर निकलने की कोशिश की, लेकिन मीरा सर्कल और मेडी सिटी वाला इलाका, रिंग रोड, पुर रोड, मिर्च मंडी इलाका लबालब हो गया। गाड़ियों की कतार लगना शुरू हो गयी। अजमेर पुलिया पर जाम लगा रहा। पांडु नाला फुल होकर बहता रहा। पूरे इलाके में जल जमाव देखने को मिला।

बाढ़ नियंत्रण कक्ष जल संसाधन विभाग के अनुसार शुक्रवार शाम पांच बजे तक मेजा बांध पर 84 एमएम, सरेरी बांध पर 2.5, अरवड बांध पर 50, गंगापुर में 38, सहाडा में 39, फूलियां कलां में 12, जहाजपुर में 38, काछोला में 38, भीलवाडा में 53, हमीरगढ़ में 15 एमएम बरसात हुई।

दो गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। दीगोद पुलिस टीम ने अवैध देशी शराब के 101 पव्वों सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ग्रामीण एसपी सुजीत शंकर ने बताया कि दीगोद थाने के उपनिरीक्षक सुरेश कुमार मीणा ने मय जाप्ता चैकिंग के दौरान आम रोड़ फतेहपुर तिराहा पर एक कार में तलाशी के दौरान अवैध देशी शराब के 53 पव्वे बरामद किये। पुलिस टीम ने मौके पर आरोपी शिवराज को गिरफ्तार किया एवं माल व कार को जब्त कर लिया। वहीं दीगोद थाने के हैड कांस्टेबल सत्यनारायण ने मय जाप्ता कार्रवाई करते हुए अवैध देशी शराब के 48 पव्वों सहित हंसराज को गिरफ्तार किया।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड अकलेरा जिला झालावाड
(pwdaklera@rediffmail.com)
क्रमांकः- 434 **ई-निविदा सूचना संख्या 05/2025-26** दिनांक :- 19.08.2025
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सडक/ भवन कार्यो के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकारके एए, ए, बी, सी, श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यो हेतु ई- टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी।
निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp व http://www.pwd.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
UBN No.- 1. PWD2526WSOB10148, 2. PWD2526WSOB10149, 3. PWD2526WSOB10150 4. PWD2526WSOB10153, 5. PWD2526WSOB10154, 6. PWD2526WSOB10155 7. PWD2526WSOB10156, 8. PWD2526WSOB10157, 9. PWD2526WSOB10163 10. PWD2526WSOB10164
(डी.एस.मीणा)
DIPR/C/12289/2025 अधिशाषी अभियन्ता, सा.नि.वि. खण्ड अकलेरा

कार्यालय नगर पालिका बिजयनगर जिला ब्यावर राज.
गांधी उद्यान-ब्यावर रोड, बिजयनगर
टैलीफोन नम्बर - 01462-230051 ई-मेल :- npvijaynagar@gmail.com
ऑन लाईन निविदा सूचना संख्या 09/2025-26
नगर पालिका बिजयनगर द्वारा राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से सिविल कार्य हेतु ऑन लाईन निविदा निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रीया से वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in पर आमंत्रित की जाती है। ऑन लाईन निविदा सूचना संख्या 09/2025-2026 के कार्य संख्या 01 से 02 तक की अनुमानित लागत 29.88 लाख है। ऑन लाईन निविदाए दिनांक 01-09-2025 से 10-09-2025 समय सांय 6:00 बजे तक डाउनलोड की जाकर दिनांक 11-09-2025 को निविदा शुल्क, अमानत राशि एंव प्रोसेसिंग शुल्क की डी.डी. भौतिक रूप से समय 12:00 PM तक कार्यालय में जमा कराई जा सकती है। ऑन लाईन निविदा की ऑन लाईन निविदा खोलने की दिनांक 12-09-2025 समय प्रातः 10:00 बजे खोली जायेगी। अधिक जानकारी वेबसाईट https://sppp.raj.gov.in एवं https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती हैं।
UNB Reference No:- DLB2526A5184
राज.संवाद/सी/25/8996 अधिशाषी अधिकारी

RIICO राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट एंड इनवेस्टमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम)
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, जयपुर- 302005, फोन-0141-2227751,4593201
ई-मेल-riico@riico.co.in वेबसाइट-riico.rajasthan.gov.in
निविदा सूचना
रीको द्वारा निम्नांकित कार्यों/आपूर्ति/सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सीलबंद निविदाऐं एवं राशि रू. 2.00 लाख से अधिक की निविदाऐं ई-प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाइन निर्धारित प्रपत्र में eproc.rajasthan.gov.in पर आमंत्रित की जाती हैं:-
इकाई का नाम, UBN एवं कार्य की राशि (लाख रू. में):- ईपीआईपी सीतापुरा, जयपुर-औद्योगिक क्षेत्र प्रहलादपुरा में सड़क, फुटपाथ एवं नाली के उन्नयन का कार्य एवं नाली को ढ़कने का कार्य। RDC2526WLOB00756(750.69), RDC2526WSOB00767(4.80), अजमेर-औद्योगिक क्षेत्र केकड़ी में बुनियादी ढाँचे के उन्नयन का कार्य। RDC2526WLOB00757(509.03), RDC2526WSOB00758(173.38), RDC2526WSOB00809(170.32), उदयपुर-औद्योगिक क्षेत्र कलड़वास (विस्तार), उदयपुर में नाली निर्माण का कार्य। RDC2526WLOB00796(620.35), औद्योगिक क्षेत्र सगतपुरा भीण्डर के विकास का कार्य। RDC2526WLOB00771(823.93), RDC2526WSOB00772(221.49), नीमराना-औद्योगिक क्षेत्र ईपीआईपी नीमराना, नीमराना-प्रथम, द्वितीय, एन.आई.सी.(एम) नीमराना एवं कोलिला जोगा के संचालन और रखरखाव से सम्बन्धित नियमित कार्य। RDC2526WLOB00785(554.68), RDC2526WSOB00780(11.84), RDC2526WSOB00781(14.11), RDC2526WSOB00782(8.65), RDC2526WSOB00783(10.65), RDC2526WSOB00784(23.36), किशनगढ़-RDC2526WSOB00766(254.37), भीलवाड़ा-RDC2526WSOB00768(384.24), RDC2526WSOB00787(1.98), अलवर-RDC2526WSOB00779(355.41), RDC2526WSOB00777(154.84), RDC2526WSOB00778(167.58), RDC2526WSOB00751(9.13), RDC2526WSOB00752(9.85), RDC2526WSOB00753(101.58), RDC2526WSOB00754(89.42), RDC2526WSOB00755(10.47), सवाई माधोपुर-RDC2526WSOB00786(382.36), RDC2526WSOB00773(15.63), RDC2526WSOB00774(163.09), RDC2526WSOB00775(29.12), RDC2526WSOB00776(22.65), बांसवाड़ा-RDC2526WSOB00802(269.82), RDC2526WSOB00803(227.80), RDC2526WSOB00764 (66.66), RDC2526WSOB00765(6.41), जयपुर(दक्षिण) -RDC2526WSOB00761(1.93), RDC2526WSOB00762(1.50), RDC2526WSOB00763(17.70), धौलोठ- RDC2526WSOB00769(16.48), RDC2526WSOB00770(5.68), जोधपुर-RDC2526WSOB00788(7.00), RDC2526WSOB00789(19.02), RDC2526WSOB00793(4.60), RDC2526WSOB00794(9.17), मण्डोर- RDC2526WSOB00791(43.01), RDC2526WSOB00795(6.92), भरतपुर-RDC2526WSOB00797(5.84), RDC2526WSOB00798(2.32), RDC2526WSOB00800(41.62), राजसमंद-RDC2526WSOB00805(7.98), RDC2526WSOB00804(9.36), आबूरोड़-RDC2526WSOB00806(5.34), RDC2526WSOB00807(6.35), RDC2526WSOB00808(18.03), सलाहकार (ए.एण्ड.एम.) रीको, उद्योग भवन, जयपुर- RDC2526GSOB00759(4.95),
कुल कार्यों की संख्या-54
निविदा का विस्तृत विवरण, नियम इत्यादि एवं भविष्य में निविदा में किसी प्रकार के संशोधन/तिथि बढ़ने की जानकारी हेतु वेबसाइट riico.rajasthan.gov.in/ www.eproc.rajasthan.gov.in/ www.sppp.rajasthan.gov.in को देखें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: महाप्रबंधक (सिविल), फोन- 0141-4593243
Raj.Samwad/C/25/9092

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड-चाकसू
क्रमांकः 978 दिनांकः 21.08.2025
ई-टेन्डिरिंग सूचना संख्या 12/2025-26
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्य हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp व www.sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
FINANCE (G&T) DEPARTMENT NOTIFICATION Jaipur, October 22, 2021 (75A. Additional Performance Security. (1) In addition to Performance Security as specified in rule 75, an Additional Performance Security shall also be taken from the successful bidder in case of unbalanced bid. The Additional Performance Security shall be equal to fifty percent of Unbalanced Bid Amount. The Additional Performance Security shall be deposited in lump sum by the successful bidder before execution of Agreement. The Additional Performance Security shall be deposited through e-Grass, Demand Draft, Banker's Cheque, Government Securities or Bank Guarantee.)

निविदा का कार्य	Various Work in PWD Division-Chaksu, Jaipur (3 Nos)
कुल राशि (रूपयों में)	रुपये 189.24 लाख
कुल धरोहर राशि (रूपयों में)	अनुमानित लागत का 2 प्रतिशत
निविदा आवेदन / डाउनलोड करने की तारीख	शनिवार, 23 अगस्त, 2025 प्रातः 9.30 बजे से सोमवार, 01 सितम्बर 2025 सांय 6.00 बजे तक
निविदा जमा कराने की तारीख	शनिवार, 23 अगस्त, 2025 प्रातः 9.30 बजे से सोमवार, 01 सितम्बर 2025 सांय 6.00 बजे तक
निविदा खोलने की तारीख	बुधवार, 03 सितम्बर, 2025 को सायः 3.00 बजे
प्रोसेसिंग शुल्क एवं निविदा शुल्क जमा कराने की प्रक्रिया	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6 (5) / वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आनलाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क 8658-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क 0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि 8443-00-108-00-00 ऑफिस आई.डी. 32826

UBN No :- (1) PWD2526WSOB10421 (2) PWD2526WSOB10422 (3) PWD2526WSOB10423
(राजीव जैन) अधिशाषी अभियन्ता
DIPR/C/12409/2025 सा.नि.वि. खण्ड-चाकसू (जयपुर)

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति (फल-सब्जी) बीकानेर
क्रमांक :- राजकाज 17446052 दिनांक :- 28/08/2025
ई-बोली आमंत्रण सूचना 02/2025-26
कृषि उपज मण्डी समिति (फल-सब्जी)बीकानेर द्वारा मण्डी प्रांगण में सफाई एवं सुरक्षा व्यवस्था के संचालन के लिए उपापन ठेका पद्वति द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए अनुभवी फर्मो/ठेकेदारों/सद्भावी व्यवहारियों से ई-नाम परियोजना हेतु ई-टेण्डरिंग के अन्तर्गत ऑनलाईन बोली आमंत्रण सम्बन्धित विवरण एवं शर्तो को वेबसाइट http://sppp.rajasthan.gov.in तथा www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित ठेका राशि (लाखों में)	बिड डाउन-लोड करने की दिनांक	ऑनलाईन बिड अपलोड की दिनांक	ऑनलाईन बिड खोलने की दिनांक	ई-प्रोसेसिंग शुल्क	बोली प्रतिभूति राशि रू.	निविदा शुल्क
1	मण्डी प्रांगण में सफाई व्यवस्था	18.00	08.09.2025 प्रातः 10:00 बजे तक	08.09.2025 दोपहर 12:00 बजे तक	09.09.2025 दोपहर 03:00 बजे से	500 रू.	36,000	1180 रू.
2	मण्डी प्रांगण में सुरक्षा व्यवस्था	18.00	08.09.2025 प्रातः 10:00 बजे तक	08.09.2025 दोपहर 12:00 बजे तक	09.09.2025 दोपहर 03:00 बजे से	500 रू.	36,000	1180 रू.

बोली की शर्तें:- कृषि उपज मण्डी समिति (फल-सब्जी) बीकानेर के मुख्य मण्डी प्रांगण में विभिन्न मदों हेतु रजिस्टर्ड फर्मो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेंट (eproc.rajasthan.gov.in) के माध्यम से ऑनलाईन निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। बोली सम्बन्धित नियम/शर्ते किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय में प्राप्त कर सकतें है। बोली दस्तावेजों को राज्य उपापन पोर्टल http://sppp.rajasthan.gov.in (UBN No.- DAM2526SLOB00721, DAM2526SLOB00722 पर भी देखा जा सकता है। तकनीकी बोली दस्तावेज के साथ बोली प्रपत्र शुल्क, प्रतिभूति राशि का डी.डी. एव ई-टेण्डरिंग के लिए ई प्रोसेसिंग शुल्क का चालान बोली जमा करने की निर्धारित दिनांक व समय तक कार्यालय में जमा करवाया जाना अनिवार्य है एवं देर से प्राप्त होने वाले दस्तावेजों/शुल्क को स्वीकार नहीं किया जावेगा। बोली प्रपत्र शुल्क एवं प्रतिभूति राशि के अभाव में ई-निविदा पर कोई विचार नही किया जायेगा।
सचिव
राज.संवाद/सी/25/9019 कृषि उपज मण्डी समिति (फल-सब्जी) बीकानेर

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD DIVISION DHOLPUR
File No. 1600-1613 Date 21.08.2025
Notice Inviting Bid
NIB Code PWD2526A2798 UBN No. PWD2526WSOB10395, UBN No. PWD2526WSOB10400, UBN No. PWD2526WSOB10406, UBN No. PWD2526WSOB10411
Bids For NIT No. 05/2025-26 Misc. Work of PWD Division Dholpur of subject matter(s) of Procurement are Invited from interested bidders date 25.08.2025 11.00 AM to Date 02.09.2025 upto 6.00 Noon. Other particulars of the id may be on the procurement portel (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppps.raj.nic.in) of the state; and PWD departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 92.68 Lacs visited
(Naresh chand Meena) Executive Engineer
DIPR/C/12393/2025 PWD Division Dholpur

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सानिवि नगर खण्ड बीकानेर
क्रमांक-1406 दिनांक 19/8/25
Notice Inviting Bid : 15 / 2025-26
Bid for the "Various MLA LAD and Other Works" are invited from interested bidders from 19.08.2025 [09:30 AM] to 30.08.2025 [06:00 PM] & Open date 01.09.2025 [11:00 AM], other particulars of the bid may be visited on the procurement & portal http://www.pwd.rajasthan.gov.in&eproc.rajasthan.gov.in & http://sppp.rajasthan.gov.in of the state and departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 142.62 Lacs
UBN No. :- PWD2526 WS0B10205, PWD2526 WS0B10206, PWD2526WS0B10207, PWD2526W50810208, PWD2526WS0B10209, PWD2526WSOB10213, PWD2526WSOB10215, PWD2526WSOB10217, PWD2526WSOB10218
Executive Engineer
DIPR/C/12280/2025 PWD City Division, Bikaner

कार्यालय नगर परिषद बारां (राज.)
E-Mail : nagarpalikabaran@gmail.com स्टेशन रोड़, बारां Phone : 07453-230106
क्रमांक : नपबा/निर्माण/2025/4532-34 दिनांक : 28.08.2025
ई-टेण्डर सूचना संख्या : निर्माण 48/2025-26
नगर परिषद बारां द्वारा राजस्थान सरकार के अभियांत्रिकी विभागो में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदको अथवा पीडब्ल्यूएफएआर रूल्स के अन्तर्गत पात्र संवेदको से विभिन्न निर्माण कार्यो के लिये निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन निविदा आमन्त्रित की जाती है। संवेदक निविदा प्रपत्र व विवरण पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखें। कार्यो की लागत 11.49 लाख रूपये से 32.50 लाख रूपये तक है तथा UBN No. निम्नानुसार है :-
1. DLB2526WSOB16060, 2. DLB2526WSOB16062, 3. DLB2526WSOB16065
राज.संवाद/सी/25/9072 आयुक्त, नगर परिषद बारां

नगर निगम जोधपुर-दक्षिण
क्रमांकः- एफ.10/2025-26/11147 दिनांकः- 28.08.2025
:: अल्पकालिन ई-निविदा सूचना ::
(UB NO. DLB2526WSOB16088)
नगर निगम जोधपुर-दक्षिण की ओर से विभिन्न सिविल कार्यो हेतु ऑनलाईन ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा से संबंधित कार्यो की विस्तृत जानकारी, निविदा की शर्ते आदि http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in एवं https://lsg.rajasthan.gov.in/mcjs पर देखी जा सकती है।
महापौर नगर निगम जोधपुर-दक्षिण आयुक्त नगर निगम जोधपुर-दक्षिण
राज.संवाद/सी/25/9080

कार्यालय उप वन संरक्षक, जयपुर
ग्रास फार्म नर्सरी, खातीपुरा रोड, जयपुर
ई-निविदा विज्ञिप्त 10/2025-26
इस कार्यालय के राजकाज नम्बर 17120514 दिनांक 11.08.2025 द्वारा रेंज दूदू अधीन सॉभर लेख, जयपुर में इन्टरप्रिटेशन सेन्टर निर्माण कार्य राशि रू0 21200000/- की ई-निविदा संख्या-10 जारी की गयी है। उक्त ई-निविदा विज्ञिप्त का विवरण एवं समस्त शर्ते वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, And www.sppp.raj.nic.inपर देखा जा सकता है।
DIPR/C/12534/2025 उप वन संरक्षक जयपुर

हनुमान बेनीवाल के आरोप साबित हो जाएं तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा : मंत्री किरोड़ीलाल

गौरतलब है कि गुरूवार को एक टीवी चैनल के लाइव डिबेट में बेनीवाल ने किरोड़ीलाल मीणा पर ब्लैकमेलिंग का धंधा करने, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से 200 करोड़ रु. लेने जैसे गंभीर आरोप लगाए थे, वहीं किरोड़ीलाल ने भी हनुमान बेनीवाल को लुटेरा और चोर बताया था

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा को हाईकोर्ट द्वारा रद्द किए जाने के बाद गुरूवार को एक टीवी चैनल के लाइव डिबेट में मंत्री किरोड़ीलाल और सांसद हनुमान बेनीवाल के बीच तू–तू–मैं–मैं और आरोपों की छींटाकशी हुई थी। जहां बेनीवाल ने किरोड़ीलाल मीणा पर ब्लैकमेलिंग का धंधा करने, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से 200 करोड़ रु. लेने जैसे गंभीर आरोप लगाए थे, वहीं किरोड़ीलाल ने भी बेनीवाल को लुटेरा व चोर बताया था।

इन आरोपों और छींटाकशी के दूसरे दिन शुक्रवार को मंत्री किरोड़ीलाल ने मीडिया से बातचीत में बेनीवाल के तमाम आरोपों को नकारा। उन्होंने कहा

- **मीडिया से बातचीत करते हुए किरोड़ीलाल ने कहा कि, ''अगर मैंने बेनीवाल को कुछ गलत कहा हो तो माफी मांगता हूं। मैंने कभी राजनीति में गलत काम नहीं किया। नकली खाद-बीज बनाने वाली कंपनियों पर छापेमारी से अशोक गहलोत, डोटासरा और बेनीवाल को झटका क्यों लगा है, यह मेरी समझ से परे है।''**
- **किरोड़ीलाल ने कहा कि ''आर.ए.एस. भर्ती परीक्षा भी रद्द होनी चाहिए, आर.पी.एस.सी. के पूर्व तीनों अध्यक्षों पर भी कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए। फर्जी तरीके से बने आरएएस को भी घर भेजा जाये।''**

कि पेपरलीक मामले को लेकर मैंने पिछली कांग्रेस सरकार में सड़क पर संघर्ष किया। इस भर्ती को रद्द करने की मांग, सरकार भाजपा की बनने के बाद भी जारी रही है। मैंने पहले ही सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा में कौन–कौन शामिल है और कैसे पेपर लीक हुआ, इसकी पूरी जानकारी मीडिया और एसओजी को बता दी थी। सब इंस्पेक्टर भर्ती के साथ ही आरएएस भर्ती में भी पेपर लीक और फर्जीवाड़ा हुआ, मेरी सरकार से मांग है कि उसे भर्ती को भी रद्द किया जाए और फर्जी तरीके से बने आरएएस को घर भेजा जाय। उन्होंने आरपीएससी के पूर्व तीन चेयरमनों पर भी पेपर लीक को लेकर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि उन सहित सदस्य रहे शिव सिंह राठौड़ पर भी कार्रवाई होनी चाहिए।

नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल से हुई बहस और बेनिवाल के उन पर लगाए भ्रष्टाचार के आरोपों पर कहा कि उनके ऊपर लगाए गए कोई भी आरोप अगर वे साबित कर दे तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा। मैने कभी भी राजनीति में इस तरह काम नहीं किए हैं । यह सभी जानते हैं। कृषि मंत्री रहते हुए नकली खाद और बीज पर कार्रवाई की और केंद्र सरकार ने भी उसके अनुरूपी नकली खाद्य और बीज बनाने वाले कंपनियां पर सख्त कदम उठाए हैं। लेकिन इससे पूर्व सीएम अशोक गहलोत, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और हनुमान बेनीवाल को क्यों झटका लगा है, यह मेरी समझ से परे है। मीडिया के सवाल पर कहा कि इसके बारे में वह इनसे पूछे। उन्होंने कहा कि हनुमान बेनीवाल के साथ बहस में अगर उन्होंने कुछ गलत कह दिया तो वह उसके लिए भी माफी मांगते है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से शुक्रवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में भारत में ब्राजील के राजदूत केनेथ फेलिक्स दा नोब्रेगा ने शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान उन्होंने शर्मा से औद्योगिक निवेश और विकास के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

2 हजार मेगावाट सोलर प्रोजेक्ट के लिए भूमि आवंटन की मंजूरी

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अक्षय ऊर्जा के विकास को गति देने के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। राज्य सरकार ने राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड को उपनिवेशन तहसील नाचना-1 के ग्राम बोडाना में 2 हजार मेगावाट क्षमता वाले सोलर पार्क की स्थापना हेतु कुल 3999.98 हेक्टेयर राजकीय भूमि आवंटित करने की स्वीकृति प्रदान की है।यह भूमि राजस्थान भू-राजस्व (नवीनीकृत ऊर्जा स्त्रोतों पर आधारित शक्ति संयंत्र स्थापित करने के लिए भूमि आवंटन) नियम-2007 एवं विभागीय प्रावधानों

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अक्षय ऊर्जा के विकास को गति देने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिया**

के तहत सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए कीमतन आवंटित की गई है। इस निर्णय से राज्य में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में निवेश और उत्पादन क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी। राजस्थान को हरित ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

एल.आई.सी. 31 अगस्त तक मनायेगा राष्ट्रीय खेल दिवस

जयपुर (कासं)। हॉकी के दिग्गज मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में 29 से 31 अगस्त तक भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन किया जायेगा। इस दौरान देशभर के विभिन्न एलआईसी कार्यालय कर्मचारियों को अपनी दिनचर्या में शारीरिक फिटनेस को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इनडोर व आउटडोर खेल गतिविधियों का आयोजन करेंगे। इस समारोह के एक भाग के रूप में एलआईसी कर्मचारियों ने फिट इंडिया फिटनेस की शपथ ली।

सोलहवीं राजस्थान विधान सभा का चतुर्थ सत्र सोमवार से शुरू होगा

स्पीकर देवनानी ने विधानसभा सत्र की तैयारियों की जानकारी ली

जयपुर । सोलहवी राजस्थान विधान सभा का चतुर्थ सत्र सोमवार एक सितम्बर से होगा। विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने शुक्रवार को विधानसभा में विधानसभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में सत्र से संबंधित विभिन्न तैयारियों की जानकारी ली। देवनानी ने सत्र से संबंधित आवश्यक व्यवस्थाओं के लिए विधान सभा अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए हैं।

विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि सभी अधिकारीगण अपनी शाखा से संबंधित कार्यों को मौके पर जाकर देखे और व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करें। देवनानी ने कहा कि सदन की सुचारु व्यवस्था के लिए विधान सभा के अधिकारी और कर्मचारीगण सक्रिय रहें। आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। अधिकारीगण नियमों की जानकारी के साथ अपडेट रहे।विधान सभा अध्यक्ष देवनानी को विधान सभा के प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा ने विधान सभा की सामान्य, प्रश्न, सदन, विधान, विविध, सम्पादन, सुरक्षा,

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने शुक्रवार को विधानसभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर मानसून सत्र की तैयारियों पर चर्चा की।

एनआईसी, पुस्तकालय, शोध सन्दर्भ और जनसम्पर्क शाखा से संबंधित विभिन्न जानकारियों से अवगत करवाया।

देवनानी ने निर्देश दिए की प्रश्नों की लॉटरी और प्रश्नों तालिका का मुद्रण नियत समय पर करवाया जाना सुनिश्चित किया जावे। देवनानी ने सदन शाखा के अधिकारियों से विधायकगण को आने वाली सभी तकनीकी कठिनाइयों को दूर किये जाने के लिए कहा। देवनानी ने बताया कि नेवा वेबसाइट पर विधायकगण ऑनलाइन प्रश्न अपलोड कर रहे है। उन्होंने बताया कि चतुर्थ सत्र में लगभग 70 प्रतिशत प्रश्न विधान सभा को ऑनलाइन प्राप्त हुए है। बैठक में विधान सभा सत्र के दौरान सुरक्षा से संबंधित विभिन्न व्यवस्थाओं की भी समीक्षा की गई। विधान सभा अध्यक्ष देवनानी ने विधान सभा परिसर में मीडिया के छायाकारों और कैमरामैनों के लिये की गई व्यवस्था को बेहतर बनाये जाने के लिए भी आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

'बजट घोषणाओं का लाभ प्रत्येक पात्र किसान तक पहुंचे'

जयपुर । कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोडी लाल ने कहा कि विभागीय अधिकारी बजट घोषणाओं को प्लानिंग के साथ तय समयावधि में पुरा करते हुए अधिक से अधिक पात्र किसानों को लाभ पहुंचाएं। जिससे उत्पादन में वृद्धि होगी और हमारे प्रदेश के किसान आर्थिक रूप से मजबूत बन सकेंगे। उन्होंने बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतने और भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टोलरेंस अपनाए जाने के निर्देश प्रदान किए। डॉ. किरोडी लाल शुक्रवार को कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर के श्याम ऑडिटोरियम में कृषि विभाग के विभागीय अधिकारियों के साथ राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक ले रहे थे। इस दौरान उन्होंने सभी जिलों के संयुक्त निदेशकों व अतिरिक्त निदेशक (विस्तार) को विभागीय योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के निर्देश दिए और कहा कि बजट घोषणाओं की निरंतर मॉनिटरिंग की जा रही है, ऐसे में सभी अधिकारीगण पूर्ण ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ काम करते हुए योजनाओं को धरातलीय रूप प्रदान करें। उन्होंने बैठक में जिलेवार उर्वरकों की मांग, आपूर्ति, खपत एवं उपलब्धता, रबी सीजन हेतु उर्वरकों की संभावित मांग सहित आपूर्ति, खपत एवं उपलब्धता की कार्य योजना पर चर्चा की।

सरकारी योजनाओं से सशक्त होंगी राजीविका समूह की महिलाएं

विभिन्न विभागों की योजनाओं को स्वयं सहायता समूह नेटवर्क से जोड़ने पर बनी सहमति

राजीविका की राज्य मिशन निदेशक नेहा गिरी की अध्यक्षता में शुक्रवार को उच्च-स्तरीय कन्वर्जेन्स बैठक आयोजित की गई।

जयपुर । राजस्थान की ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ उन तक पहुंचाने के लिए अब राज्य के सभी विभाग मिलकर काम करेंगे। इसके लिए शुक्रवार को राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद् (राजीविका) द्वारा शासन सचिवालय में राजीविका की राज्य मिशन निदेशक नेहा गिरी की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय कन्वर्जेन्स बैठक का आयोजन किया गया।

राज्य मिशन निदेशक नेहा गिरी ने सभी विभागों को समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए, ताकि राजस्थान की ग्रामीण महिलाओं को अधिक से अधिक सरकारी योजनाओं से जोड़कर उन्हें सशक्त बनाया जा सके।

राजीविका परियोजना निदेशक प्रीति सिंह ने स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की संरचना और उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। राज्य परियोजना प्रबंधक नीरू तुलसीराम मीना ने राजीविका के अंतर्गत संचालित सामाजिक समावेश एवं सामाजिक विकास की गतिविधियों, स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता, जेंडर, समावेशी आजीविका योजना, वीपीआरपी एवं दिव्यांगजन समूह आदि की जानकारी दी, जो महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

बैठक में पंचायतीराज विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, पुलिस और सामाजिक न्याय विभाग सहित कुल 13 विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा लिया। सभी विभागों ने अपनी महिला-केंद्रित योजनाओं को राजीविका के एसएचजी नेटवर्क के माध्यम से प्राथमिकता के आधार पर जोड़ने पर सहमति जताई। इस प्रयास में यूनिसेफ, साईटसेवर्स और द नज जैसी सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार रखे।

जम्मू कश्मीर के 108 दिव्यांगों को नि:शुल्क उपकरण वितरित किए

जयपुर। जम्मू-कश्मीर के सीमान्त जिलों में द्विव्यांगों को राहत पहुँचाने के लिए विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) और भारतीय सेना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित शिविर में 108 विकलांगों को नि:शुल्क लाभान्वित किया गया।

कश्मीर घाटी के कुपवाड़ा के चक कीघम कस्बे में सेना की चक कीघम बैटेलियन के सहयोग से इस शिविर में ट्राईसाईकिलें, व्हील चेयर, बैसाखियाँ, श्रवण यंत्र भी नि:शुल्क उपलब्ध कराए गए। बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता ने बताया कि सेना के साथ बी.एम.वी.एस.एस. समय-समय पर

- **भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति ने भारतीय सेना के सहयोग से लगाया शिविर**
- **कैंप में दिव्यांगों को ट्राईसाईकिलें, व्हील चेयर, बैसाखियाँ और श्रवण यंत्र बांटे**

जम्मू कश्मीर को दूरदराज क्षेत्रों में रह रहे ऐसे लोगों को जिनका दुर्घटना, बीमारी और गोलाबारी के कारण अंग कट गए थे, उन्हें इस शिविर में जाँच के बाद नि:शुल्क कृत्रिम अंग और अन्य उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं। लाभार्थियों में ऐसे पुरूष और महिला शामिल थे, जो वर्षो से दूरदराज क्षेत्रों में रहने के कारण कृत्रिम अंग और उपकरणों से वंचित थे। लेकिन विशेष शिविर के बाद अब वह जयपुर फुट के लगवाने के बाद चलने-फिरन लगे है।

इस शिविर का संचालन बी.एम.वी.एस.एस. की श्रीनगर इकाई के लतीफ पंडित के देखरेख में लगा था। सेना द्वारा ही विकलांगों को चिन्हित करने और उन्हें लाभ पहुँचाने की पहल की गई। शिविर में आए महिला-पुरूषों ने सेना और बी.एम.वी.एस.एस. का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कई लोगों को कृत्रिम अंग प्राप्त करने के बाद जीविकोपार्जन करना आसान हो जाएगा।

विधानसभा की अधिकांश विधायी प्रक्रियाएं की गई हैं ऑनलाइन

जयपुर । विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि सोलहवीं राजस्थान विधान सभा के चतुर्थ सत्र से ध्यानाकर्षण प्रस्ताव, विशेष उल्लेख प्रस्ताव, स्थगन प्रस्ताव और पर्ची संबंधी अधिकांश विधायी प्रक्रियाओं को ऑनलाइन किया गया है। यह सभी प्रस्ताव नेवा प्लेटफार्म पर राजस्थान विधान सभा द्वारा ऑनलाइन ही स्वीकार किये जा रहे है। उन्होंने कहा कि विधायकगण की विधायी भूमिकाओं में कोई बदलाव नहीं किया गया है। विधायी कार्यों को ऑनलाइन किये जाने की सूचना बुलेटिन के माध्यम से 18अगस्त को विधायकगण को दे दी गई है। देवनानी ने कहा कि राजस्थान विधान सभा में विधायी प्रक्रियाओं की ऑनलाइन व्यवस्था प्रारम्भिक स्तर पर है। ऐसी स्थिति में इस व्यवस्था में कुछ तकनीकी कठिनाइया आ सकती है। उन्होंने कहा कि इससे विधायकगण परेशानी महसूस ना करें। विधान सभा सचिवालय तथा नेवा की टीम विधायकगण के लिये ऑनलाइन प्रक्रिया की कठिनाईयों को दूर करने के लिये सतत रूप से कक्ष संख्या 733 में उपलब्ध है। विधायकगण ऑनलाइन प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिये नेवा सेवा केन्द्र में सम्पर्क कर सकते है।

दो वाहन चोर पुलिस के हत्थे चढ़े

जयपुर । करणी विहार थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले दो वाहन चोरों को धर-दबोचा है। पुलिस ने आरोपियों के पास से एक चोरी की बाइक भी बरामद की है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित नशा करने के आदि है। जो अपने मौज-शौक के लिए वाहन चोरी की वारदात करते है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) हनुमान प्रसाद ने बताया कि करणी विहार थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले वाहन चोर 31 वर्षीय किशन लाल बैरवा निवासी मालपुरा जिला टोंक हाल करणी विहार जयपुर और 39 वर्षीय राकेश निवासी गोविंद नगर जिला मथुरा (यूपी) हाल करणी विहार जयपुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि दोनों ही आरोपित नशा करने के आदि है और अपने शौक-मौज के लिए दिन में आवासीय कॉलोनियों में घूम कर सूने मकानों और भवनों के बाहर खड़े दुपहिया वाहनों की रेकी करते और फिर मौका पाकर वाहन चुरा लेते।

महापौर डॉ.सौम्या की पहल पर स्वच्छता योद्धाओं ने सर्वाइकल कैंसर से बचाव के उपाय और वैक्सीनेशन का महत्व जाना

ग्रेटर निगम जयपुर के मुख्यालय पर सर्वाइकल कैंसर से बचाव व वैक्सीनेशन के महत्व पर कार्यशाला हुई, जिसमें डॉक्टर्स ने लोगों की भ्रांतियां दूर कीं

जयपुर । नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर की पहल पर शुक्रवार को नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय पर स्वच्छता योद्धाओं के लिए सर्वाइकल कैंसर से बचाव एवं वैक्सीनेशन के महत्व की जानकारी देने हेतु एक विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें कैसर सर्जन डॉ. नैना अग्रवाल ने सभी स्वच्छता योद्धाओं को इस बीमारी के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए इससे बचाव तथा वैक्सीनेशन के लाभ के बारे में जागरूक किया।

गौरतलब है कि 15-16-17 मार्च 2025 को शक्ति वंदन 2.0 के तहत महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर की पहल पर लगभग 500 से अधिक बालिकाओं का नि:शुल्क टीकाकरण किया गया था। जिसकी तर्ज पर शुक्रवार को नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय पर कार्यशाला आयोजित की गई तथा स्वच्छता योद्धाओं को एसएमएस अस्पताल की कैंसर सर्जन डॉ. नैना अग्रवाल द्वारा

ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने शुक्रवार को स्वच्छता योद्धाओं को सर्वाइकल कैंसर से बचाव और वैक्सीनेशन के महत्व के बारे में जानकारी दी।

गर्भाशय ग्रिवा के कैंसर के टीकाकरण की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में बताया गया।

डॉ. नैना अग्रवाल ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर (गर्भाशय के मुंह का कैंसर) जिसे टीके एवं सर्वाइकल कैंसर स्क्रिनिंग के जरिये रोका जा सकता है। यह एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) के संक्रमण से फैलता है। जिसका बचाव एक मात्र एचपीवी वैक्सीन एवं स्क्रिनिंग है। यह वैक्सीन 9 से 14 वर्ष की बालिकाओं

- **महापौर ने 15 से 17 मार्च तक करीब 500 बच्चियों को लगवाया था मुफ्त टीका**

को दो डोज एवं 15 से 26 वर्ष की महिलाओं को तीन डोज लगाई जाती है। कार्यशाला में डॉ. सुदीप्ती अरोड़ा, डॉ. निधी गोयल ने भी सर्वाइकल कैंसर के बारे में भी अपने विचार साझा किये।

महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने इस अवसर पर कहा कि परिवार की मुख्य धुरी महिला होती है। सशक्त राष्ट्र, समृद्ध समाज सशक्त नारी से ही संभव है, इसलिए स्वस्थ और सशक्त नारी समाज की आवश्यकता है। इसलिये यह नि:शुल्क टीकाकरण रजिस्ट्रेशन के माध्यम से स्वच्छता योद्धाओं की 9 से 14 वर्ष की बालिकाओं को किया जा रहा है।

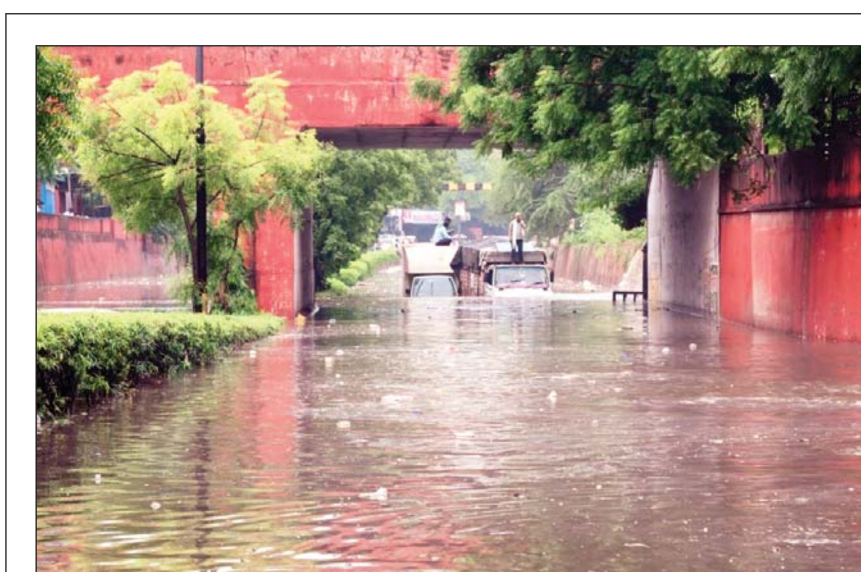

राजधानी जयपुर में शुक्रवार को रूक-रूककर शाम तक बारिश का दौर चला। इस दौरान मालवीय नगर इलाके के अंडरपास में बारिश का पानी भर गया। कई वाहन चालकों ने लापरवाही दिखाते हुए इस पार करने की कोशिश की, परंतु अंडरपास की गहराई में उतरते ही वाहन बंद पड़ गए, जिन्हें लोगों ने बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला।

स्टैंडबाय खिलाड़ी मेन टीम के साथ दुबई नहीं जाएंगे। ये फैसला टीम मैनेजमेंट के कम लोगों के साथ सफर करने की प्राथमिकता को दर्शाता है। जब रिप्लेसमेंट की जरूरत पड़ेगी तो स्टैंडबाय खिलाड़ियों को दुबई भेज दिया जाएगा। - अजीत अगरकर

भारतीय चीफ सेलेक्टर, रिजर्व खिलाड़ियों के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

आकिब नबी

दलीप ट्रॉफी में एक के बाद एक करके कई रिकॉर्ड बन रहे हैं साथ ही कई खिलाड़ी इतिहास भी रच रहे हैं। वहीं अब इस लिस्ट में आकिब नबी का नाम भी जुड़ गया है। जिन्होंने इस टूर्नामेंट में 4 गेंदों पर 4 विकेट अपने नाम करके इतिहास रच दिया है। आकिब ने हैट्रिक पूरी कर दिग्गज कपिल देव के क्लब में एंट्री कर ली है। जम्मू-कश्मीर के बारामूला के इस 28 वर्षीय खिलाड़ी ने नॉर्थ जोन और ईस्ट जोन के क्वार्टर फाइनल मुकाबले में अपने नाम 4 विकेट किए। आकिब ने ये 53वें ओवर की आखिरी तीन गेंदों पर तीन विकेट लेकर ईस्ट जोन की बल्लेबाजी को तहस-नहस कर दिया।

क्या आप जानते हैं ?... रोहित शर्मा ने एशिया कप में सबसे ज्यादा मैच खेले हैं, उन्होंने वनडेऔर टी20 मिलाकर 37 मैच खेले हैं।

राज्य स्तरीय सीनियर वीमेन टी 20 चैलेंजर ट्रॉफी

जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने मैच से पूर्व स्टेडियम पहुंच खिलाडियों से की मुलाकात

जयपुर, 29 अगस्त। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार राजस्थान क्रिकेट संघ के तत्वाधान में जयपुर में खेली जा रही राज्य स्तरीय सीनियर महिला टी 20 चैलेंजर टॉफी व राज्य स्तरीय सीनियर चैलेंजर ट्रॉफी (मल्टी डेज) के आज खेल गए मैच का परिणाम व स्कोर :-

राज्य स्तरीय सीनियर वीमेन टी 20 चैलेंजर ट्रॉफी के आज सवाई मान सिंह स्टेडियम पर खेले गए मैचों का परिणाम :- **पहला मैच** टीम ए - टीम सी (टीम सी 8 विकेट से जीती), टीम ए पारी 91/6, टीम के लिए आरजू 26 , तनिका शर्मा 18, बबिता 16 रन का योगदान दिया। टीम सी की गेंदबाज स्नेहा 4/2, अक्षिता, शानू व वंशिका प्रत्येक 1-1 विकेट। टीम सी पारी 92/2, टीम के लिए तनूजा वैष्णव नाबाद 35, अर्चना सैनी नाबाद 33, पूनम 18 रनो का योगदान। टीम ए की गेंदबाज सोनम , उषा प्रत्येक 1 -1 विकेट।

दूसरा मैच टीम बी - टीम डी (टीम डी 7 विकेट से जीती), टीम बी पारी 76/7, टीम के लिए सिद्धि शर्मा नाबाद 25, भाविनी भारद्वाज 12, अर्चना 12 रनो का योगदान दिया। टीम डी की गेंदबाज ज्योति सैनी 6 /2 , वृंदा शर्मा 9/1 व यशस्वी कट्टा 14/1 विकेट, टीम डी पारी 77/3, टीम के लिए मेघा सैनी 26 व प्रिया यादव नाबाद 21 रनो का योगदान। टीम बी की गेंदबाज भूमिका व अनुष्का प्रत्येक 1-1 विकेट। राज्य स्तरीय सीनियर चैलेंजर ट्रॉफी (मल्टी डेज) पहले दिन का स्कोर के एल सैनी स्टेडियम टीम एफ - टीम जी, टीम एफ पारी 158/6, टीम के लिए मुकुल चौधरी नाबाद 42, सचिन शर्मा 38, कन्हैया 35 व रजत चौधरी 20 रन। टीम जी की गेंदबाज दीपक चौधरी 53/3, दीपेंद्र 32/2 व पायलट सिंह 44/1 विकेट।

जयपुरिया ग्राउंड टीम एच् - टीम ई। टीम एच् पारी 142/3, टीम के लिए भारत शर्मा नाबाद 47, शुभम पटवाल नाबाद 51 व अर्जुन 35 रन। टीम ई के गेंदबाज सलाऊद्दीन 41/2 व विशाल 26/1 ।

अनंतम ग्राउंड टीम बी - टीम सी। टीम बी पारी 40/2, टीम के लिए आदित्य लूणा नाबाद 24 रन, टीम सी के गेंदबाज हिमांशु राणा 15 /1 विकेट।

राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता का उद्धघाटन

कोटा, 29 अगस्त। राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ एवं कोटा जिला बॉल बैडमिंटन संघ के संयुक्त तत्वाधान में 8 सीनियर राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 का आयोजन दिनांक 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक महाराव उम्मेद सिंह स्टेडियम, कोटा में किया जा रहा है। प्रतियोगिता का उद्धघाटन भारतीय जनता पार्टी के कोटा दक्षिण से विधायक संदीप शर्मा द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कोटा दक्षिण,विधायक संदीप शर्मा ने 8 सीनियर राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 में पधारे खिलाडियों से परिचय प्राप्त किया। अपने उद्धघाटन भाषण में खिलाड़ियों को मार्गदर्शन प्रदान किया एवं प्रतियोगिता के उद्धघाटन की घोषणा की। प्रतियोगिता का उद्धघाटन लोकसभा के स्पीकर ओम बिरला द्वारा किया जाना था परन्तु अति आवश्यक कार्य की वजह से वो नहीं आ सकें। उन्होंने खिलाडियों को बधाई सन्देश भिजवा कर उत्साह वर्धन किया। राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ के महासचिव शौकत अली मंसूरी के अनुसार 8 सीनियर राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 में विभिन्न जिलों के लगभग 500 खिलाडी एवं ऑफिशल्स भाग ले रहे है। उदघाटन समारोह के बाद बारिश के कारण आज पुरुष वर्ग में जोधपुर और चितौड़गढ़ के बीच खेला गया जिसमे चित्तौड़गढ़ ने जोधपुर को 35-19 , 35-18 से हराया और दूसरे मैच में दौसा ने बारां को 35-11, 35-12 के अंतर से हराया। प्रतियोगिता का समापन 31 अगस्त को किया जायेगा।

रॉयल राजस्थान ने राजस्थान के सांभर के 15 गांवों में जीवन को बदला

जयपुर, 29 अगस्त। राजस्थान रॉयल्स की सामाजिक इक्विटी शाखा रॉयल राजस्थान फाउंडेशन को अपनी प्रमुख जलवायु लचीला पहल-जल तक पहुंच द्वारा लाई गई उल्लेखनीय प्रगति और जमीनी परिवर्तन को साझा करने पर गर्व है, जिसे 2020 से राजस्थान के सांभर ब्लॉक के 15 गांवों में लागू किया जा रहा है। ग्राम चेतन केंद्र के साथ साझेदारी में कार्यान्वित और वर्षों से मुथूट पप्पचन फाउंडेशन द्वारा समर्थित और हाल ही में डेनिश पावर द्वारा समर्थित, यह पहल वर्षा जल संरक्षण को बढ़ाने, सिंचाई पहुंच में सुधार करने और कृषि उत्पादकता और किसान आय को बढ़ावा देने के लिए कृषि तालाबों के निर्माण को सक्षम बनाने पर केंद्रित है।

13 सितंबर को बीसीसीआई को करेंगे रिपोर्ट

ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले रोहित शर्मा को देना होगा फिटनेस टेस्ट

नई दिल्ली, 29 अगस्त। टीम इंडिया के वनडे कप्तान रोहित शर्मा 13 सितंबर से बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में फिटनेस टेस्ट देंगे। इसमें ब्रोंको टेस्ट भी शामिल है। वह नवंबर में होने वाले ऑस्ट्रेलिया के सीमित ओवरों के दौरे की तैयारी के लिए वहीं अभ्यास भी करेंगे।

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के वनडे कप्तान रोहित शर्मा फिटनेस टेस्ट के लिए 13 सितंबर को बेंगलुरु में बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में रिपोर्ट करेंगे। वह दो से तीन दिनों के लिए यहां रहेंगे और नवंबर में ऑस्ट्रेलिया के सीमित ओवरों के दौरे की तैयारियों को बेहतर बनाने के लिए अभ्यास भी करेंगे।

यो-यो और ब्रोंको टेस्ट देंगे रोहित शर्मा

बता दें कि, रोहित शर्मा को यो-यो टेस्ट के अलावा सीओई में नए शुरु किए गए ब्रोंको टेस्ट से भी देंगे। ऐसी अटकलें हैं कि रोहित साथी क्रिकेटर विराट कोहली के साथ ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ तीन मैचों की एक दिवसीय सीरीज के लिए भारत एक के लिए खेल सकते हैं। ये सीरीज 30 सितंबर, 3 और 5 अक्तूबर को खेला जाएगा।

38 साल के रोहित ने आखिरी बार जून में मुंबई इंडियंस के लिए आईपीएल 2025 में पंजाब किंग्स के खिलाफ आईपीएल 2025 में खेला था। उनका आखिरी अंतर्राष्ट्रीय मैच 9 मार्च को न्यूजीलैंड के खिलाफ 2025 चैंपियंस ट्रॉफी का फाइनल खेला था। उन्होंने 83 गेंद पर 76 रन बनाए और उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। इस अनुभवी बल्लेबाज ने 7 मई को टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया।

गौरतलब है कि, फिलहाल रोहित शर्मा अपने करीबी दोस्त और पूर्व भारतीय सहायक कोच अभिषेक नायर के साथ मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन के बीकेसी केंद्र में ट्रेनिंग ले रहे हैं। ऐसी खबरें हैं कि रोहित शर्मा और विराट कोहली ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद संन्यास का ऐलान कर सकते हैं। वहीं, रोहित के फैसले के बाद श्रेयस अय्यर को वनडे टीम का नया कप्तान बनाया जा सकता है।

एशिया कप 2025ः टीम इंडिया की जर्सी को लेकर बड़ा खुलासा, ड्रीम 11 की जगह कौन होगा स्पॉन्सर ?

नई दिल्ली, 29 अगस्त। एशिया कप 2025 का आगाज होने में अब बस कुछ ही दिन शेष हैं। लेकिन उससे पहले सबसे बड़ा सवाल ये है कि टीम इंडिया की जर्सी पर नया स्पॉन्सर कौन होगा? क्योंकि हाल ही में फैंटेसी स्पोर्ट्स कंपनी ड्रीम 11 ने बीसीसीआई के साथ अपना करार खत्म कर दिया है। बता दें कि, देश में नए ऑनलाइन गेमिंग प्रमोशन और रेगुलेशन बिल 2025 के लागू होने के बाद रियल मनी गेमिंग प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लग गया। जिस कारण ड्रीम 11 को पीछे हटना पड़ा।ड्रीम 11 ने 2023 से 2026 तक बीसीसीआई के साथ 358 करोड़ रुपये का करार किया था। जबकि आईपीएल और टीम इंडिया की स्पॉन्सरशिप को मिला दिया जाए तो ड्रीम 11 और 11 ने लगभग 1000 करोड़ का योगदान दिया है। लेकिन अब ऑनलाइनल गेमिंग बिल आने के कारण से बीसीसीआई ने इसके साथ अपना करार खत्म कर दिया है। बीसीसीआई अब ड्रीम 11 के रिप्लेसमेंट की तलाश में है। 28 अगस्त को बीसीसीआई की एपेक्स काउंसिल की आपात बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष राजीव शुक्ला ने की। बैठक में संभावित नए स्पॉन्सर्स पर चर्चा हुई। लेकिन ये तय नहीं हुआ कि टूर्नामेंट शुरू होने से पहले इतना समय नहीं है कि किसी के साथ डील फाइनल की जाए।बीसीसीआई भी इस मामले को बड़े नजरिए से देख रहा है। एशिया कप के लिए जल्दबाजी में कोई छोटा डील करने की बजाय बोर्ड चाहता है कि लॉन्ग टर्म डील हो जो 2027 वनडे वर्ल्ड कप तक टीम इंडिया के साथ बना रहे।फिलहाल, कहा जा रहा है कि, एशिया कप के दौरान टीम इंडिया बिना किसी स्पॉन्सर लोगो वाली जर्सी में मैदान में उतरेगी। टीम इंडिया की जर्सी पर सिर्फ देश का ही नाम लिखा हुआ दिख सकता है।

रोजर बिन्नी ने दिया इस्तीफा, राजीव शुक्ला बीसीसीआई के कार्यवाहक प्रमुख

नई दिल्ली, 29 अगस्त। बीसीसीआई के अध्यक्ष रोजर बिन्नी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, नए अध्यक्ष के चुने जाने तक राजीव शुक्ला बीसीसीआई के कार्यवाहक प्रमुख की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। वह इससे पहले उपाध्यक्ष की भूमिका में थे। रिपोर्ट के मुताबिक बुधवार को बीसीसीआई के एपेक्स कमिटी की बैठक हुई शीर्ष परिषद की बैठक की अध्यक्षता राजीव शुक्ला ने की। बैठक के मुख्य अजेंड में स्पॉन्सरशिप था। उसमें ड्रीम 11 से करार खत्म होने और अगले दो-ढाई साल के लिए नए स्पॉन्सर की तलाश को लेकर चर्चा हुई।

रिपोर्ट के मुताबिक एशिया कप में दो हफ्ते भी नहीं बचे हैं इसलिए तब तक नया स्पॉन्सर मिलना मुश्किल है। रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से कहा गया है। अब दो सप्ताह भी नहीं बचे हैं। हम प्रयास कर रहे हैं लेकिन नई निविदा निकालना, कानूनी प्रक्रिया का पालना करना और बाकी तकनीकी चीजों में समय लगता है। सूत्र ने शॉर्ट टर्म यानी सिर्फ एशिया कप के लिए अलग प्रायोजक लाने के सवाल पर कहा कि ऐसा नहीं करेंगे। फोकस 2027 के वनडे वर्ल्ड कप तक के लिए प्रायोजक लाने पर है। राजीव शुक्ला नए बीसीसीआई अध्यक्ष का चुनाव होने तक कार्यवाहक प्रमुख की भूमिका में रहेंगे। राष्ट्रीय खेल प्रशासन कानून बन जाने के बावजूद बीसीसीआई को अगले महीने अपनी एनुअल जनरल मीटिंग कराने के अलावा चुनाव भी कराने होंगे।

रिपोर्ट के मुताबिक बीसीसीआई चुनाव को नहीं डाल सकता क्योंकि सरकार ने जो खेल कानून बनाया है। अभी उसकी अधिसूचना जारी नहीं की गई है। उसे अधिसूचित होने में कुछ महीने लग सकते हैं लिहाजा बीसीसीआई ने चुनाव नहीं टालने का फैसला किया है।

श्रीलंका ने दिया जिम्बाब्वे को 299 रनों का लक्ष्य

हरारे 29 अगस्त। पथुम निसंका (76), जनित लियानगे (नाबाद 70) और कामिंडु मेंडिस (57) की अर्धशतकीय पारियों के दम पर श्रीलंका ने शुक्रवार को पहले एकदिवसीय मैच में जिम्बाब्वे को जीत के लिए 299 रनों का लक्ष्य दिया।

आज यहां जिम्बाब्वे ने टॉस जीतकर श्रीलंका को पहले बल्लेबाजी का न्यौता दिया। बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत खराब रही और उसने पांचवें ही ओवर में सलामी बल्लेबाज निशान मदुश्का (शून्य) का विकेट गंवा दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कुसल मेंडिस ने पथुम निसंका के साथ पारी को संभाला और दूसरे विकेट के लिए 100 रनों की साझेदारी की। 27वें ओवर में शॉन विलियम्स ने कुसल मेंडिस को आउटकर इस साझेदारी का अंत किया। इसके बाद मुजारबानी ने पथुम निसंका 92 गेंदों में 76 रन को अपना शिकार बना लिया। चरित असलंका (छह) और सदीरा समराविक्रमा 35 रन बनाकर आउट हुये।

इसके बाद जनित लियानगे और कामिंडु मेंडिस ने छठे विकेट के लिए 137 रनों की साझेदारी की। 50वें ओवर की आखिरी गेंद पर रिचर्ड एन्गारावा ने कामिंडु मेंडिस 36 गेंदों में (57) को बोल्ड कर श्रीलंका का छठा विकेट गिराया। उन्होंने अपनी पारी में चार चौके और दो छक्के भी लगाये। श्रीलंका ने निर्धारित 50 ओवरों स्कोर छह विकेट पर 198 रनों का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। जनित लियानगे 47 गेंदों में छह चौके और तीन छक्के लगाते हुए (नाबाद 70) रन बनाये। जिम्बाब्वे की ओर से रिचर्ड एन्गारावा को दो विकेट मिले। ब्लेसिंग मुजारबानी, ट्रेवर ग्वांडू, सिकंदर रजा, शॉन विलियम्स ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

डायमंड लीग फाइनल में नीरज चोपड़ा रहे दूसरे स्थान पर

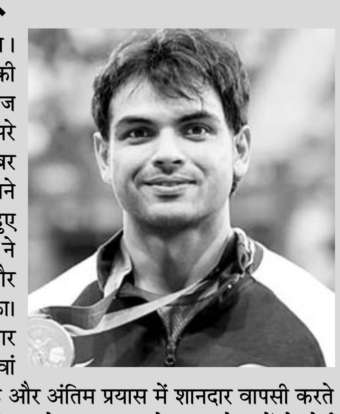

ज्यूरिख (स्वीट्जरलैंड) 29 अगस्त। डायमंड लीग फाइनल 2025 के पुरुषों की भाला फेंक प्रतियोगिता में भारत के नीरज चोपड़ा ने 85.01 मीटर थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे। वहीं जर्मनी के जूलियन वेबर ने 91.51 मीटर का थ्रो कर खिताब अपने नाम किया। लेट्ज़िग्रुंड स्टेडियम में हुए मुकाबले में भारत के नीरज चोपड़ा ने प्रतियोगिता की शुरुआत अच्छी की थी और पहले प्रयास में 84.35 मीटर फेंका। हालांकि बीच के तीन प्रयासों में लगातार फाउल के कारण वे पीछे रह गए। पांचवां थ्रो भी नाकाम रहा, लेकिन नीरज ने छठे और अंतिम प्रयास में शानदार वापसी करते हुए 85.01 मीटर की दूरी दर्ज की और दूसरे स्थान पर रहे। यह थ्रो उन्हें केशोर्न वॉलकॉट से आगे ले गया, जिन्होंने 84.95 मीटर के साथ तीसरा स्थान हासिल किया।

जर्मनी वेबर ने अपने दूसरे प्रयास में 91.51 मीटर का थ्रो फेंका। इस दूरी अन्य कोई एथलीट पार नहीं कर पाया और वेबर ने नया निजी सर्वश्रेष्ठ और वर्ल्ड लीड दर्ज करते हुए खिताब जीता। प्रतियोगिता में अन्य दावेदारों में ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स 82.06 मीटर के साथ चौथे, केन्या के जूलियस येगो 82.01 मीटर के साथ पांचवें, मोल्दोवा के आंद्रियन मार्डारे 81.81 मीटर के साथ छठे और स्विट्जरलैंड के साइमन वीलैंड 81.29 मीटर (पर्सनल बेस्ट) के साथ सातवें स्थान पर रहे।

राजस्थान की छत्तीसगढ़ पर 3- 1 से ऐतिहासिक जीत

जयपुर , 29 अगस्त। राष्ट्रीय सब जूनियर बालिका फुटबाल प्रतियोगिता टियर -2 में राजस्थान का पहला मुकाबला गोवा से 25 अगस्त को हुआ जिसमें राजस्थान ने अच्छे खेल का प्रदर्शन करते हुए गोवा जैसी मजबूत व अनुभवी फुटबॉल टीम को 2-1 से हराकर अपने पूल का पहला मैच जीत लिया। राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि राजस्थान टीम छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में आयोजित हो रही राष्ट्रीय सब जूनियर चैंपियनशिप टियर-2 के ग्रुप - डी के आज खेले गए दूसरे मैच में छत्तीसगढ़ के सामने खेलते हुए शानदार टीम गेम दिखाते हुए शानदार फुटबॉल खेला और राजस्थान की ओर से रुचिका ने 25वें मिनट शानदार गोल किया में मनीषा ने 45वे मिनिट रिबाउंड पर आई बॉल पर गोल करके राजस्थान को 2- 0 से बढ़त दिलाई। बाद में दोनों टीमों ने आक्रामक खेल खेला हाफ टाइम तक राजस्थान टीम दो गोल से आगे रही । दूसरे हाफ में छत्तीसगढ़ ने भी अच्छे खेल का प्रदर्शन करते हुए मैच के 64 वें मिनट में मैदानी गोल करके मैच 2- 1 गोल कर दिया। मैच के अंतिम समय में अर्पणा ने 83 मिनट अकेले प्रयास करते हुए गोल करने में सफल रही ओर मैच का रुख 3/1 मे बदल दिया । राजस्थान टीम अन्तिम समय तक गोल पर आक्रमण करती रही । छत्तीसगढ़ टीम को कोई मौका नहीं दिया और राजस्थान अपनी पकड़ मजबूत करके छत्तीसगढ़ टीम को हराया । राजस्थान की ओर से गोलकीपर पायल, रुचिका, आसमान, मनीषा, राधिका, ने बहुत अच्छा खेल का प्रदर्शन किया। टियर 2 का सेमी फाइनल मैच 1सितम्बर को केरल टीम के साथ खेला जाएगा। राजस्थान फुटबॉल टीम की जीत पर राजस्थान फुटबॉल संघ के अध्यक्ष कर्नल मानवेन्द्र सिंह, सचिव दिलीप सिंह शेखावत, महिला विंग की चेयरमैन रोशनी टाक और विभिन्न जिला संघो के महेंद्रसिंह बिजरानीया, कैलाश खटीक, अरविंद सिंह, मदन बेनीवाल, अब्दुल जब्बार, हरिराम डारा, सतीश जांगिड़, फरहत अली, दिनेश सिंह, दिलीप सिंह चुण्डावत, अमरसिंह, मनोज जाट, शकील अहमद, तीर्थ सांगा और राजस्थान के सभी भूतपूर्व फुटबॉल खिलाड़ीयों तथा सभी जिला संघो ने टीम की जीत पर बधाई और शुभकामनाएं दी। ज्ञात रहे टियर 2 की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश की 16 राज्यों की टीमें भाग ले रही हैं जिसकी मेजबानी इस बार छत्तीसगढ़ फुटबाल संघ कर रहा है।

हॉकी एशिया कप में भारत, मलेशिया, कोरिया,जापान ने जीत दर्ज की

राजगीर, 29 अगस्त। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने शुक्रवार को चीन के खिलाफ 4-3 से जीत के साथ हीरो पुरुष एशिया कप राजगीर बिहार 2025 में अपने अभियान की शुरुआत की। जबकि मलेशिया ने बंगलादेश को 4-1 से, कोरिया ने चीनी ताइपे को 7-0 से और जापान ने कजाकिस्तान को 7-0 से हराया।

आज यहां राजगीर हॉकी स्टेडियम में खेले गये मुकाबले में भारत के लिए कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने (20वें, 33वें, 47वें) मिनट में गोलकर शानदार प्रदर्शन करते हुए हैट्रिक बनाई। जुगराज सिंह ने (18वें) मिनट में भारत के लिये पहला गोल दागा। वहीं चीन की ओर से शिहाओ डू ने (12वें), बेनहाई चेन ने (35वें) और जीशेंग गाओ ने (41वें) मिनट में गोल किए। शुरुआत से ही भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने आक्रामक रुख अपनाया। आखिरकार चीन दबाव बनाया और उसने एक पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया, जिसे शिहाओ डू (12वें मिनट) ने गोल में बदलकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। पहला क्वार्टर में चीन 1-0 से आगे था।

भारत ने दूसरे क्वार्टर की शुरुआत आक्रामक अंदाज में की और चीन पर दबाव बनाने में अच्छा प्रदर्शन किया। क्वार्टर के तीन मिनट बाद भारत को एक पेनल्टी कॉर्नर मिला और जुगराज सिंह (18वें मिनट) गोलकर स्कोर 1-1 कर दिया। इसके तुरंत बाद भारत को एक और पेनल्टी कॉर्नर मिला और कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने (20वें मिनट) गोलकर भारत को बढ़त दिला दी। हाफ-टाइम तक भारत 2-1 से आगे था।

भारत ब्रेक के बाद चीन के खिलाड़ियों दबाव बनाने का प्रयास और कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने (33वें मिनट) में पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके स्कोर 3-1 कर दिया। चीन ने जल्द ही शानदार जवाब दिया और अपना तीसरा पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया, जिसे बेनहाई चेन (35वें मिनट) ने गोल में बदलकर स्कोर 3-2 कर दिया। अगले कुछ मिनटों तक भारत और चीन एक-दूसरे पर लगातार हमले करते रहे, जिसमें चीन का आक्रामक रुख काफी खतरनाक लग रहा था। खेल खत्म होने से 20 मिनट पहले चीन ने दो पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए और दूसरे पेनल्टी कॉर्नर पर जीशेंग गाओ (41वें मिनट) ने बराबरी का गोल दागा। क्वार्टर के आखिर तक दोनों टीमें 3-3 से बराबरी पर थीं और खेल पूरी तरह से संतुलित था। भारत ने आखिरी क्वार्टर की शुरुआत शानदार अंदाज में की, शुरुआत में ही दो पेनल्टी कॉर्नर हासिल किये और हरमनप्रीत सिंह ने (47वें मिनट) गोलकर अपनी हैट्रिक पूरी करते हुए टीम को 4-3 की बढ़त दिला दी। इसके बाद भारतीय टीम ने चीन के खिलाड़ियों को गोल करने का कोई मौका नहीं दिया। भारतीय टीम ने यह मुकाबला 4-3 से अपने नाम कर लिया। दिन के अन्य मैचों में मलेशिया ने बंगलादेश को 4-1 से, कोरिया ने चीनी ताइपे को 7-0 से और जापान ने कजाकिस्तान को 7-0 से हराया।

मंजू शर्मा और राव राजेन्द्र सिंह ने की खिलाडियों की हौसला अफजाई

जयपुर, 29 अगस्त। देशभर में राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष में आम जनता की खेलों में भागीदारी बढाने व देश में खेल व फिटनेस कल्चर स्थापित करने के लिए जयपुर शहर की सांसद मंजू शर्मा और जयपुर ग्रामीण के सांसद राव राजेन्द्र सिंह ने सवाई मानसिंह स्टेडियम में शुक्रवार को प्रातः खिलाडियो व प्रशिक्षको के साथ प्रभात फेरी में भाग लिया।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर प्रभात फेरी से पूर्व मेजर ध्यानचन्द के तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। सांसद मंजू शर्मा, जयपुर ग्रामीण के सांसद राव राजेन्द्र सिंह, राजेन्द्र सिंह सिसोदिया सचिव राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद, अतिरिक्त जिला कलक्टर जयपुर उत्तर मुकेश मूंड और पुर्न नियुक्त खेल अधिकारी जयपुर केन्द्र करण सिंह शेखावत और प्रभारी अधिकारी व क्रिकेट प्रशिक्षक मनीष वर्मा सहित प्रशिक्षको ने पुष्प अर्पित किए। प्रभात फेरी विधानसभा, नगर निगम, रामभाग सर्किल और अंबेडकर सर्किल से होते हुए स्टेडियम आकर समाप्त हुई। प्रभात फेरी में अकादमियों के बालक व बालिका खिलाडी, विभिन्न खेलों के प्रशिक्षणार्थी और प्रशिक्षको ने भाग लिया। सभी को शपथ दिलवाई गई।

रस्सा कस्सी और हॉकी मैचों का भी आयोजन किया गया। पुरूष वर्ग में मंगल पंडे टीम ने शिवाजी 11 को और हार्डी रानी ने पदमावती को हराकर बालिका वर्ग का रस्सा कस्सी खिताब जीता। एस्ट्रोटर्फ हॉकी मैदान पर हॉकी मैचों का भी आयोजन किया गया। 8 टीमों ने भाग लिया। सरदार वल्लभ भाई पटेल टीम ने भगत सिंह टीम को 1-0 से हराकर बालक वर्ग का खिताब जीता। जबकि बालिका वर्ग के फाइनल मैच में सरोजनी नायडू क्लब ने रानी लक्ष्मी बाई टीम को हराकर चैंपियन बनी।बालक वर्ग में भागत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, चैगान स्टेडियम ओर सरदार वल्लभ भाई पटेल टीमों ने भाग लिया जबकि बालिका वर्ग में सरोजनी नायडू क्लब, रानी लक्ष्मी बाई टीम, सैंट जोसेफ विधालय और राजकीय बालिका विधालय, दुर्गापुरा की टीमों ने भाग लिया।

ऐमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा ''हर घर हॉकी'' अभियान का आग़ाज़

जयपुर, 29 अगस्त। ऐमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में हर घर हॉकी अभियान की भव्य शुरुआत आज राष्ट्रीय खेल दिवस एवं हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती के अवसर पर की गई। यह अभियान फेडरेशन के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष पंत का वर्षों पुराना सपना रहा है कि भारत के प्रत्येक गाँव-गाँव और गली-गली तक निःशुल्क हॉकी स्टिक पहुँचाई जाए। आज सूरज मैदान, राजा पार्क, जयपुर से इस संकल्प को साकार रूप मिला।

मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के युवा उद्योग, खेल एवं कौशल विकास राज्य मंत्री श्री के. के. विश्नोई उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आदित्य नाग ने की। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि हर घर हॉकी जैसा अभियान न केवल परंपरागत खेलों को पुनर्जीवित करेगा, बल्कि युवाओं में फिटनेस, अनुशासन और टीम भावना का भी संचार करेगा। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आदर्श विद्या मंदिर के प्रबंधक संजय भार्गव, पूर्व कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह तथा नगर निगम के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ मंचासीन रहे। कार्यक्रम में भारतीय सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. आशुतोष पंत, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गजेंद्र सिंह राठौड़ सहित फेडरेशन के अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। सभी ने अपने विचार रखते हुए हॉकी के महत्व और अभियान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण और हॉकी सम्राट मेजर ध्यानचंद को श्रद्धांजलि अर्पित करने से हुई। इसके बाद हर घर हॉकी अभियान के अंतर्गत टैलेंट सर्च अभियान के तहत खिलाड़ियों के ट्रायल आयोजित किए गए। इन ट्रायल्स में चयनित प्रतिभाशाली बच्चों को फेडरेशन अध्यक्ष डॉ. आशुतोष पंत द्वारा निःशुल्क हॉकी वितरण अभियान के लिए चिन्हित किया गया, ताकि भविष्य में उन्हें प्रोत्साहन और अवसर प्रदान किया जा सके। हर घर हॉकी अभियान का मुख्य उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में हॉकी को पुनः लोकप्रिय बनाना और भविष्य में भारत को सॉफ्ट हॉकी के क्षेत्र में वैश्विक पहचान दिलाना है।

16वीं एशियाई शूटिंग चैम्पियनशिप कजाकिस्तान में 1 गोल्ड, 3 सिल्वर एवं 4 ब्रान्ज़, कुल 8 पदक जीतकर राजस्थान को गौरवान्वित

जयपुर, 29 अगस्त। कजाकिस्तान के सिमकेत शहर में एशियाई शूटिंग चैम्पियनशिप, कजाकिस्तान 16 अगस्त से 30 अगस्त तक आयोजित हो रही प्रतियोगिता में राजस्थान के युवा निशानेबाज माननी कौशिक ने 50 मी. राईफल प्रोन व्यक्तिगत सीनियर में अपना बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए ब्रान्ज मेडल एवं 50 मी. राईफल प्रोन सीनियर टीम में सिल्वर मेडल पर अपना कब्जा जमाया। 25मी स्पोर्ट्स पिस्टल वर्ग में अभिनव चौधरी ने व्यक्तिगत जूनियर का सिल्वर एवं 25 मी. स्पोर्ट्स पिस्टल वर्ग में जूनियर टीम का गोल्ड मेडल जीता। हर्षवर्धन सिंह कविया एवं भानू प्रताप सिंह ने शॉटगन की डबल ट्रैप स्पर्धा में सीनियर टीम का ब्रान्ज मेडल जीता तथा मोहम्मद हातिम खान ने शॉटगन डबल ट्रैप व्यक्तिगत जूनियर में सिल्वर मेडल एवं यादवेन्द्र चुण्डावत ने शॉटगन डबल ट्रैप व्यक्तिगत जूनियर में ही ब्रान्ज मेडल हासिल कर राज्य को गौरवान्वित किया। 16वीं एशियन चैम्पियनशिप में राजस्थान के खिलाड़ियों ने अब तक बहुत ही बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए पदकों की झडी लगा रखी है।

जयपुर के कुशाग्र सिंह राजावत ने 16वीं एशियन शूटिंग चैंपियनशिप 2025 में जीता स्वर्ण पदक : भारत के लिए गर्व का क्षण तब आया जब जयपुर के 18 वर्षीय कुशाग्र सिंह राजावत ने 50 मीटर राइफल प्रोन जूनियर पुरुष टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। यह प्रतियोगिता 16 से 30 अगस्त 2025 तक शिमकेंट, कज़ाखस्तान में आयोजित की गई। भारतीय जूनियर पुरुष राइफल प्रोन टीम, जिसमें कुशाग्र सिंह राजावत, सामी उल्लाह खान और आद्रियन कर्माकर शामिल थे, ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 1844.3 अंक हासिल किए और कज़ाखस्तान व कोरिया को पीछे छोड़कर पहला स्थान प्राप्त किया। कुशाग्र ने टीम की जीत में 612.8 अंक का अहम योगदान दिया, जो उनके धैर्य, एकाग्रता और कठिन परिस्थितियों में प्रदर्शन करने की क्षमता को दर्शाता है।

राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में तीन दिवसीय जयपुर योगा लीग का विधिवत शुभारंभ

जयपुर, 29 अगस्त। जयपुर योगा लीग के अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि इस समारोह में प्रमुख अतिथियों: लालचंद कटारिया (भूतपूर्व कैबिनेट मंत्री), पंडित सुरेश मिश्रा (अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण महासभा एवं सामाजिक कार्यकर्ता), वीरेंद्र राठौड़ (पूर्व अध्यक्ष,पिंक सिटी प्रेस क्लब),योगाचार्य ढाका राम (योग पीस संस्थान, जयपुर तथा चंद्रकांत पंगारे (टेक्निकल सेक्रेटरी, योगासन प्रीमियर लीग एवं डॉ. अभिनव जोशी (सचिव, जयपुर योगा लीग) के द्वारा प्रज्वलित कर उद्घाटन किया गया तथा प्रतिभागियों द्वारा की प्रस्तुतियां देकर संगीत संगीत नृत्य योग आदि के संबंध में का प्रदर्शन किया गया तथा कुछ आयु वर्ग की कुछ आयु वर्ग की एडवांस एडवांस योगासन प्रतियोगिताएं आयोजित तथा आयोजित की गई। लालचंद कटारिया पूर्व कैबिनेट मंत्री राजस्थान सरकार ने घोषणा करी की अगली नेशनल लेवल की प्रतियोगिता अपने स्थान पर करवाएंगे। इससे प्रतिभागियों में बहुत उत्साहवर्धन हुआ और सभी ने इस घोषणा की करबद्ध तालिया से स्वागत किया।

हमारी सरकार की कार्यवाही से पेपरलीक की कलई खुली- मुख्यमंत्री

'कार्रवाही पूर्व मुख्यमंत्री के पीएसओ तक पहुंच चुकी, आगे और मगरमच्छ पकड़े जायेंगे'

■ **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने टोडारायसिंह में जनसभा में कहा कि 2021 के पेपरलीक पर तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने 2023 तक कोई कार्रवाही नहीं की। हमारी सरकार ने आते ही 16 दिसम्बर को एसआईटी का गठन किया।**

जयपुर, 29 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने टोडारायसिंह में आयोजित जनसभा में कहा कि कांग्रेस की सरकार ने प्रदेश के युवाओं के साथ धोखा किया। हमारी सरकार पूर्ववर्ती सरकार के दौरान सरकारी नौकरी की भर्तियों में हुए पेपरलीक एवं फर्जीवाड़े के खिलाफ कार्रवाई कर रही है। पिछली सरकार के दौरान फर्जीवाड़ा करके नौकरी लगने वाले पकड़े जा रहे हैं और उनकी कलई लगातार खुलती जा रही है।

शर्मा ने एसआई भर्ती परीक्षा-2021 पर हाईकोर्ट के फैसले के संबंध में कहा कि यह वर्ष 2021 की भर्ती थी, लेकिन तत्कालीन कांग्रेस की सरकार ने इस भर्ती के पेपरलीक को लेकर वर्ष 2023 तक कोई कार्रवाई नहीं की और युवाओं के साथ कुठाराघात किया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार के गठन के साथ ही हमने 16 दिसंबर को एसआईटी का गठन किया। जिसके परिणामस्वरूप एसओजी ने 56 ट्रेनी एसआई के साथ ही कई दोषियों को पकड़ा। हमारी सरकार की कार्रवाई ने इस फैसले का आधार बनाने का काम किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के नेताओं को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। पेपरलीक के खिलाफ कार्रवाई पूर्व मुख्यमंत्री के पीएसओ तक पहुंच चुकी है। आगे और भी मगरमच्छ पकड़े जाएंगे।

उत्तराखंड में बादल फटने से 5 की मौत

नई दिल्ली, 29 अगस्त। उत्तराखंड में भारी बारिश और बादल फटने से कई जिलों में भूस्खलन हुआ है, जिसके कारण कम से कम 5 लोगों की मौत हो गई और 3 लोग लापता हैं। चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी और बागेश्वर जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। रातभर हुई बारिश ने घरों को नुकसान पहुंचाया, वाहनों को बहा ले गई और खेतों में पानी भर गया।

उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अनुसार, बागेश्वर जिले की पौसारी ग्राम पंचायत में 6 घर पूरी तरह नष्ट हो गए, जिसमें 2 लोगों की मौत हो गई और 3 लोग लापता हैं। चमोली के मोपता गांव में एक मकान और गोशाला मलबे में दब गए, जिसमें एक दंपति की मौत हो गई और एक अन्य व्यक्ति घायल हुआ। रुद्रप्रयाग जिले में आधा दर्जन से ज्यादा गांवों को भारी नुकसान हुआ। तलजमन गांव में 30-40 परिवार फंसे हुए हैं, जबकि चेनागढ़ में 4 स्थानीय लोग और 4 नेपाली मजदूर मलबे में फंस गए। कई जगह सड़कें टूटने से बचाव कार्यों में देरी हो रही है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने पटना में कांग्रेस मुख्यालय में तोड़फोड़ की

■ **राहुल गांधी ने कहा, जितना मारना-तोड़ना है मारो और तोड़ो हम संविधान की रक्षा करते रहेंगे**

■ **प्रधानमंत्री के खिलाफ दरभंगा रैली में अपशब्दों के प्रयोग का विवाद तूल पकड़ता जा रहा है। भाजपा के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने पटना में कांग्रेस मुख्यालय से सदाकत आश्रम तक मार्च किया और वहां तोड़फोड़ की।**

■ **कांग्रेस ने इस हरकत को भाजपा की हताशा का संकेत बताया और कहा कि सरकार के मंत्री के नेतृत्व में हुआ हमला कायरता पूर्ण हरकत है।**

पटन, 29 अगस्त। राहुल गांधी की वोट अधिकार यात्रा के दौरान दरभंगा में मंच से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गाली दिए जाने के मामले ने सियासत में हलचल मचा दी है। इस घटना के विरोध में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता और कार्यकर्ता शुक्रवार सुबह पटना में सड़क पर उतर आए और जोरदार प्रदर्शन किया। भाजपा नेताओं ने सदाकत आश्रम तक मार्च किया और राहुल गांधी तथा इंडिया गठबंधन के अन्य नेताओं के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस प्रदेश मुख्यालय सदाकत आश्रम में कथित तौर पर तोड़फोड़ की गई। भाजपा ने इस घटना को गंभीर बताया और कहा कि मंच से प्रधानमंत्री को गाली देना सिर्फ व्यक्तिगत अपमान नहीं, बल्कि पूरे देश के सम्मान को ठेस पहुंचाने वाला मामला है।

बताया जा रहा है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के सभी घटक दलों के नेता और कार्यकर्ता कुर्जी मोड़ से सदाकत आश्रम तक पैदल मार्च कर आए। वे राहुल गांधी का पुतला दहन करने वाले थे। लेकिन इससे पहले ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं से उनकी भिड़ंत हो गई। दोनों पक्षों के बीच झड़प हुई। इसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सदाकत आश्रम के अंदर से एनडीए कार्यकर्ताओं पर पथराव शुरू कर दिया। इस बीच एनडीए के कार्यकर्ता भी उग्र हो गए और उन्होंने जमकर तोड़फोड़ की। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों पक्षों को समझा-बूझाकर शांत कराया। पुलिस के समझाने के बाद एनडीए के कार्यकर्ता वापस चले गए, लेकिन कांग्रेस कार्यकर्ताओं का विरोध प्रदर्शन जारी रहा।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सदाकत आश्रम के सामने अशोक राजपथ को जाम कर दिया और प्रदर्शन शुरू कर दिया। उन्होंने एनडीए कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। उनका कहना था कि बिना किसी अपराध के भाजपा के कार्यकर्ताओं ने उन पर हमला किया और प्रदेश मुख्यालय की संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया। उन्होंने आरोप लगाया कि ट्रकों के शीशे भी तोड़े गए और भाजपा उनकी आवाज दबाने की कोशिश कर रही है।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बिहार की राजधानी पटना में पार्टी के प्रदेश कार्यालय में की गयी तोड़फोड़ पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि उनकी राह सत्य, अहिंसा और संविधान बचाने की है और इन सब विपरीत स्थितियों के बाद भी वह संविधान रक्षा की अपनी यात्रा जारी रखेंगे।

गांधी ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा, "सत्य और अहिंसा के आगे असत्य और हिंसा टिक ही नहीं सकते। मारो और तोड़ो, जितना मारना-तोड़ना है - हम सत्य और संविधान की रक्षा करते रहेंगे। सत्यमेव जयते।"

कांग्रेस महासचिव संगठन के सी वेणुगोपाल ने कहा, मतदाता अधिकार यात्रा की बढ़ती लोकप्रियता और उनके ख़िलाफ़ उभरती जनभावनाओं से बौखलाकर, भाजपा ने एक बार फिर हमें डराने-धमकाने के लिए अपने गुंडों को छोड़ दिया है। बिहार में पटना के सदाकत आश्रम स्थित हमारे प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में राज्य सरकार के एक कैबिनेट मंत्री और अन्य भाजपा नेताओं के नेतृत्व में हुआ हमला एक कायरतापूर्ण कृत्य है और इस तरह के कृत्य हमें मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण के नाम पर चल रहे व्यापक वोट चोरी का पर्दाफ़ाश करने से नहीं रोक सकते। किसी पार्टी कार्यालय पर हमला होना राजनीतिक गुंडागर्दी का निकृष्टतम रूप है और इसे कभी माफ़ नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र में ऐसी हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है।

2020 में हिंसात्मक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ट्रंप की टैरिफ नीति से परेशान होकर भारत और चीन दोनों ने 2020 की सीमा झड़पों को पीछे छोड़ने की दिशा में कदम बढ़ाने और सीमा विवादों पर फिर से बातचीत शुरू करने पर सहमति जताई। इन घटनाओं के बाद भारत-चीन रिश्तों में सुधार देखा गया है। जल्द ही दोनों देशों के बीच यात्री विमान सेवाएँ शुरू होने वाली हैं। चीन ने भारत को यूरिया सप्लाई पर लगी पाबंदी में ढील दी है। वहीं भारत ने चीनी नागरिकों के लिए कई सालों से रुकी हुई टूरिस्ट वीज़ा सेवा फिर से शुरू कर दी है। दिलचस्प बात यह है कि इन रिश्तों की बहाली की वजह ट्रंप की वही टैरिफ नीति बनी, जिसका मकसद पहले चीन और बाद में भारत को सज़ा देना था। मार्च में, जब ट्रंप ने चीनी माल पर टैरिफ दोगुना कर दिया, तो चीन के विदेश मंत्रालय ने दिल्ली से, "दादागिरी और शक्ति की राजनीति" का मिलकर विरोध करने की अपील की। शी जिनपिंग ने खुद कहा था कि "हाथी और ड्रैगन का एक साथ नाचना ही सही रास्ता है।" जुलाई तक आते-आते चीनी अधिकारियों ने हाथी और ड्रैगन की इस उपमा को बार-बार दोहराना शुरू कर दिया। चीन के सरकारी अख़बार ग्लोबल टाइम्स ने तो आगे बढ़कर कहा कि दोनों एशियाई दिग्गजों को अमेरिकी टैरिफ का मुकाबला करने के लिए बैले डांस करना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी इस हफ्ते अपने चीन के दौरे के दौरान राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मिलने वाले हैं। वे शंघाई सहयोग संगठन (एस.सी.ओ.) शिखर सम्मेलन में शामिल होंगे। यह पिछले सात साल में उनकी पहली चीन यात्रा होगी। पिछली बार दोनों नेता रूस के कज़ान में हुए ब्रिक्स सम्मेलन में एक साथ दिखे थे। शोध संस्था "चाइना-ग्लोबल साउथ प्रोजेक्ट" के संपादक एरिक ओलैंडर ने हाल ही में रॉयटर्स से कहा, शी इस सम्मेलन का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए करना चाहेंगे कि अमेरिकी नेतृत्व के बाद की दुनिया कैसी होगी। और यह भी साबित करना चाहेंगे कि जनवरी से अमेरिका ने चीन, ईरान, रूस और अब भारत को घेरने की जो कोशिशें कीं, वे सफल नहीं रहीं। "यह देखिए कि ब्रिक्स ने ट्रंप को कितना परेशान किया है, और यही इन समूहों का असली मकसद है।"

चम्बा की मणिमहेश यात्रा में 7 हज़ार यात्री फंसे

■ **हिमाचल में भारी वर्षा से भूस्खलन व मार्ग बाधित होने के कारण तीर्थ यात्री जगह जगह पर फंसे हुए हैं।**

नई दिल्ली, 29 अगस्त। हिमाचल प्रदेश में चम्बा सहित भरमौर में भारी बारिश ने खूब तबाही मचाई है। भरमौर शेष दुनिया से पूरी तरह से कट चुका है। कई मीटर सड़कें जगह-जगह से टूट गई हैं। दूरसंचार सेवाएं भी कई हिस्सों में बहाल नहीं हो पा रही हैं। मणिमहेश में हजारों यात्री फंसे हुए हैं।

पिछले चार-पांच दिनों से भूस्खलन और लगातार मूसलाधार बारिश होने के कारण जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। लोग अपनी गाड़ियां छोड़कर पैदल ही निकल पड़े हैं। जिला चंबा के भरमौर में इन दिनों प्रसिद्ध मणिमहेश यात्रा चल रही है।

पिछले चार दिनों से मोबाइल नेटवर्क बंद था, जिससे यात्रा में गए यात्रियों का संपर्क उनके परिवार के लोगों के साथ नहीं हो रहा था और वे चिंतित थे। भरमौर में भी मणिमहेश यात्रा में गए लोग भूस्खलन और मार्ग बाधित होने के कारण जगह-जगह फंस गए हैं। चंबा में अब तक 11 लोगों की मौत हो चुकी है। यात्रा पर रोक लगा दी गई है।

मणिमहेश से 3,000 लोग वापस लौट आए हैं, जबकि 7,000 तीर्थ यात्री अभी भी फंसे हुए हैं। श्रद्धालुओं की जानकारी के लिए प्रशासन ने हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं। यह यात्रा हर साल जन्माष्टमी से राधाष्टमी तक आयोजित की जाती है। इस साल, जन्माष्टमी 16 अगस्त को है और राधाष्टमी 31 अगस्त को होगी।

ब्लूटूथ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करीब आठ माह से जेल में बंद है। जांच एजेंसी ने उसके खिलाफ आरोप पत्र भी पेश कर दिया है। जिसमें ट्रायल पूरी होने में लंबा समय लगने की संभावना है। इसलिए उसे जमानत पर रिहा किया जाए। विशेष लोक अभियोजक बीएस चौहान ने इसका विरोध करते हुए बताया कि बीकानेर के नया शहर गंगाशहर में दर्ज एफआईआर के अनुसार परीक्षा के दौरान अभ्यर्थियों से ब्लूटूथ बरामद हुए थे। पुलिस जांच में सामने आया कि तुलछाराम उन्हें नकल करा रहा था। जांच में आरोप साबित होने पर उसे गिरफ्तार किया गया। इसके अलावा उसके खिलाफ विभिन्न थानों में एक दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। ऐसे में उसे जमानत का लाभ नहीं दिया जाए। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने आरोपी के जमानत प्रार्थना पत्र को खारिज कर दिया है।

जापान भारत में 5.98 करोड़ रु. का निवेश करेगा

■ **प्रधानमंत्री मोदी की जापान यात्रा के बीच यह घोषणा की गई है जिससे दोनों देशों में आपसी सहयोग के नए युग की शुरूआत हुई।**

टोक्यो/ नयी दिल्ली, 29 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत ने जापान के साथ अपनी विशेष सामरिक तथा वैश्विक भागीदारी के नये अध्याय की नींव रखते हुए अगले दशक के लिए एक रोड़मैप बनाया है और इस दौरान जापान भारत में दस लाख करोड़ येन (5.98 लाख करोड़ रुपये) का निवेश करेगा।

जापान की दो दिन की यात्रा पर आये मोदी ने शुक्रवार को यहां अपने जापानी समकक्ष शिगेरु इशिबा के साथ 15 वें वार्षिक शिखर सम्मेलन के दौरान प्रतिनिधिमंडल स्तर की बातचीत के बाद दोनों देशों के बीच साझेदारी को वैश्विक शांति और समृद्धि के लिए जरूरी बताया। उन्होंने कहा, आज हमारी चर्चा सार्थक और उद्देश्यपूर्ण रही। हम दोनों एकमत हैं कि विश्व की दो बड़ी अर्थव्यवस्थाओं और जीवंत लोकतंत्रों के रूप में हमारी साझेदारी केवल दोनों देशों के लिए ही नहीं बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मोदी ने कहा कि दोनों देशों ने विशेष सामरिक और वैश्विक साझेदारी में नया अध्याय शुरू करते हुए अगले दशक के लिए रोड़मैप बनाया है जिसके तहत जापान भारत में दस लाख करोड़ येन का निवेश करेगा।

गहलोत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जब गहलोत सरकार बनी, तो जोशी को विधानसभा अध्यक्ष बना दिया गया, लेकिन सूत्रों के अनुसार राहुल गांधी से उनकी दूरी बरकरार रही और कोई सुलह नहीं हुई।

अब जोशी यह दलील दे रहे हैं कि राजस्थान में कांग्रेस को ब्राह्मण वोट वापस पाने के लिए एक ब्राह्मण नेता की जरूरत है, और वे खुद को उसी भूमिका में देख रहे हैं।

वेणुगोपाल, जो राहुल गांधी के ग़ैर-पसंदीदा गहलोत और जोशी दोनों को आगे बढ़ा रहे हैं, खुद को एक सशक्त रणनीतिकार साबित करना चाहते हैं - शायद यह दिखाने के लिए कि अगर वह इन दोनों को राहुल की नजर में वापस ला सकते हैं, तो उनकी पकड़ कितनी मजबूत है। या फिर शायद, इसके पीछे कुछ और कारण हैं, जिनकी राहुल गांधी को खबर नहीं?

'क्या रजिस्ट्री को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अदालत में प्रस्तुत नहीं की जा सकती और यह मामले 'मेंटेनेबल' नहीं हैं। पाठकों को बतादें कि याचिका दायर करते समय रजिस्ट्री के पास अधिकार होता है कि वह छोटी-मोटी त्रुटियां, जैसे, गलत 'पेज नम्बरिंग' हो जाना, गलत कानून के तहत याचिका किया जाना या याचिका दायर का 'फॉर्मेट' (प्रारूप) में बनाया जाना इत्यादि, पर आपत्ति जता सकती है और वकील तथा याचिकाकर्ता को त्रुटियों को दूर कर पुनः याचिका दायर करने का अवसर देती है।

हालांकि याचिका की 'मेंटेनेबिलिटी', यानि उस याचिका को अदालत के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कानूनी अधिकार तथा उस याचिका को सुनवाई के लिए योग्य करार देने का फैसला न्यायाधीशों के पास ही होता है। इस विषय पर कई अदालतों के पहले ही फैसले आ चुके हैं। न्यायाधीश समीर जैन के समक्ष अधिवक्ता सुनील समदड़िया ने इसी मुद्दे को उठाते हुए अदालत में कहा कि रजिस्ट्री स्वतः ही यह निर्णय ले रही है कि कौनसी याचिका अदालत द्वारा सुनने के योग्य है, जो कि उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं है। न्यायाधीश समीर जैन ने कहा कि उन्हें ऐसी ही शिकायतें हाईकोर्ट बार एसोसियेशन के अध्यक्ष महेन्द्र शांडिल्य ने भी दी हैं, और इसी वजह से अदालत हाईकोर्ट बार एसोसियेशन के सभी सदस्यों को इस मुद्दे पर तर्क और अपना मत प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया है।

द्वितीय विश्व युद्ध से प्रचलित "ग्लोबलाइज़ेशन" ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विरोध करने का आ ान किया है। देश के भीतर, उन्होंने वैश्विक व्यापारिक नेताओं के साथ मेल-मिलाप बढ़ाया है और ऐसे आपूर्ति श्रृंखला गठबंधनों को मजबूत किया है जो वॉशिंगटन को दरकिनार करें। हालांकि, उनके ये कदम निस्वार्थ नहीं हैं: चीन वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र बनने या कम से कम अमेरिका का प्रतिद्वंदी बनने-का प्रयास कर रहा है। वैश्वीकरण की रक्षा करते हुए, शी उसे बीजिंग की छवि में ढालना चाहते हैं-राज्य-नियंत्रित, रणनीतिक रूप से संचालित और एशियाई वर्चस्व की ओर झुका हुआ।

नरेन्द्र मोदी के लिए, ट्रंप की टैरिफ नीति भारत पर सीधा आघात है। भारत के रूसी तेल आयात से जुड़ी 50 प्रतिशत की शुल्क वृद्धि को अनुचित और अस्वीकार्य बताते हुए खारिज किया गया है। मोदी ने अपनी प्रतिक्रिया को राष्ट्रवादी शब्दों में प्रस्तुत किया है, यह वादा किया कि वे किसानों, मछुआरों और छोटे उत्पादकों की रक्षा करेंगे, भले ही इसकी भारी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। उनकी सरकार ने तेजी से व्यापारिक साझेदारियों में विविधता लाने की पहल की है-चीन, जापान और रूस की ओर रुख करते हुए, ताकि अमेरिकी दबाव का मुकाबला किया जा सके। संदेश स्पष्ट है: भारत अमेरिकी आर्थिक दबाव के आगे नहीं झुकेगा। शी के विपरीत, मोदी अन्तर्राष्ट्रीयकरण की कहानी के नायक नहीं बनना चाहते, लेकिन उनका प्रतिरोध यह दर्शाता है कि भारत अब बहुध्रुवीय विश्व में अपनी रणनीतिक स्वतंत्रता पर कायम है।

इन नेताओं की रणनीतियाँ भिन्न हैं, परंतु उनका साझा उद्देश्य स्पष्ट है। तीनों नेता ट्रंप के संरक्षणवाद का विरोध करते हैं और इसे अमेरिकी-केंद्रित व्यापार व्यवस्था की विश्वसनीयता को कमजोर करने वाला मानते हैं। सभी विकल्प तलाश रहे हैं-द्विपक्षीय समझौतों, क्षेत्रीय समूहों या नई आपूर्ति श्रृंखलाओं के माध्यम से-जो वाशिंगटन पर निर्भरता को कम करें। यही वैश्वीकरण को कटघरे में खड़ा करता है। यदि युद्ध के बाद की प्रणाली अमेरिका की मुक्त बाजार की प्रतिबद्धता पर आधारित थी, तो अब उसका विघटन अलग-अलग छितराए हुए ब्लॉक्स और प्रतिस्पर्धी व्यापार व्यवस्थाओं को जन्म दे सकता है। मुक्त व्यापार का भविष्य अब बीते तीन दशकों का सीधा विस्तार नहीं होगा। इसके बजाय, यह एक ऐसा विवादास्पद क्षेत्र होगा जहाँ कई शक्तियाँ नए नियम बनाने की कोशिश करेंगी। पुतिन को अराजकता में लाभ दिखता है, शी नेतृत्व का दावा करना चाहते हैं, और मोदी स्वतंत्रता की मांग करते हैं। मिलकर वे एक ऐसे बहुध्रुवीय व्यापार ढांचे के उदय का संकेत देते हैं जहाँ अमेरिका अब बिना चुनौती के शर्तें तय नहीं कर पाएगा।

ट्रंप की टैरिफ नीति आर्थिक राष्ट्रवाद का एक स्थूल उपकरण भले ही लगे, लेकिन इसका गहरा प्रभाव यह है कि यह इस वैश्विक पुनर्गठन को तेज करती है। वैश्वीकरण की पुरानी व्यवस्था अब कटघरे में है, और इसका फैसला शायद वॉशिंगटन में नहीं, बल्कि मास्को, बीजिंग और नई दिल्ली में होगा।

मतदाता सूची ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चुनौती बनकर उभर रही है। राज्य प्रशासन से जुड़े सूत्रों का कहना है कि सरकार को आशंका है कि लाखों निवासियों के लिए एक नागरिकता संकट उत्पन्न हो सकता है, जो दशकों से बंगाल में रह रहे हैं लेकिन अब उनकी वैधता पर सवाल उठ सकते हैं। जानकारों का मानना है कि यह स्थिति खासतौर पर 1947 से 1971 के बीच पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से भारत आए प्रवासियों को प्रभावित कर सकती है।

विडंबना यह है कि भाजपा भी इस मुद्दे पर एक नाज़ुक संतुलन बनाए रखने की स्थिति में है। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, ऐसे अधिकांश प्रवासी लगभग 98 प्रतिशत हिंदू हैं, जो उत्पीड़न और सामाजिक अस्थिरता से बचने के लिए भारत आए थे। सन् 1947 के बाद से केंद्र की सरकारों, जिनमें भाजपा की सरकारें भी शामिल हैं, ने सार्वजनिक रूप से इन लोगों में भारत में रहने के अधिकार को स्वीकार किया है। ऐसे में अगर इन प्रवासियों को बड़ी संख्या में वोट देने के अधिकार से वंचित किया गया, तो भाजपा को अपने मुख्य वोट बैंक का नुकसान उठाना पड़ सकता है।

राज्य में चुनाव नज़दीक आने के साथ ही, मतदाता सूची सत्यापन को लेकर विवाद एक बड़े टकराव में बदल सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि दस्तावेजों और सत्यापन की तकनीकी प्रक्रिया से परे, यह मुद्दा बंगाल में लंबे समय से चले आ रहे प्रवास, पहचान और सांप्रदायिक राजनीति के बहस को फिर से ज़ोर पकड़ने वाला है और इस पर भाजपा व तृणमूल दोनों ही जोरदार सियासी लड़ाई लड़ने की तैयारी में हैं।

गहलोत प्रदेश के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूर्व मुख्य सचिव निरंजन आर्य की पत्नी भी है। गौरतलब है कि निरंजन आर्य का मुख्य सचिव पद पर चयन भी चर्चा का विषय रहा था, क्योंकि वह वरिष्ठता की सूची में 13वें नम्बर पर थे, और आमतौर पर पहले तीन या चार वरिष्ठतम अफसरों में से ही मुख्य सचिव का चयन कर लिया जाता था। परन्तु निरंजन आर्य का मुख्य सचिव पद पर चयनित होने से यह तो सिद्ध हुआ कि वह अशोक गहलोत के करीबी थे, और शायद यही वजह रहीं होगी कि उनकी पत्नी को चुनाव लड़ने के लिए भी कांग्रेस पार्टी से टिकट मिला था।

गहलोत सरकार के दौरान आर.पी.एस.सी. के बोर्ड में सदस्य बने एक और नाम पर भी काफी चर्चा रही थी, वह नाम था कवि कुमार विश्वास की पत्नी मंजू शर्मा। गौर फरमाने योग्य है कि कुमार विश्वास पूर्व में राहुल गांधी के प्रबल आलोचकों में से रहे हैं। इसलिए उनकी ही पत्नी का आर.पी.एस.सी. बोर्ड में चयन किया जाना आमजन के लिए बड़ी अटपटी सी बात लग रही थी।

न्यायाधीश समीर जैन ने अपने आदेश में एस.ओ.जी. की जार्चशीट में दी गई तथ्यों पर बयानों को अंकित करते हुए बताया कि बाबूलाल कटारा 2022 में ही शिक्षक भर्ती ग्रेड-2 के पेपरलीक मामले में भी एफ.आई.आर. में नामजद थे और उन पर आरोप थे कि उन्होंने 7 लाख रुपये में एक अपराधी को पेपर बेचा था, वहीं रामूराम रायका भी, जो एक 'पैनल मेम्बर' थे, उन्होने अपने ही बेटे देवेश रायका और बेटी शोभा रायका के लिए पेपर लीक कराने के लिए बाबूलाल कटारा से ही सम्पर्क किया था।

अदालत के आदेश में इस तथ्य पर भी जोर दिया गया कि देवेश रायका के 'इंटरव्यू' में 28 'मार्क्स' दिए जाने के लिए रामूराम रायका आर.पी.एस.सी. सदस्य मंजू शर्मा और संगीता आर्या से मिलकर समझौता किया था। अदालत ने आदेश में यह भी अंकित किया कि रामूराम रायका अपनी पुत्री शोभा रायका की 'इंटरव्यू' से पहले बाबूलाल कटारा से भी मिले थे, जिन्होंने शोभा को इंटरव्यू में 34 नम्बर दिये थे।

यहां उल्लेखनीय है कि कुमार विश्वास की पत्नी किन कारणवर्ष आर.पी.एस.सी. सदस्य बनी अब यह सवाल हाईकोर्ट के आदेश के बाद और भी प्रबल हो जाते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को इसका जवाब कांग्रेस कार्यकर्ता और हाईकमान को ही नहीं बल्कि उन लाखों अभ्यर्थियों को भी जो आर.पी.एस.सी. सदस्यों की वजह से परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाए।

पेपरलीक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 से सम्बंधित प्रकरण, पुलिस थाना एसओजी जयपुर, वरिष्ठ अध्यापक ग्रेड-द्वितीय से संबंधित प्रकरण पुलिस थाना बेकरिया जिला उदयपुर व स्कूल व्याख्याता ग्रेड प्रथम से सम्बंधित प्रकरण पुलिस थाना एसओजी जयपुर में वांछित एवं फरार चल रहा था। वांछित विनोद रेवाड़ की गिरफ्तारी के लिए न्यायालय द्वारा 37 पुलिस एक्ट के तहत वारंट जारी किया और उसकी गिरफ्तारी के लिए 50 हजार का इनाम घोषित भी किया गया था।

टोडारायसिंह में एक साथ 60 हजार पौधे लगाने का कीर्तिमान बना

मुख्यमंत्री भजनलाल ने इस अवसर पर एक विशाल जनसभा को संबोधित किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने टोंक के टोडारायसिंह में "एक पेड़ मां के नाम" एवं "हरियालो राजस्थान" के तहत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कई परियोजनाओं का शिलान्यास भी किया।

■ **मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि अरावली पर्वत माला के संरक्षण के लिये 250 करोड़ रुपए की अरावली विकास परियोजना बनाई है। मानसून में 19 अरावली जिलों में 32 हजार हैक्टेयर में वृक्षारोपण कर रहे हैं।**

टोडारायसिंह/जयपुर, 29 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने पिछले साल हरियाली तीज के अवसर पर "हरियालो राजस्थान" अभियान शुरू किया। जिसके अन्तर्गत हमनें पिछले वर्ष 7 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा और साढ़े 7 करोड़ पौधे लगाकर लक्ष्य को पूरा किया। इस वर्ष हमनें 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा और अब तक 11 करोड़ से अधिक पौधे लगाए हैं। इस तरह हम अब तक साढ़े 18 करोड़ पौधे लगा चुके हैं। हमारी सरकार 5 वर्ष में 50 करोड़ पेड़ लगाएगी और प्रदेश को हरा भरा बनाएगी।

शर्मा शुक्रवार को टोंक के टोडारायसिंह में "एक पेड़ मां के नाम" एवं "हरियालो राजस्थान" के तहत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में प्रकृति का विशेष स्थान है। हमारी परंपरा में पेड़, पहाड़ और जल स्रोतों की पूजा की जाती है। इस धरती पर भोलेनाथ का मंदिर, बीसलपुर बांध और हरियाली से युक्त पहाड़ियों का संगम इस भावना को साकार कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा हमनें अरावली पर्वतमाला के संरक्षण और इसे हरा-भरा बनाने के लिए 250 करोड़ रुपये की हरित अरावली विकास परियोजना बनाई है। परियोजना के तहत इस मानसून में 19 अरावली जिलों के 32 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षारोपण करवा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने प्रदेश के किसानों को पेयजल एवं सिंचाई के लिए जल उपलब्ध करवाने की दिशा में कई फैसले किए हैं। इसी तरह, हमारी सरकार 2027 तक प्रदेशभर के किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाने के लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है और अब तक 22 जिलों के किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाई जा रही है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 20 करोड़ रुपये की लागत से मालपुरा से देवली तक सड़क के चौड़ाईकरण कार्य, 25 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से उनियारा खुर्द से किशनपुरा तक सड़क निर्माण कार्य सहित कई कार्यों का शिलान्यास किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने सिन्दूर का पौधा लगाया। कार्यक्रम में एक साथ 60 हजार पौधे लगाकर कीर्तिमान रचा गया।

इस अवसर पर विधायक रामसहाय वर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

बिहार एस आई आर पर एक सितम्बर को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई

■ **सुप्रीम कोर्ट ने बिहार एस आई आर पर प्रशांत भूषण द्वारा दायर याचिका पर यह आदेश दिया।**

नयी दिल्ली, 29 अगस्त। उच्चतम न्यायालय ने बिहार मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण से संबंधित याचिकाओं पर एक सितंबर को सुनवाई करने पर शुक्रवार को सहमति व्यक्त की जिनमें दावे एवं आपत्तियां दाखिल करने की समय सीमा बढ़ाने की मांग की गयी है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने अधिवक्ता प्रशांत भूषण द्वारा औपचारिक अनुरोध के बाद मामले की सुनवाई को सोमवार के लिए सूचीबद्ध करने का आदेश दिया।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कई अन्य राजनीतिक दल मसौदा मतदाता सूची पर दावे एवं आपत्तियां दाखिल करने की एक सितंबर की समय सीमा बढ़ाने की मांग करते हुए न्यायालय का दरवाजा खटखटा चुके हैं। जब पीठ ने पूछा कि याचिकाकर्ता ने चुनाव आयोग से संपर्क क्यों नहीं किया तो भूषण ने जवाब दिया कि इस तरह के अनुरोध पहले ही किए जा चुके हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908